'कौल-कल्पतरु'
चण्डी
श्रीबाला-कल्पतरु
श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-स्वरूप-निरूपण
श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी की कथा
श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-साधना-क्रम

'बड़ही' की श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी

आधुनिक बिहार के मुङ्गेर जनपद के अन्तर्गत **बड़ही** थाने के क्षेत्र में **भगवती 'बाला-त्रिपुर-सुन्दरी'** का प्राचीन मन्दिर है । विक्रम की **१५ वीं शताब्दी** में **'बड़ही'** ग्राम में **श्री श्रीधर देव** का जन्म हुआ । इनका पूर्व नाम **श्रीधर ओझा था ।** इनकी उपासना से प्रसन्न होकर **भगवती बाला-त्रिपुर-सुन्दरी** प्रकट होकर इन्हें साक्षात् दर्शन देती थीं । **गङ्गा-तट,** जो **बड़ही** ग्राम के पूर्वी भाग में है, इनका साधना-स्थल था ।

किंवदन्तियों के आधार पर उन्हें जन-कल्याण के लिए यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि **श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी** की एक चिर-स्थायी मूर्ति और मन्दिर होना चाहिए । अपने सङ्कल्प की पूर्ति के लिए उन्होंने अपनी आराध्या देवी **श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी** से याचना की । फलतः रात्रि में उन्हें स्वप्नादेश हुआ कि-'प्रातः-काल **गङ्गा-तट** पर जाओ । वहाँ तुम्हें एक खप्पर में **शक्ति-स्वरूपा बाला** प्रज्वलित शिखा के रूप में प्राप्त होंगी ।' **श्रीधर बाबा** तत्क्षण समीपवर्ती **गङ्गा-तट** जा पहुँचे । प्रातः-काल वहाँ देखा कि **एक देदीप्यमान ज्योति** आ रही है और सभी ने उसे एक खप्पर में प्रवाहित होते पाया ।

ज्योति-स्वरूपा जगज्जननी को भक्ति-भाव के साथ **'मृत्तिका-पिण्ड'** में स्थापित किया गया । वे यहाँ आज भी जगदम्बा की महिमा प्रकाशित कर रही हैं । यह स्थान वर्षों से **'सिद्ध-पीठ'** हो गया है और प्रति वर्ष हजारों लोग यहाँ अर्चन-वन्दन करने को आते हैं । इसके सिवा यहाँ **शत-चण्डी, सहस्त्र-चण्डी यज्ञादि** भी होने लगे हैं ।

इस स्थान पर प्रतिष्ठित **भगवती परमेश्वरी** की जो शिल्प-मूर्ति है, वह आज भी अतीत के इतिहास का स्मरण कराती है । वर्तमान काल के भी ऐसे अनेक प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि यहाँ लोगों के आर्तनाद पर **भगवती** सद्यः द्रवित होती हैं और अभीष्ट वर प्रदान करती हैं । अन्तिम समय में **श्री श्रीधर देव** ने श्री जगदम्बा के पूज्य मृत्तिका-पिण्ड के सन्निकट ही चिर-समाधि ले ली और **देवत्व** को प्राप्त किया । उनकी निःस्वार्थ साधना ही के फल-स्वरूप **श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी** उज्ज्वल प्रतीक बनकर इस मन्दिर में आज भी विराज रही हैं ।

भगवती बाला-त्रिपुर-सुन्दरी के अतिरिक्त मन्दिर के अन्दर दक्षिणी कोण पर सात अर्ध मृतिका-पिण्डी हैं, जिनमें **१. ब्राह्मी, २. माहेश्वरी, ३. वैष्णवी, ४. वाराही, ५. कौमारी या कात्यायनी, ६. इन्द्राणी** तथा **७. चामुण्डा देवियाँ** निवास करती हैं । मन्दिर के उत्तरी कोण पर **'तारा'** या **'रौद्री'** का स्थान बताया जाता है । मन्दिर के अनेक ताखों में **देवी की योगनियाँ** निवास करती हैं । मन्दिर में एक **'दीपक'** प्राचीन समय से ही अखण्ड रूप से जल रहा है, जिसमें गाय के घी का प्रयोग किया जाता है ।

मन्दिर में स्थापित पिण्डियों की सुन्दरता आश्चर्य-जनक रूप से १२ से २ बजे दोपहर तक अपूर्व रूप से बढ़ जाती है । सूर्यास्त के बाद मन्दिर के अन्दर पुरुषों का प्रवेश वर्जित है । १५२ फीट ऊँचे मन्दिर के चारों ओर आज भक्तों की भीड़ उमड़ती है ।

□□□

'चण्डी' : विशेष प्रस्तुति

श्रीबाला-कल्पतरु

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी के विविध ध्यान
श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-स्वरूप-निरूपण
श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी की कथा
श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-नाम का अर्थ
श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-साधना- क्रम

सम्पादक
रमादत्त शुक्ल
ऋतशील शर्मा

★

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक :
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎(०५३२)-२५०२७८३

प्रकाशक :
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६
दूर-भाष : (०५३२)-२५०२७८३

तृतीय संशोधित एवं संवर्धित संस्करण
'परशुराम'-जयन्ती, २०६२ वि० (११ मई, २००५)

अनुदान : ३५-०० रु०

मुद्रक :
परा-वाणी प्रेस
अलोपी देवी मार्ग
प्रयाग-रज (उ०प्र०)-२११००६

।। श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः ।।

अनुक्रम

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६
अनुदान ३५-०० रु०

परिचय

जन्म-जन्मान्तर के संस्कार के कारण, हम सभी मनुष्यों में '**विषय-भोग**' की प्रबल इच्छा स्वभावतः रहती है । '**विषय-भोग**' की यह स्वाभाविक इच्छा, हम मनुष्यों के लिए एक प्रकार का "**बन्धन**' सिद्ध होती है, जिसके प्रभाव से हम अपने **मूल स्वरूप** अथवा **आनन्द** से सर्वथा अपरिचित बने रहते हैं । यही कारण है कि सब कुछ सुलभ होने पर भी हमें **वास्तविक आनन्द** की प्राप्ति नहीं होती है और हम इधर-से-उधर भटकते रहते हैं ।

संयोग से या दैव-योग से '**विवेक**' अथवा '**वैराग्य**' की प्राप्ति होने पर हम मनुष्यों में, विषय-भोगों के प्रति अरुचि उत्पन्न होती है । तब, हम मनुष्यों की इच्छा सांसारिक पदार्थों से हटकर, 'भगवत्'-प्राप्ति के लिए जाग्रत हो उठती है । मनुष्यों की यह इच्छा ही शुभेच्छा है क्योंकि इससे ही मनुष्य को **वास्तविक शुभ-'आनन्द'** की प्राप्ति होती है ।

'**शुभेच्छा**' का उक्त परिचय प्राप्त होने पर मनुष्य एकान्त में अन्तर्जगत्-अपनी **आत्मा का सन्धान** करने लगता है । वह परम-तत्त्व के साकार या निराकार-रूप का '**ध्यान**' करता है । '**आसन**' **की दृढ़ता**, **प्राणायाम** के सतत नियमित अभ्यास द्वारा वह अपनी **इच्छा-शक्ति** , **क्रिया-शक्ति** एवं **ज्ञान-शक्ति** को जाग्रत करता है ।

'**इच्छा-शक्ति, क्रिया-शक्ति, ज्ञान-शक्ति**'-**स्वरूपा जीवनी-शक्ति**-'**कुण्डलिनी**' प्रत्येक मनुष्य के '**मूलाधार-चक्र**' (गुदा और शिश्न के बीच) में निद्रित अवस्था में रहती है और जाग्रत होने पर ऊर्ध्व दिशा की ओर अग्रसर होती है । तब, साधक को आत्म-अनुसन्धान के फल-स्वरूप अनुपम आनन्द का अनुभव होने लगता है । धीरे-धीरे नियमित अभ्यास से, जब जीवनी-शक्ति '**कुण्डलिनी**'-'**स्वाधिष्ठान**' (शिश्न-मूल) और '**मणिपूर-चक्र**' (हृदय-देश) में पहुँचती है, तो साधक **आत्म-साक्षात्कार** अर्थात् '**सालोक्य मुक्ति**' का अनुभव करता है । आगे '**विशुद्ध-चक्र**' (कण्ठ-स्थल) में पहुँचने पर साधक '**सामीप्य मुक्ति**' अथवा '**आत्म-तत्त्व-ज्ञान**' का अनुभव करता है ।

जीवनी-शक्ति जब और आगे '**आज्ञा-चक्र**' (भृकुटि-स्थान) में केन्द्रित होती है, तो साधक '**सारूपप्य मुक्ति**' का अनुभव करता है । इसके और आगे बढ़ने पर, **ब्रह्म-रन्ध्र** (मूर्धा-स्थान) में साधक को '**सायुज्य मुक्ति**' का लाभ होता है । यही परम **शिव-शुद्ध चैतन्यत्व** का स्थान है । यहाँ **जीवनी-शक्ति** '**कुण्डलिनी**', शुद्ध चैतन्यत्व **शिव** के साथ एकाकार हो जाती है । यही हम मनुष्यों का परम लक्ष्य-'**मुक्ति**' है । यही परमा-नन्द की अवस्था है ।

उक्त अवस्था को प्राप्त मनुष्य '**जीवन-मुक्त**' कहलाता है । ऐसा मनुष्य अनासक्त होकर विचरण करता है । वह न अनुकूल परिस्थितियों से प्रसन्न होता है और न प्रतिकूल परिस्थितियों से दुःखी होता है । सदा साम्यावस्था में रहता है । ऐसे मनुष्य के लिए कोई भी कर्म उसके लिए बन्धन-कारक नहीं होते । उसके सभी '**सञ्चित**' और '**क्रियमाण**'-कर्म दग्ध बीज के समान होते हैं । केवल '**प्रारब्ध**'-कर्म ही शेष रहता है, जो शरीर-पात

के साथ ही समाप्त हो जाता है। शरीर-त्याग करते ही ऐसा मनुष्य **विदेह-मुक्ति** प्राप्त कर सर्वथा मुक्त हो जाता है। उसका पुनः जन्म नहीं होता। वह '**कैवल्य**'-अवस्था को प्राप्त करता है।

जो साधक किसी कारण-वश परम लक्ष्य '**कैवल्य**'-अवस्था को प्राप्त नहीं कर पाते, उन्हें भी उपर्युक्त साधना से यथेष्ट लाभ होता है और वे आगामी जन्मों में परम लक्ष्य '**कैवल्य**'-अवस्था को प्राप्त कर ही लेते हैं। परम लक्ष्य-दायिनी उक्त आध्यात्मिक साधना में **माँ- साक्षात् जगदम्बा की कृपा** की परमावश्कता होती है। **महा-माया जगदम्बा** जब प्रसन्न होती है, तब वह साधक-पुत्र को **शिवत्व** तक पहुँचा कर उसे मुक्त कर देती है, इसमें सन्देह नहीं। अतः साधकों को चाहिए कि वे सदैव **माँ की उपासना-आराधना** में तत्पर रहें।

माँ की उपासना-आराधना का अनुभूत मार्ग है **दश महा-विद्याओं में से किन्हीं एक महा-विद्या के मन्त्र** की '**दीक्षा**' प्राप्त कर **सद्-गुरु** के निर्देशानुसार उसकी विधि-वत् साधना करना। **दश महा-विद्याएँ** दो कुलों में विभक्त हैं-(१) **काली-कुल**, (२) **श्री-कुल**। '**श्री-कुल**' की अधिष्ठात्री हैं "**भगवती षोडशी**", जो **महा-त्रिपुर-सुन्दरी** के नाम से विख्यात हैं और जिनके उपासक **श्रीमदाद्य शङ्कराचार्य** जी रहे हैं। उनके द्वारा स्थापित चारों मठों में "**श्री-यन्त्र**" प्रतिष्ठित है, जो **भगवती महा-त्रिपुर-सुन्दरी** का ही प्रसिद्ध पूजा-यन्त्र है, जिसे "**श्री-चक्र**" नाम से भी लोग जानते हैं, किन्तु बहुत कम लोगों को यह ज्ञात है कि **भगवती षोडशी** के आदि स्वरूप का शुभ नाम है-"**श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी**", जिनका मन्त्र मात्र तीन अक्षरों का है और जिनका पूजन-यन्त्र '**नव-योन्यात्मक**' है। "**श्री-कुल**" की साधना-पद्धति में सर्व-प्रथम **भगवती श्री बाला त्रिपुर-सुन्दरी** के ही मन्त्र की दीक्षा लेकर उसकी साधना करना आवश्यक है। जो ऐसा नहीं करते, उन्हें आध्यात्मिक साधना में अभीष्ट सफलता पूर्ण रूप में नहीं मिलती क्योंकि "**श्रीबाला-गर्भित श्री-यन्त्र**" की अर्चना ही फल-प्रद होती है।

प्रस्तुत लेख-संग्रह द्वारा जिज्ञासु बन्धुओं को '**भगवती श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी**' के सम्बन्ध में आवश्यक ज्ञान प्राप्त हो सकेगा और वे उस ज्ञान को पाकर विधि-वत् साधना-परायण होकर अपना कल्याण कर सकेंगे, यही प्रकाशन का उद्देश्य है। आशा है, पाठक बन्धु संग्रह से लाभ उठाएँगे।

'श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज (उत्तर प्रदेश)
अक्षय तृतीया, २०६२ विक्रमी (११ मई, २००५)

-'**कुल-भूषण**'

❐❐❐

श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी के विविध ध्यान

१. 'महा-काल-संहिता' ('काम-कला काली'-खण्ड)-

समुद्यद्-रवि-बिम्बाभामरुण-क्षौम-धारिणीं। फुल्ल-राजीव-वदनां, पीनोत्तुङ्ग-पयोधराम् ।।
रत्न-केयूर-ताटङ्क-मुक्ता-हार-विराजितां। त्रि-नेत्रां बाल-शीतांशु-खण्ड-शोभि-ललाटिकाम् ।।
पद्मोपरि समासीनां, बालां देवीं चतुर्भुजां । विद्यामभीतिं वामेन, दक्षे जप-वटीं वराम् ।।
धारयन्तीं जगद्धात्रीं, सर्वदैव हसन्मुखीं । सञ्चिन्त्य न्यसनं कुर्यादप्रमत्तेन चेतसा ।।

पद्म के ऊपर बैठी हुई **चतुर्भुजा बाला देवी** का चिन्तन कर सावधान-चित्त से न्यास करना चाहिए। वे जगद्धात्री सदैव हँस-मुखी हैं और अपने बाएँ हाथों में पुस्तक एवं अभय-मुद्रा तथा दाएँ हाथों में जप-माला एवं वर-मुद्रा धारण किए हैं । उदय होते हुए सूर्य-विम्ब-जैसी उनकी आभा है, अरुण रङ्ग का रेशमी वस्त्र पहने हैं, खिले हुए कमल के समान मुख है, पीनोत्तुङ्ग पयोधर हैं, रत्न-जटित केयूर, ताटङ्क और मोतियों के हार से सुशोभिता हैं, तीन नेत्र हैं, बाल-चन्द्र के अंश द्वारा उनका ललाट शोभायमान है ।

२. 'मन्त्र-महोदधि'-

(क) **रक्ताम्बरां चन्द्र-कलावतंसां, समुद्यदादित्य-निभां त्रिनेत्राम् ।**
विद्याऽक्ष-मालाऽभय-दान-हस्तां, ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम् ।।

अरुण अम्बुज पर बैठी हुई **त्रिनेत्रा बाला** का मैं ध्यान करता हूँ, जो लाल वस्त्र पहने हैं, जिनके मस्तक पर चन्द्र-कला शोभित है, उदय होते हुए आदित्य-जैसी जो प्रकाशमाना हैं और हाथों में पुस्तक, अक्ष-माला, अभय तथा दान-मुद्रा लिए हैं ।

(ख) **पाशांकुशौ पुस्तकमक्ष - सूत्रं, करैर्दधाना सकलामरार्च्या ।**
रक्ता त्रि - नेत्रा शशि-शेखरेयं, ध्येयाऽखिलर्द्ध्यै त्रिपुराऽत्र बाला ।।२

समस्त देवों द्वारा पूज्या त्रिपुरा बाला का यहाँ ध्यान करना चाहिए, जो अपने हाथों में पाश, अंकुश, पुस्तक और अक्ष-माला लिए हैं, लाल आभावाली हैं, त्रिनेत्रा हैं और जिनके ललाट पर चन्द्रमा है ।

(ग) **स्मेराननां चतुर्हस्तां, पुस्तकाक्ष - वराभयाम् ।**
त्रि-शक्ति-रूपिणीं बालां, शरच्चन्द्र-सम-प्रभाम् ।
रक्ताम्बरां चन्द्र-मौलीं, ध्यायेल्लक्ष्मी-स्वरूपिणीम् ।।

त्रि-शक्ति-रूपिणी एवं **लक्ष्मी-स्वरूपा बाला** का ध्यान करना चाहिए, जो शरत्-कालीन चन्द्रमा-जैसी कान्तिवाली हैं, जिनका मुख मुस्कान-युक्त है, जो चतुर्भुजा हैं और पुस्तक, अक्ष-माला, वर तथा अभय मुद्रा धारण किए हैं, रक्त-वस्त्र पहने हैं और जिनके मस्तक पर चन्द्रमा है ।

(घ) **अरुण-किरण-जालैरञ्जिता सावकाशा, विधृत-जप-वटीका पुस्तकाभीति-हस्ता ।**
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था, निवसतु हृदि बाला नित्य-कल्याण-शीला ।।

मेरे हृदय में **नित्य कल्याण करनेवाली बाला** निवास करें, जो अरुण सूर्य के किरण-जाल से रञ्जित अवकाश से युक्त हैं, हाथों में जप-माला, पुस्तक, अभय और अन्य हाथ में वर-मुद्रा से सुशोभिता हैं तथा खिले हुए लाल कमल पर बैठी हुई हैं ।

(ङ) **बालां बाल-दिवाकर-द्युति-निभां पद्मासने संस्थिताम् ।**
पञ्च - प्रेत-मयाम्बुजासन-गतां वाग्वादिनी-रूपिणीम् ।।
चन्द्रार्कानल-भूषित-त्रिनयनां चन्द्रावतंसां प्रभाम् ।
विद्याक्षाभय-विभ्रतीं वर-करां वन्दे परामम्बिकाम् ।।

मैं **परा अम्बिका बाला** की वन्दना करता हूँ, जो बाल-सूर्य की प्रभा के समान वर्णवाली हैं और पद्मासन पर बैठी हुई हैं। वह पद्मासन पञ्च-प्रेतों से युक्त है और भगवती बाला सरस्वती-स्वरूपा हैं। चन्द्र, सूर्य और अग्नि जैसे तीन नेत्रों से वे विभूषिता हैं और उनके मस्तक पर चन्द्रमा की प्रभा है। अपने हाथों में वे पुस्तक, अक्ष-माला, अभय और वर-मुद्रा धारण किए हैं।

३. 'विश्वसार तन्त्र'—

मुक्ता-शेखर-कुण्डलाङ्गद-मणि-ग्रैवेयक-हारोर्मिकाम्,
विद्योतिर्वलयादि-कङ्कण-वटी-सूत्रां स्फुरन्नूपुराम् ।
माणिक्योदर-बन्धु-कञ्चुक-धरामिन्दोः कलां विभ्रतीम्,
पाशं सांकुश-पुस्तकाक्ष-वलया दक्षोदूर्ध्व-बाह्वादितः ।
पूर्णेन्दु-प्रतिम-प्रसन्न-वदनां नेत्र-त्रयोद्भासिताम्,
इन्दु-क्षीर-वलक्ष-गात्र-विलसन्माल्यानुलेपाम्बराम् ।
मूलाधार-समुद्गता-भगवतीं हृत्-पङ्कजे चिन्तयेत् ।।

मूलाधार-चक्र से आविर्भूत भगवती बाला का ध्यान हृदय-कमल में करना चाहिए। मोतियों से उनका केश-पाश सुसज्जित है। कुण्डल, अङ्गद, मणि-जटित ग्रीवा-आभूषण और मुक्ता-हार से वे सुशोभिता हैं। चमकीले भुज-बन्द, कङ्गन, वटी-सूत्र और नूपुरों से वे प्रफुल्लिता हैं। उनकी कञ्चुकी माणिक्यों की आभा से युक्त है और चन्द्र-कला से वे शोभायमाना हैं। दाहिनी ऊपर की भुजा से वे क्रमशः पाश, अंकुश, पुस्तक और अक्ष-माला धारण किए हैं। पूर्ण-चन्द्र के समान सुन्दर प्रसन्न मुखवाली भगवती बाला तीन नेत्रों की ज्योति से प्रकाशमाना हैं। चन्द्रमा और दुग्ध के समान गौर-वर्ण शरीर माला, गन्धानुलेप और वस्त्रों से सुशोभित है।

४. 'मेरु-तन्त्र'—

(क) **अभयं पुस्तकं मालां, वरं च दधतीं करैः । अरुणामरुणाब्जस्थां, रक्त-वस्त्रां द्विजेशकाम् ।।**

बाल-सूर्य-जैसी कान्तिवाली, लाल कमल पर विराजमाना, रक्त-वस्त्र-धारिणी, **द्विजों की स्वामिनी भगवती श्रीबाला** अपने कर-कमलों में अभय, पुस्तक, माला और वर धारण किए हुई हैं।

(ख) **पाशांकुशौ पुस्तकाक्ष-सूत्रे च दधतीं करैः । रक्ता त्र्यक्षा चन्द्र-भाला ध्येया सुरार्चिता ।।**

रक्त-वर्णा, त्रि-नेत्रा, चन्द्र-शेखरा, **देव-वन्दिता भगवती श्रीबाला** का ध्यान करना चाहिए, जो अपने कर-कमलों में पाश, अंकुश, पुस्तक और अक्ष-माला धारण करती हैं।

५. 'मन्त्र-महार्णव'—

(क) **मातुलिङ्ग-पयोजन्म-हस्तां कनक-सन्निभां, पद्मासन-गतां बालां लक्ष्मी-प्राप्तौ विचिन्तये ।**

लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए **पद्मासन पर विराजमाना भगवती बाला** का ध्यान करता हूँ, जो स्वर्ण के समान आभावाली हैं और हाथों में मातुलुङ्ग एवं कमल धारण किए हुई हैं।

(ख) **वर-पीयूष-कलश-पुस्तकाभीति-धारिणीं, सुधां स्रवन्तीं ज्ञानाप्तौ ब्रह्म-रन्ध्रे विचिन्तये ।**

ज्ञान-प्राप्ति के लिए वर, अमृत-कलश, पुस्तक और अभय धारण करनेवाली **भगवती बाला**

को सुधा-वर्षा करती हुई ब्रह्म-रन्ध्र में ध्यान करता हूँ ।

(ग) **शुक्लाम्बरां शशाङ्काभां रोग-नाशे स्मरे शिवां, अकारादि-क्षकारान्त-वर्णावयव-रूपिणीम्।**

रोग-नाश के लिए श्वेत-वस्त्रा, चन्द्रमा-जैसी आभावाली, 'अ' से 'क्ष' तक के वर्णों से व्याप्त शरीरवाली भगवती बाला का स्मरण करता हूँ ।

(घ) **सृणि-पाश-धरां देवीं रत्नालङ्कार-भूषितां, प्रसन्नामरुणां ध्याये वशीकरण-सिद्धये ।**

वशीकरण की सिद्धि के लिए अरुण आभावाली प्रसन्न-मुखी भगवती बाला का ध्यान करता हूँ, जो रत्न-जटित अलङ्कारों से विभूषिता हैं और अंकुश तथा पाश धारण किए हुई हैं ।

६. 'जालसंवर-महा-तन्त्र'—

वन्दे देवीं स्थितां बालां, भास्वन्मण्डल-मध्यगाम् । चञ्चच्चन्द्राननां तप्तं, चामीकर-सम-प्रभाम् ।।
नृत्यत् खञ्जन-नेत्रस्य, लोकानत्यन्त-वल्लभाम् । मध्य-भागे लसत्काञ्ची, मणि-मुक्ता-विनिर्मिताम् ।।
पद-विन्यस्त हंसालीं, शुक-नासा-विराजिताम् । करि-शुण्डोरु-युगलां, मत्त-कोकिल-निःस्वनाम् ।।
पुस्तकं जप-मालां च, वरदाभय-पाणिनीम् । कुमारी-वेश-शोभाढ्यां, कुमारी-वृन्द-मण्डिताम् ।।
विद्रुमाधर-शोभाढ्यां, विद्रुमालि-नखालिकाम् । क्वणत्-काञ्चीं कला-नाथ-समान-रुचिराननाम् ।।
मृणाल-बाहु-लतिकां, नाना-रत्न-विराजिताम् । कर-पद्म-समानाभां, पाद-पद्म-विराजिताम् ।।
चारु-चम्पेव-वसनां, देव-देव-नमस्कृताम् । चन्दनेन्दु-विलिप्ताङ्गीं, रोम-राजी-विचित्रताम् ।।
तिल-पुष्प-समानाभां, नासा-रत्न-समन्विताम् । गज-गण्ड-नितम्बाभां, रम्भा-जङ्घा-विराजिताम् ।।
हर-विष्णु-महेन्द्राद्यैः, पूज्यते पाद-पङ्कजाम् । कल्याणीं कमलां कालीं, कुञ्चिकां कमलेश्वरीम् ।।
पावनीं परमां शक्तिं, पवित्रां पावनीं शिवाम् । भवानीं भव-पाशघ्नीं, भीतिहां भुवनेश्वरीम् ।।
भवानीं भव-शक्तिं च, भेरुण्डां मुण्ड-मालिनीम् । जालन्धर-गिर्यत्-सङ्गां, पूर्णगिर्युनुरागिणीम् ।।

७. 'कुलार्णव-संहिता'—

बालार्क - मण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रि - लोचनाम् ।
पाशांकुश - वराभीतिं, धारयन्तीं शिवां भजे ।।

८. श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी माला-मन्त्रोक्त ध्यान—

ऐङ्कारानन-गर्वितानल-शिखां सौः क्लीं कलां बिभ्रतीम् ।
सौवर्णाम्बर-धारिणीं वर-सुधा-धौतानुरागां शिवाम् ।।
वन्दे पुस्तक-पाशमंकुश-जपां स्रग्-भूषितोद्यत्कराम् ।
तां बालां त्रिपुरां पद-त्रय-मयीं षट्-चक्र-सञ्चारिणीम् ।।

९. 'ब्रह्म-यामल-तन्त्र'—

अक्ष - पुस्त - धरां रक्तां, वराभय - कराम्बुजाम् ।
चन्द्र-मुण्डां त्रिनेत्रां च, ध्यायेद् बालां फल-प्रदाम् ।।

१०. 'रुद्र-यामल'—

(क) **सूर्य - कोटि - समानाभां, चतुर्बाहुं त्रि-लोचनाम् ।**
रक्त - पद्म - समासीनां, रक्त - वस्त्राद्यलंकृताम् ।।
पुस्तकं चाक्ष - मालां च, वरं चाभयमेव च ।
दधतीं च हृदम्भोजे, श्री - बाला - त्रिपुरां भजे ।।

(ख) मूलादि-ब्रह्म-रन्ध्रान्तं, विस-तन्तु-तनीयसीम् ।
भ्रमद्-भ्रमर-नीलाभ-धम्मिल्लामल-पुष्पिणीम् ।।१
ब्रह्म-रन्ध्र-स्फुरद्-भिन्न-मुख-रेखा-विराजिताम् ।
मुख-रेखा-लग्न-रत्न-तिलकां मुकुटोज्ज्वलाम् ।।२
विशुद्ध - मुक्ता-वज्राढ्य-चन्द्र-रेखा-किरीटिनीम् ।
भ्रमद् - भ्रमर - नीलाभ - नयन - त्रय - राजिताम् ।।३
सूर्य-भास्वन् महा-रत्न-कुण्डलालंकृतां पराम् ।
शुक्राकार-स्फुरन्मुक्ता-हार-भूषण-भूषिताम् ।।४
ग्रैवेयाङ्गद-पत्रालि-स्फुरत् -कान्ति-जितामृताम् ।
गङ्गा - तरङ्ग - कर्पूर - शुभ्राम्बर - विराजिताम् ।।५
श्रीखण्ड-बल्ली-सदृशं-बाहु-वल्ली-विराजिताम् ।
कङ्कणादि-लसद्-भूषा-मणि-बन्ध-लसत्-प्रभाम् ।।६
रक्तोत्पल-दलाकार-पाद-पल्लव-शोभिताम् ।
नक्षत्र-मात्रा-सङ्काश-मुक्ता-मञ्जीर-मण्डिताम् ।।७
वामेन पाणिनैकेन, पुस्तकं चापरेण तु ।
अभयं च प्रयच्छन्तीं, साधकानां वरानने! ।।८
अक्ष-मालां च वरदं, दक्ष-पाणि-द्वयेन तु ।
दधतीं चिन्तये देवीं, वश्य-सौभाग्य-वाक्-प्रदाम् ।
क्षीर - कुन्देन्दु - धवलां, प्रसन्नां संस्मरे प्रिये! ।।९

११. श्रीबाला-त्रिशति-स्तोत्रोक्त ध्यान–

समुद्यदादित्य-पराङ्क-संख्यकामाभान्वितां रक्त-प्रभां च दिव्याम् ।
विद्याक्ष-माले त्वभयं वरं च, विश्वेषु दात्रीं परमाम्बुजां भजे ।।

१२. श्रीबाला-सहस्र-नाम-स्तव-राजोक्त ध्यान–

आधारे तरुणार्क - बिम्ब - सदृशं हेम - प्रभं वाग्भवम्,
वीजं मन्मथमिन्द्र-गोप - सदृशं हृत् - पङ्कजे संस्थितम् ।
चक्रं भाल - मयं शशाङ्क - रुचिरं बीजं तु तार्तीयकम्,
ये ध्यायन्ति पद - त्रयं तव शिवे! ते यान्ति सूक्ष्मां गतिम् ।।

१३. श्रीबकारादि बाला-सहस्र-नामोक्त ध्यान–

'ऐं' - कार - सुपद्मक - मध्य - गता ।
'क्लीं' - कार - विभूषित - नेत्र-पद्मा ।
'सौ' - काराब्ज - विशालिनी च कूट-
त्रया तु मनु - वर्ण - विराजिता ।।

❐❐❐

श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-स्वरूप-निरूपण

तप्त-काञ्चन-वर्णा, अरुण-किरण-जालैरञ्जिता, रक्ताम्बरा

श्री श्रीबाला शुद्ध सत्त्व हैं और **शुद्ध सत्त्व** का प्रकाश **तप्त-काञ्चन-वर्ण** के समान होता है। इसलिए भगवती को "**तप्त-काञ्चन-वर्णा**" कहा गया है। उनका वस्त्र '**माया**' है, जो लाल रङ्ग का है। शुद्ध सत्त्व के प्रकाश में काल और गति (क्रिया) का समावेश ही '**माया**' है। चूँकि क्रिया रजो-गुण है, इसलिए उसका रङ्ग लाल है। इसीलिए **भगवती श्री श्रीबाला** "**रक्ताम्बरा**" हैं। शुद्ध सत्त्व का प्रकाश, रक्त-वर्ण '**माया**' के भीतर से निकलता है, इसलिए **भगवती श्री श्रीबाला अरुण-किरण-जाल से आच्छादिता हैं**। शुभ्र प्रकाश के साथ रक्त-वर्ण मिल जाने से, वह **अरुण-वर्ण** हो जाता है।

चन्द्रार्द्ध-चूड़ामणि, दिव्यालङ्कार-भूषिता

दिव्यालङ्कार के अन्तर्गत—अमल-हार, अजर-वस्त्र, अर्द्ध-चन्द्र, चूड़ा-मणि, कुण्डल-द्वय, करक-समूह, केयूर, विमल नूपुर, अनुत्तम ग्रैवेयक एवं अंगुलीयक रत्न आते हैं। इनकी व्याख्या इस प्रकार है—

अमल-हार अर्थात् विशुद्ध प्रकाश-शक्ति

बुद्धि के सत्त्व-निर्मल होने पर प्रकाश-शक्ति अक्षुण्ण होती है। यावतीय वैषयिक 'प्रकाश' बुद्धि में ही है। बुद्धि के परे वैषयिक प्रकाश कहीं नहीं है। रजो-गुण के चाञ्चल्य-वश साधारण जीवों में यह प्रकाश अति क्षीण होता है। साधारण जीव की बुद्धि, किसी पदार्थ के सम्मुख होने पर, उसके अति सामान्य अंश को ही प्रकाशित करती है। जैसे, एक वृक्ष सामने दिखाई देता है, किन्तु उस वृक्ष का सामान्य अंश ही ज्ञान-गोचर हो पाता है। उसकी अतीत और अनागत अवस्था तथा आभ्यन्तरिक रस-प्रवाहादि अज्ञात ही रहता है। इसका कारण बुद्धि-'सत्त्व' की मलीनता है। 'सत्त्व-गुण' के विशुद्ध होने पर ऐसा नहीं होता— विषय का यावतीय अंश युग-पत् प्रकाशित होता है। इसी शक्ति का नाम-'**अमल-हार**' है। जिसमें यह शक्ति है, वह '**अमल-हार**' पहने हुए है।

अजर रक्ताम्बर अर्थात् अविनाशी वस्त्र

'**माया**' और '**अविद्या**'— यही माँ के हेम-वपु का आच्छादन है, जिससे वे सतत सङ्गोपन अवस्था में रहती हैं। ये दोनों ही अनादि हैं, इसलिए '**अजर**' हैं। इन दोनों में '**क्रिया**' या '**गति**' की बहुलता है, इसलिए इनका वर्ण '**रक्त**' है। इस प्रकार जिसके '**प्रकाश**' द्वारा '**माया**' का खेल हो रहा है, वही '**रक्ताम्बरा**' हैं। विशुद्ध सत्त्व-गुण का प्रकाश होने पर इस बात का स्पष्ट बोध होता है।

अर्द्ध-चन्द्र (ललाट-भूषण)-दिव्य ज्योति

'**आज्ञा-चक्र**' से विशिष्ट विज्ञान-ज्योति का प्रकाश निकला करता है, जिसके प्रभाव से सूक्ष्म-से-सूक्ष्मतर वस्तु भी अनायास ही दिखाई देती है। इसे '**दिव्य दृष्टि**' अथवा '**दूर-दर्शन-शक्ति**' कहते हैं। 'योग-दर्शन' में इसे 'प्रवृत्त्यालोक' कहा गया है। यह शक्ति जिनमें है, वे ही '**अर्द्ध-चन्द्र**' धारण किए हुए हैं।

चूड़ामणि (शिरोभूषण)-दिव्य ज्ञान-शक्ति

यह आभूषण दिव्य ज्ञान-शक्ति का द्योतक है। इसके द्वारा जगत् का समस्त तत्त्व स्पष्ट रूप से अनायास

ही हृदयङ्गम किया जा सकता है । सामान्यतः हमें जो ज्ञान होता है, वह मिश्रित अथवा सङ्कीर्ण ज्ञान है । जिनमें दिव्य ज्ञान-शक्ति है, उनमें सङ्कीर्णता नहीं रहती । इसके अतिरिक्त जगत् के प्रत्येक पदार्थ के विभिन्न विविध गुण स्पष्ट रूप से उन्हें ज्ञात हो जाते हैं । 'बुद्धि' (सत्त्व) की निर्मलता का यही लक्षण है । यह शक्ति जिनमें है, वही **'चूड़ा-मणि'** धारण करनेवाली हैं ।

कुण्डल-द्वय (कर्ण-भूषण)-दिव्य श्रवण-शक्ति

अति दूर में जो ध्वनि होती है एवं अन्तर में जो शब्द होता है, उन्हें स्पष्ट रूप में श्रवण करने की सामर्थ्य-शक्ति को **कुण्डल-द्वय (कर्ण-भूषण)** द्योतित करते हैं । यह शक्ति जिनमें है, वे ही **कर्ण-भूषण** धारण किए हुए हैं । इसी शक्ति का वर्णन करते हुए, **परमहंस श्री रामकृष्ण देव** कहते थे कि 'उस समय मैं चींटी के शब्द को भी सुन लेता था और उस शब्द के भाव को समझ जाता था ।'

करक (हस्ताभरण)-दिव्य ग्रहण-शक्ति

यह आभूषण दिव्य ग्रहण-शक्ति का द्योतक है । एक स्थान में रहते हुए, बहुत दूर स्थित छिपी हुई वस्तु का ज्ञान प्राप्त कर लेने की जो शक्ति है, उसी का सूचक **'करक'** आभरण है ।

केयूर (बाहु-भूषण)-दिव्य धारण-शक्ति

यह आभूषण दिव्य धारण-शक्ति का द्योतक है । इसी शक्ति के प्रभाव से **श्रीकृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत** को उठा लिया था ।

नूपुर (पाद-भूषण)-दिव्य गति-शक्ति

इस शक्ति के प्रभाव से दुर्गम स्थान में गमन, मृत्तिका, पत्थर आदि में प्रवेश, आबद्ध स्थान से अनायास ही निर्गमन आदि अलौकिक कार्य सिद्ध होते हैं । जैसे, **महात्मा तैलङ्ग स्वामी** को कारागार में बन्द कर दिया गया था, किन्तु तालों में बन्द होने पर भी स्वामी जी इसी दिव्य शक्ति के प्रभाव से कारागार के बाहर आ गए थे ।

ग्रैवेयक (कण्ठ-भूषण)-दिव्य कण्ठ-स्वर

जिसकी बुद्धि सत्त्व से निर्मल रहती है, उसका कण्ठ-स्वर बहुत ही मधुर और जन-प्रिय होता है । उसके द्वारा प्रताड़ना देने पर भी कोई क्रोध नहीं करता, अपितु आनन्द का ही अनुभव करता है ।

अंगुलीयक-दिव्य स्पर्श-शक्ति

इस शक्ति के द्वारा सूक्ष्म छिपी हुई वस्तुओं को अनायास ही स्पर्श कर उनकी कोमलता और काठिन्य को जान सकते हैं । इसी शक्ति के प्रभाव से केवल छूकर महात्मा लोग किसी की भी **'कुण्डलिनी'** जाग्रत् कर देते हैं । इसी शक्ति के प्रभाव से **परमहंस रामकृष्ण देव** के स्पर्श-मात्र ही से भक्तों को समाधि-अवस्था प्राप्त हो जाती थी ।

चतुर्भुजा-चार महा-विघ्नों से रक्षा

'भुज्'-शब्द का अर्थ है-रक्षक, कामी, भोक्ता, दुःख-भागी आदि । **'चतुर्भुजा'** होने के कारण **श्री बाला चार महा-विघ्नों से हम सबकी रक्षा करती हैं** । 'वेदान्त'-मत के अनुसार निर्विकल्प समाधि के बाधक चार

महान् विघ्न हैं– **१. लय, २. विक्षेप, ३. कषाय** और **४. रसास्वाद** । इन विघ्न-चतुष्टय से साधकों की रक्षा **माँ बाला** करती हैं । इसीलिए **चतुर्भुजा** हैं । इसके अतिरिक्त वे **धर्म, अर्थ, काम** और **मोक्ष**-रूप '**पुरुषार्थ-चतुष्टय**' देती हैं, इसलिए भी वे **चतुर्भुजा** हैं ।

पाशांकुशा–बन्धन–साधन

'**अनुराग**' अथवा आसक्ति के द्वारा ही भगवती जीवन को आबद्ध कर रखती हैं, इसलिए अनुराग ही '**पाश**' है । '**रस**'-तत्त्व से अनुराग सञ्जात है, अतः वरुण देवता का यह विशेष अस्त्र –'**पाश**', **माँ श्रीबाला** के हाथ में भी है ।

यहाँ यह आपत्ति हो सकती है कि केवल '**अनुराग**' से जीव का बन्धन नहीं हो सकता अथवा '**द्वेष**' का होना भी आवश्यक है । यह सच है । '**अनुराग**' जहाँ बाधा को प्राप्त होता है, वहाँ वह '**द्वेष**' के आकार ही में प्रकाशित होता है । यह '**द्वेष**' ही अंकुश है । जो मूढ़ पङ्क ही में पड़े रहना चाहते हैं, उनको **माँ श्री बाला** इन अस्त्रों द्वारा और भी कसकर बाँधती हैं ।

अभय–मुद्रा–निर्भयत्व

'**अभय-मुद्रा**' ग्राह्यालम्बोपासक, ग्रहणालम्बोपासक एवं ग्रहीतालम्बोपासक के लिए है । **माँ श्रीबाला** इन उपासकों को '**अभय-मुद्रा**' दिखाकर यही इङ्गित करती हैं कि साधक उनके शरणापन्न होकर निर्भय हो जाए ।

वर–मुद्रा–भगवती का वरण

द्वैत-भावापन्न मूढ़ साधक धन, पुत्र आदि निम्न श्रेणी के वरों की प्रार्थना करते हैं । वे श्रेष्ठ वस्तु न चाहकर तुच्छ धनादि चाहते हैं । **माँ श्रीबाला** भी ऐसे साधकों को ये सब खिलौने के समान देकर, उनको भुला रखती हैं । '**वर-मुद्रा**' का दूसरा अर्थ है कि यह मुद्रा दिखलाकर **माँ श्री बाला** यह इङ्गित करती हैं कि–साधक दूसरा कुछ न चाह कर उनको ही वरण करे क्योंकि किसी भी प्रकार से हो, उन्हें वरण (ग्रहण) करने पर ही उपासना सफल होती है ।

आसन–ईश्वरत्व के आठ ऐश्वर्य

श्रीश्रीबाला के आसन के चार पायों के रूप में **ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र** और **ईश्वर** हैं । किसी कवि ने कहा है कि **ब्रह्मा** माँ के पैर में लगाने के लिए आलता हैं । यही बात 'श्रुति' भी कहती है–'**ब्रह्मणस्तेजसा पादौ** ।'

ब्रह्मा–अखण्ड चैतन्य के जिस अंश से '**सृष्टि**' की क्रिया प्रकाश पाती है, उसी चैतन्यांश का नाम '**ब्रह्मा**' है । दूसरे शब्दों में, आत्मा जब सृष्टि-क्रिया का अभियान करती है, तब वह '**ब्रह्मा**' है और उस चेतनाधिष्ठान से जो क्रिया-शक्ति प्रकाश पाती है, वही ''**ब्रह्माणी**'' है । अतः **श्रीबाला** ही '**ब्रह्माणी**' हैं ।

विष्णु–जो चैतन्यांश स्थिति-शक्ति का अभियान करता है, वही '**विष्णु**' कहलाता है । 'स्थिति' का पालन करना ही उनकी शक्ति है । अतः **श्रीबाला** ''**वैष्णवी**'' हैं क्योंकि वे सृष्टि का पालन करती हैं ।

रुद्र–अखण्ड चैतन्य के जिस अंश से 'प्रलय' का भाव प्रकाश पाता है, उसे '**रुद्र**' या **महेश्वर**' कहते हैं । दूसरे शब्दों में, आत्मा जहाँ प्रलय-क्रिया का अभियान करती है, वहाँ वह '**रुद्र**' नाम से अभिहित होती है और उस चेतनाधिष्ठान से जो प्रलय-स्वरूपा क्रिया-शक्ति प्रकाश पाती है, वही '**रुद्राणी**' या '**माहेश्वरी**' हैं । अतः श्रीबाला ही ''**रुद्राणी**'' या ''**माहेश्वरी**'' हैं ।

ईश्वर-अष्ट ऐश्वर्य से युक्त। यथार्थ आत्म-ज्ञान के पथ में ईश्वरत्व का अभिमान होना एक प्रबल बाधा (अन्तराय) है। ईश्वरत्व के प्रति वैराग्य हुए बिना ममता का दूर होना असम्भव है। अनेक साधक इसी ईश्वरत्व के प्रलोभन में पड़कर पथ-भ्रष्ट हो जाते हैं। पूर्व-जन्मों के पुण्य के बल से, श्रीगुरुदेव की अहैतुकी कृपा से और माँ की अतुलनीय दया से ही साधक इस **ऐश्वर्य-सङ्कट** से बच पाता है। विशिष्ट दया द्वारा माँ जब स्वयं **'अष्ट-सिद्धि'**-शक्तियों के रूप में साधक के सम्मुख प्रकट होती हैं, तभी वह साधक इन ऐश्वर्यों के प्रलोभन में नहीं फँसता। इसीलिए **श्रीबाला ने ईश्वरत्व के आठों ऐश्वर्यों** को अपने में समाहित कर रखा है, जिससे **'ईश्वर'** भी उनके पर्यङ्क के एक पाया बने हुए हैं।

पर्यङ्क (पलँग) के चारों पायों के ऊपर **'सदा-शिव'**-रूपी फलक **'शृङ्खला-शक्ति'** है। काल-गति को उच्छृङ्खल न होने देना ही इस शक्ति का कार्य है। **'सदा-शिव'**-रूपी दिक्-शक्ति को दबाकर न रखने से काल (गति)-शक्ति को सक्रिय करना सम्भव नहीं है। इसीलिए माँ **श्रीबाला** शिव-रूपी **'दिक्-शक्ति'** को अपने वशीभूत कर **काल-शक्ति** को सक्रिय कर रही हैं।

महा-शव-रूपी सदा-शिव 'परमाकाश' में रहते हैं, जहाँ **माँ श्रीबाला** विराजती हैं। **ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र** और **ईश्वर**—ये चारों 'चिदाकाश' में रहते हैं, जो 'परमाकाश' से नीचे हैं। इसी से **'ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र-ईश्वर'** पर्यङ्क के चार पायों के रूप में हैं और **'सदा-शिव'** फलक के रूप में।

रक्त कमल-ब्रह्मत्व

'ब्रह्म-सूत्र' ब्रह्म का निरूपण करते हुए कहते हैं—**'जन्माद्यस्य यतः'** अर्थात जिससे सृष्टि, स्थिति और लय हो, वही **'ब्रह्म'** है। इस व्याख्या के अनुसार **श्रीश्रीबाला** ही **''ब्रह्म''** हैं।

मूल शक्ति के तीन आसन या अधिष्ठान हैं। प्रथम है **'इच्छा-शक्ति'** या मन। **'मन'** के द्योतक हैं **ब्रह्मा**। वस्तुतः मन ही **'प्रजा-पति'** अथवा सृष्टि-कर्त्ता है। **ब्रह्मा** का द्योतक **'कमल'** है। 'सृष्टि' के समय **माँ श्रीबाला** कमलासना होती हैं। 'सृष्टि' की क्रिया में रजो-गुण की प्रधानता स्वाभाविक है। अतः **कमल रक्त-वर्ण** अर्थात् लाल रङ्ग का है। 'स्थिति' के समय में **'कमल'** और **'सिंह'** में से कोई एक आसन होता है। 'लय' के समय मां का आसन **'शव'** होता है। इसीलिए सृष्टि-स्थिति-लय के ध्यान अलग-अलग वर्णित हैं।

बहु-बहु जन्मों के पश्चात् मनुष्य ज्ञान-वान् होता है। तब अपने को—**'माँ'** को—वह जान पाता है अर्थात् बहु जन्म तक पुण्य अर्जन करने पर **'माँ की कृपा'** उपलब्ध होती है एवं उसी के फल से क्रमशः उक्त सभी तत्त्वों के हृदयङ्गम करने की योग्यता आती है।

❒❒❒

श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी की कथा

१. ब्रह्माण्ड-पुराण की कथा

'**ब्रह्माण्ड-पुराण**' के अन्तर्गत '**श्रीललितोपाख्यान**' के '**भण्ड-पुत्र-वध**' नामक बाइसवें अध्याय में '**श्रीबालाम्बा**' (श्रीबालाम्बा त्रिपुर-सुन्दरी) के युद्ध-पराक्रम का बड़ा रोचक वर्णन है । उस वर्णन में '**श्रीबालाम्बा**' को '**श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी**' की पुत्री बताया गया है । यथा–

"...भण्डासुर' के बड़े पराक्रमी, बड़े बलवान्–**१. चतुर्बाहु, २. चकोराक्ष, ३. चतुःशिराः, ४. वज्र-घोष, ५. ऊर्ध्व-केश, ६. महा-माय, ७. महा-हनु, ८. महा-शत्रु, ९. महा-स्कन्दी, १० सिंह-घोष, ११. सरालक, १२. अन्धक, १३. त्रिनेत्र, १४. कूपक, १५. कूप-लोचन, १६. गुहाक्ष, १७. गण्डल, १८. चण्ड-वर्मा, १९. यमान्तक, २०. लड्डुन (लस्सण), २१. पण्डसेन, २२. पुरुजित्, २३. पूर्व-मारक, २४. स्वर्ग-शत्रु, २५. स्वर्ग-बल, २६. दुर्ग, २७. स्वर्ग-कण्टक, २८. अति-माय, २९. बृहन्माय, ३०. उप-माय**–नामक तीस पुत्रों को युद्ध के लिए आते हुए देखकर '**श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी**' की नव-वर्षीया कुमारी '**बालाम्बा**' को बड़ा क्रोध हुआ ।

क्रोध के फल-स्वरूप कुमारी '**बालाम्बा**' ने **महा-भट्टारिका श्रीललिता राज्ञी** से सविनय निवेदन किया कि–'हे माता! मुझे **भण्डासुर** के तीस पुत्रों से लड़ने का बड़ा चाव हो रहा है और मेरी भुजाएँ उनके साथ लड़ने को फड़क रही हैं । अतः आशा है कि रण-क्रीड़ा के लिए अपनी पुत्री को आज्ञा प्रदान करने की कृपा करेंगी । मैं बालिका हूँ और नित्यमेव खेलने के लिए मेरा जी चाहता रहता है ।'

इस पर भगवती **श्रीललिताम्बा** ने कहा–'हे वत्से! तू बड़ी कोमलाङ्गी है । तुम्हारी अवस्था केवल नव वर्ष की है और तू मेरी एक-मात्र पुत्री है । तेरे बिना मैं क्षण-मात्र भी साँस नहीं ले सकती । अतः युद्ध के लिए तेरा जाना मैं उचित नहीं समझती । मेरी दो शक्तियाँ '**मन्त्रिणी**' और '**दण्डिनी**' मन्त्री एवं सेना-पति का काम करती हैं । वे ही अन्य शक्तियों के साथ युद्ध के लिए सन्नद्ध होंगी । अतः तेरे जाने की आवश्यकता नहीं है ।'

निषेध करने पर भी, युद्ध के लिए '**बाला**' को उत्तेजित देखकर, भगवती ने अन्ततः अपनी प्रिय पुत्री को आज्ञा प्रदान कर दी । उन्होंने बड़े स्नेह से उसका गाढ़ालिङ्गन किया । फिर अपने '**कवच**' से एक '**कवच**' और अपने आयुधों में से कुछ आयुध देकर, उसे युद्ध के लिए विदा किया ।

जब '**भगवती बालाम्बा**' रथ में बैठकर युद्ध के लिए चलीं, तो गन्धर्व और किन्नर स्त्रियाँ उन्हें प्रणाम कर उनका अभिनन्दन करने लगीं । '**मन्त्रिणी**' और '**दण्डिनी**' शक्तियाँ '**बालाम्बा**' के दोनों ओर उनकी रक्षा के लिए चल दीं ।

'**कुमारी बालाम्बा**' का '**भण्डासुर**' के तीस पुत्रों के साथ घमासान रोमाञ्चक युद्ध होने लगा । तीस-के-तीस भाई युद्ध में ऐसा समझ रहे थे कि '**भगवती बालाम्बा**' तीस रूप पृथक्-पृथक् धारण कर उन तीसों वीर पराक्रमी भण्ड-पुत्रों में से प्रत्येक से लड़ रही हैं । इस प्रकार '**कुमारी बालाम्बा**' अपने हस्त-लाघव से उनके साथ युद्ध करती रहीं और युद्ध का प्रथम दिवस समाप्त हो गया ।

दूसरे दिन अस्त्रों और शस्त्रों के द्वारा शत्रु-सेना को बेधती हुई '**बालाम्बा**' का मुख लाल कमल के समान रक्त-वर्ण हो उठा और '**नारायणास्त्र**' को छोड़कर भण्ड-पुत्रों की दो सौ अक्षौहिणी सेना को '**बालाम्बा**' ने 'भस्म-सात्' कर दिया।

अपनी सेना का नाश होने पर **भण्डासुर** के पुत्रों को बड़ा क्रोध आया और वे सब-के-सब '**बाला भगवती**' पर टूट पड़े। उनके एक साथ भिड़ने पर स्वर्ग-लोक में देवताओं और देव-शक्तियों का भीषण कोलाहल सुनाई देने लगा। उस कोलाहल के बीच में ही '**भगवती बालाम्बा**' ने एक साथ तीस बाणों का सन्धान कर उन तीसों भाइयों के शिरों को अपने हस्त-लाघव से काट कर एक साथ धरा पर बिछा दिया।

इस प्रकार **भण्डासुर के समस्त पुत्रों का संहार** होने पर स्वर्ग-लोक से पुष्प-वर्षा होने लगी और देव-शक्तियाँ प्रसन्नता से एक दूसरे का आलिङ्गन करने लगीं। '**मन्त्रिणी**' और '**दण्ड-नाथा**' ने बारम्बार '**भगवती बालाम्बा**' का आलिङ्गन किया और शीघ्रता से सब शक्तियों को लेकर '**भगवती ललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी**' के पास पहुँचीं तथा '**कुमारी बालाम्बा**' के युद्ध-कौशल का समाचार सुनाकर पुनः समराङ्गण में लौट आईं। '**भगवती ललिता**' ने अपनी नव-वर्षीया '**बाला त्रिपुर-सुन्दरी**' को अपनी गोद में बिठाकर बड़े स्नेह से शिर को सूँघा और फिर अपने पास बगल में बिठा लिया।

'**श्रीललितोपाख्यान**' का बाइसवाँ अध्याय '**श्रीबालाम्बा**' द्वारा भण्ड-पुत्रों का उक्त प्रकार संहार कराकर समाप्त हो जाता है। हमने यहाँ संक्षिप्त रूप में ही **श्रीबालाम्बा-विजय** का वर्णन किया है। श्रद्धालु उपासक '**श्रीललितोपाख्यान**' को पढ़कर विशेष बातें जान सकते हैं।

२. त्रिपुरा-रहस्य (माहात्म्य-खण्ड) की कथा

'**भगवती बाला त्रिपुर-सुन्दरी**' के युद्ध की दूसरी कथा '**हरितायन संहिता**' अथवा '**त्रिपुरा-रहस्य**' के '**माहात्म्य-खण्ड**' के ६३ वें और ६४ वें अध्याय में विस्तार के साथ वर्णित की गई है। इस कथा में '**भगवती बाला त्रिपुर-सुन्दरी**' को अष्ट-वर्षीया दर्शाया गया है तथा इस कथा में '**भगवती बाला त्रिपुर-सुन्दरी**' का युद्ध '**भण्डासुर**' के साथ दिखाया गया है। यथा—

"...उत्तर दिशा की ओर से '**भण्डासुर**' की सेना के चलने से ऊपर उठी हुई धूल के समूह को देखकर तथा युद्ध के लिए दैत्य-राज को आया हुआ जानकर, '**भगवती बाला त्रिपुर-सुन्दरी**' उसके साथ युद्ध करने की इच्छा से रथ में बैठकर अपनी रथ-नेत्री (रथ हाँकनेवाली) से बोलीं कि—'हमारा रथ शीघ्र संग्राम के मैदान में ले चलो।'

'श्रीमाता से मुझे युद्ध की आज्ञा न मिलेगी'—ऐसा मन में जानकर '**भगवती बाला त्रिपुर-सुन्दरी**' '**मन्त्रिणी**' तथा सेना-नेत्री '**दण्ड-नाथा**' से मिलकर दैत्य-सेना के सम्मुख इस प्रकार चलीं, जैसे आकाश में वायु से प्रेरित शरत्-काल का मेघ बड़ी शीघ्रता से जाता है।

'**मन्त्रिणी**' और '**दण्डिनी**' अपनी-अपनी सेनाओं को लेकर '**भगवती बाला त्रिपुर-सुन्दरी**' के रथ के पीछे-पीछे इस भाँति चली जा रही थीं, जैसे कि वर्षा-ऋतु में बढ़ी हुई नदी समुद्र की ओर दौड़ती है। इस प्रकार वे तीनों वाण-वर्षा करती हुईं दैत्य-राज '**भण्डासुर**' की सेना में प्रविष्ट हो गईं।

विशाल हाथी पर स्थित '**कुटिलाक्ष**' नामक दैत्य सेना-पति ने '**बालाम्बा**' को देखकर उन्हें रोका और मन में विचारने लगा कि–'यह अकेली कुमारी कौन है, जो इन्द्रादिकों को भी भयभीत करनेवाले हम लोगों के साथ लड़ने आ रही है ? **भगवती श्री ललिता** के सम्बन्ध में हमें जैसा हमारे दूतों ने बताया है, लक्षण तो सब वैसे ही हैं, केवल यह तरुणी नहीं, वरन् कन्या है । क्या, यह कुमारी **श्रीललिता जी** की **कुमारी बाला** है? 'मुझे ऐसा विदित होता है कि यह अकेली हम सबको जीत लेगी । '**विशुक्र**' अथवा '**विषङ्ग**' अथवा स्वयं राजा '**भण्डासुर**' और मैं, हममें से कोई भी इसके सम्मुख संग्राम में नहीं ठहर सकता क्योंकि जिधर-जिधर यह **कुमारी** हमारी सेना को देखती है, उधर ही अपने बाणों की वर्षा से सारी सेना को शिथिल कर देती है । अतः मुझे इसे अवश्य रोकना चाहिए । अन्य युद्धावसर पर तो देवराज '**इन्द्र**' और '**वायु-देव**' की भी सामर्थ्य नहीं कि वे मेरे सामने मेरी सेना में प्रवेश कर सकें, किन्तु यदि आज यह '**बाला**' सेना में प्रविष्ट हो गई, तो मैं अपना मुख किसी को भी नहीं दिखा सकता'–ऐसा निश्चय कर रोकने के अभिप्राय से वह '**श्रीबाला कुमारी**' के साथ भयङ्कर युद्ध करने लगा ।

इस बीच '**बालाम्बा**' ने अपने एक तीक्ष्ण बाण से पर्वत-राज के समान '**कुटिलाक्ष**' के '**गज-राज**' को मार गिराया, जिस पर '**कुटिलाक्ष**' गदा उठा कर रथ में समास्थित '**श्रीबालाम्बा**' के ऊपर टूट पड़ा । उसे आते देखकर '**कुमारी बालाम्बा**' ने कर्ण-पर्यन्त खींचे हुए बाण से उसकी छाती पर प्रहार किया और वह रक्त वमन करता हुआ धरा पर गिर पड़ा । तदनन्तर '**बालाम्बा भगवती**' रथ-नेत्री से बोलीं कि–'हे सखि ! शीघ्र ही मेरे रथ को **भण्डासुर** के समक्ष ले चलो, अन्यथा पीछे से **दण्डिनी** अपनी पताका फहराती हुई आ रही है । वह मुझे आगे बढ़ने से अवश्य रोक देगी और **भण्डासुर** के सामने न जाने देगी ।'

इस बात को सुनकर रथ हाँकनेवाली कहने लगी–'हे देवि ! सामने जो बड़ी ऊँची ध्वजा दिखाई दे रही है, वही **भण्डासुर दैत्य-राज** की पताका है और उस पताकावाले रथ में बड़े-बड़े महा-रथियों के साथ वह सुशोभित हो रहा है, किन्तु, मैं आगे बढ़ने का कोई भी मार्ग नहीं देख रही हूँ । अतः पहले अपने शस्त्रास्त्रों द्वारा आगे बढ़ने के लिए द्वार बनाओ, तो मैं उसके द्वारा भीतर प्रविष्ट हो सकूँ ।'

यह सुनकर '**श्रीबालाम्बा**' ने अपने हस्त-लाघव से शत्रु-सेना को अपने बाणों से तितर-बितर कर दिया और रथ-नेत्री अपने रथ को भीतर ले जाना ही चाहती थी कि इतने में '**भण्डासुर**' का छोटा भाई '**विशुक्र**' नामक दैत्य-राज '**बालाम्बा**' के मार्ग में बाधक होकर विचारने लगा कि–'इस **अष्ट-वर्षीया बालिका बालाम्बा** के बल और वीर्य की सीमा नहीं है । सम्भवतः बड़े-बड़े बलवान् दैत्यों से यह '**बाला**' कभी जीती न जा सकेगी । फिर भी वीर पुरुषों को युद्ध में लड़ना तो पड़ता ही है ।' ऐसा निश्चय कर वह चार दाँतोंवाले '**ऐरावत**'-कुलोत्पन्न शुभ्र '**दन्ताबल**' हाथी के ऊपर विराजमान होकर '**बालाम्बा**' के प्रति वाणों की वर्षा करने लगा ।

साथ ही युद्ध को छोड़कर भागनेवाले दैत्य योद्धाओं को पुकार कर वह समझाने लगा कि 'वीर-वरों ! यदि तुम एक अबला स्त्री का अवलोकन कर डर के मारे घर चले जाओगे, तो तुम्हारी घर-वालियाँ तुम्हें क्या कहेंगी? तुम एक अबला बालिका के साथ युद्ध करने से घबड़ा कर घर लौट रहे हो ! क्या तुम्हें इस बात पर लज्जा नहीं आती ? स्त्री के द्वारा किए गए अपमान से तो मान के साथ मरना अच्छा है ।'

'**विशुक्र**' के इस प्रकार के वचनों को सुनकर समस्त सेना पुनः एकत्र होकर तथा '**विशुक्र**' का सहारा पाकर लड़ने को उद्यत हो गई ।

'भगवती बालाम्बा' का रथ भी **'विशुक्र'** के सामने हो गया और भगवती अपने रथ से बाण-वर्षा करने लगीं। फिर **'विशुक्र'** ने अपनी तीक्ष्ण शर-वर्षा से शक्ति-सेना को विह्वल कर दिया और शक्तियाँ एक-एक करके इधर-उधर खिसकने लगीं। इस प्रकार शक्ति-सेना की दशा देखकर **'बालाम्बा'** ने **'विशुक्र'** के भाल-देश (मस्तक) पर चार भालों से प्रहार किया। **'विशुक्र'** मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़ा, किन्तु तनिक देर के उपरान्त पुनः शीघ्र खड़ा होकर बाणों को बरसाने लगा। इस बाण-वर्षा को देखकर **'श्रीबालाम्बा'** ने अपने दो शरों से **'विशुक्र'** का शरासन और छत्र काट कर भूमि पर गिरा दिया तथा एक बाण से उसके वाहन **'हस्ति-राज'** को **'ऐरावत'** के पास स्वर्ग-लोक में भेज दिया।

अपने वाहन **गज-राज** को मरा हुआ देखकर **'विशुक्र'** अत्यन्त रोष के साथ बड़ी तेज तलवार लेकर **'बालाम्बा'** पर झपटा, किन्तु भगवती ने अपने एक तीक्ष्ण वाण से उसकी तलवार के दो खण्ड कर दिए और साथ ही तीन वाण उसके शिर पर ऐसे मारे कि वह तीन शृङ्गोंवाले (तीन चोटीवाले) पर्वत के समान दिखाई देने लगा।

अब क्रोधोन्मत्त होकर **'विशुक्र'** ने भगवती **'बालाम्बा'** को अपनी बलवती भुजाओं से उठाकर ऊपर की ओर उछाल दिया, किन्तु **'श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी'** ने तेजी से नीचे झपटकर उसके शिर पर एक ऐसा दृढ़ मुष्टि-प्रहार किया, जिससे वह पुनः मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा और उसके शिर से धारा-प्रवाह रुधिर बहने लगा।

तब शीघ्रता से **'भगवती बाला त्रिपुर-सुन्दरी'** अपने रथ में विराजमान होकर **'भण्डासुर'** के सम्मुख पहुँचने को बढ़ीं, किन्तु तभी **'विशुक्र'** पुनः मूर्छा-मुक्त होकर तीव्र-गामी अश्व पर आसीन होकर उनके मार्ग में बाधा पहुँचाने के लिए आ गया। यह देखकर **'बालाम्बा'** ने अपने तीक्ष्ण वाण-समूह से उसके **'वाजि-राज'** (श्रेष्ठ घोड़े) को मार गिराया और अन्य दूसरे तीखे शर से **'विशुक्र'** के वक्षः-स्थल को वेध कर उसे फिर धरा-शायी बना दिया। **'भगवती बालाम्बा'** के इस विलक्षण पराक्रम का अवलोकन कर **दैत्य** और **आदित्य (देवता)**-सभी आश्चर्यान्वित होकर कहने लगे-

"अहो! जिस पराक्रमी **'विशुक्र'** ने कई बार **इन्द्रादि देवताओं** को हराकर संग्राम में विजय प्राप्त की है, उस विष्णु के समान पराक्रमी **'विशुक्र'** को **'भगवती बालाम्बा'** ने लीला से ही धरा-शायी कर दिया है। अब तो यह **'बालाम्बा'** ही सबके लिए अकेली पर्याप्त है। **'श्रीभगवती ललिता महा-राज्ञी'** के तो आने की कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी।"

सचमुच ही अब **'भगवती बालाम्बा'** का रथ बिना किसी विघ्न-बाधा के **दैत्य-राज भण्डासुर** के सामने पहुँच गया और भगवती अपने मन में यह कहती हुई कि-'अब मैं इस दैत्य-राज के साथ युद्ध करके प्रसन्न होऊँगी', **भण्डासुर** के ऊपर वाण-वर्षा करने लगीं।

इस ओर **'भण्डासुर'** भी **'भगवती बाला त्रिपुर-सुन्दरी'** को अपने सम्मुख होकर बाणों की वर्षा करती हुई देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अपने मन में सोचने लगा कि-'यह वही समय आ गया है, जिसकी मैं बहुत देर से प्रतीक्षा में था और जिस समय की ओर **'श्रीभगवती लक्ष्मी जी'** ने सङ्केत भी किया था। मैंने **भक्ताभिलाष-पूरणी महा-देवी** के दर्शन पाए हैं और अब मेरे देहावसान का समय निकट आ गया है। मैं

इनके द्वारा निहत होकर **श्रीनगर** में विराजमान होऊँगा । यह '**बालाम्बा**' '**भगवती श्रीललिता महा-राज्ञी**' की अद्‌भुत पराक्रम-वाली कुमारी हैं । इसमें सन्देह नहीं कि मुझे मारने के लिए **भगवती श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी** भी अवश्य पधारेंगी क्योंकि **भगवती लक्ष्मी** का कथन अन्यथा नहीं हो सकता । अस्तु, अब मैं यथा-सम्भव उपचारों को जुटाकर विधि-वत् इनकी पूजा करूँगा ।'

ऐसा मन में विचार कर उसने धनुष-बाण उठाया और '**वारुणास्त्र**' से अभिमन्त्रित कर वाणों को **भगवती बाला** के चरणों की ओर भेजा और एक वाण फूलों के मन्त्र से अभिमन्त्रित कर '**बालाम्बा**' के शिर की ओर छोड़ा । पूर्व के दो वाणों ने भगवती के पैरों का जल से प्रक्षालन किया और तीसरे पुष्प-वाण ने भगवती के शिर पर पुष्प-मालाओं की वर्षा की । इस अद्भुत बात को देखकर **रथ-नायिका** ने '**श्रीबालाम्बा**' से पूछा-"यह क्या मामला है ? क्या असुरेश्वर ने ही यह जल-वर्षा और पुष्प-वर्षा की है? अथवा आपने अपनी शक्ति से यह सब कुछ किया? इसने तो बाण चलाए और उनसे पूजा-सामग्री निकली! यह क्या बात है ? मेरी आशङ्का दूर कीजिए ।"

रथ-नायिका की आशङ्का को सुनकर '**श्रीबालाम्बा**' भगवती उसका समाधान करने लगीं-"हे प्रिये! रथ-नायिके! सुनो, यह '**भण्डासुर**' नामक दैत्य-राज इस जन्म से पहले **भगवती लक्ष्मी का महा-दूत** था और इसका नाम था '**माणिक्य-शेखर**' । यह '**भगवती ललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी**' का श्रेष्ठ भक्त था । शाप के कारण यह दैत्य-राज बन गया । इस युद्ध में मारे जाने पर यह '**श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी**' की सुन्दर-पुरी '**श्रीपुरी**' में विराजमान होगा । मुझे **श्रीललिताम्बा** की सुपुत्री जानकर इसने यथोपपन्न सामग्री से मेरी पूजा की है । इसको तुम मेरी प्रकृति मानो ।"

ऐसा कहकर '**श्री बालाम्बा**' ने एक बाण उसकी ओर छोड़ा । वह बाण पञ्च-शाख (पाँच अँगुलियोंवाला हाथ) बनकर उसके शिर को स्पर्श करने लगा । इस बात को देखकर '**भण्डासुर**' समझ गया कि '**भगवती** ने अपना हाथ मेरे शिर के ऊपर रख दिया है ।' अतः वह बहुत प्रसन्न हो गया । इस बात को देखकर **रथ-नायिका** बड़ी आश्चर्यान्वित हो गई ।

तदनन्तर '**बालाम्बा**' और '**भण्डासुर**' का महा-घोर युद्ध हुआ, जो एक प्रकार का द्वन्द्व-युद्ध था । '**भण्डासुर**' बड़ी भक्ति के साथ अपने अद्‌भुत पराक्रम से '**भगवती बालाम्बा**' को प्रसन्न करने लगा । वे दोनों परस्पर एक-दूसरे की प्रशंसा करने लगे ।

भण्डासुर ने कहा-'हे देवि! आपकी रण-शैली बहुत अच्छी है ।'

भगवती बोलीं-'हे वीर भण्डासुर! तुम रण-श्लाघ्य हो ।'

इस प्रकार **भगवती भण्डासुर** की प्रशस्ति करती थीं और **भण्डासुर श्रीबालाम्बा** की स्तुति करता था । ऐसा बहुत देर तक परस्पर द्वन्द्व-युद्ध होता रहा । अन्त में '**भण्डासुर**' की शक्ति जब कुछ क्षीण होने लगी, तब **विषङ्ग**, **विशुक्र** और **कुटिलाक्ष** अपनी सेनाओं के साथ सहायतार्थ पहुँचे । वे सभी आग उगलनेवाले अस्त्र-शस्त्रों से '**भगवती बालाम्बा**' के साथ लड़ने लगे ।

'**श्रीबालाम्बा भगवती**' चारों ओर सहज ही बड़े कौशल के साथ शत्रुओं से लोहा ले ही रही थीं कि इतने में **सेना-नायिका भगवती** '**दण्ड-नाथा**' दूसरी ओर से शत्रुओं को परास्त कर वहाँ पहुँच गईं ।

'श्रीबालाम्बा' को शत्रुओं के साथ अकेली लड़ती हुई देखकर वे चकित हो गईं। उन्होंने **श्रीबालाम्बा** से निवेदन किया कि–"आपको यह भयङ्कर युद्ध न करना चाहिए। आपने बड़ी वीरता के साथ इन दैत्यों से सङ्घर्ष किया है, किन्तु यदि **भगवती श्री महा-राज्ञी** सुनेंगी कि आप अकेली ही इन दुर्मद दैत्यों के साथ भिड़ रही हैं, तो वे अत्यन्त व्याकुल होंगी। अतः आपको उनके पास चली जाना चाहिए।"

इस प्रकार **'बालाम्बा'** को समझा-बुझा कर **सेना-नायिका दण्ड-नाथा** ने घुड़सवार-शक्तियों की स्वामिनी **अश्व-नाथा नायिका** को आज्ञा दी कि–'तुम **श्रीबालाम्बा** को अपने साथ लेकर **श्री ललिता महा-राज्ञी** के पास सौंप आओ और पुनः शीघ्र समराङ्गण में लौट आओ।'

भगवती अश्व-नाथा श्रीबालाम्बा को अपने रथ में बिठाकर **श्रीललिता महा-राज्ञी** के पास गईं और उनसे निवेदन किया कि–"**श्रीबालाम्बा** कुमारी ने **विशुक्र, विषङ्ग** और **कुटिलाक्ष** को परास्त कर दैत्य-राज **'भण्डासुर'** के साथ भी घोर भयङ्कर संग्राम किया है। **भगवती वाराही (दण्ड-नाथा)** ने इन्हें बड़ी कठिनता से समझा-बुझाकर आपके पास भेजा है।"

इस प्रकार निवेदन कर **भगवती अश्व-नाथा** युद्ध-भमि को लौट गईं।

श्रीललिता महा-राज्ञी ने **'श्री कुमारी बालाम्बा'** को अपने अङ्क में बिठाकर शिर को सूँघा और कहा कि–"वत्से! ऐसा साहस भविष्य में कभी न करना। तुम बिना मेरी आज्ञा के लड़ने के लिए उद्यत होकर युद्ध-भूमि में क्यों चली गईं ?"

'श्रीकुमारी बाला' ने नम्रता से निवेदन किया कि–"माता जी! यदि मैं आपसे पूछती, तो आप मुझे कभी आज्ञा न देतीं। अतः मैं बिना पूछे ही चुपचाप निकल गई। मैं आपसे क्षमा चाहती हूँ, किन्तु यदि आप सत्य मानें, तो मुझे अभी युद्ध से तृप्ति नहीं हुई है। **सेना-नायिका 'दण्ड-नाथा'** ने मुझे बाध्य कर संग्रामाङ्गण से वापिस भेज दिया।"

श्री भगवती ललिता महा-राज्ञी ने अपनी कुमारी **'श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी'** को शान्त कर कहा–"वत्से! भविष्य में पुनः ऐसा कभी न करना।"

इस प्रकार **'श्री बालाम्बा'** के युद्ध-पराक्रम की दूसरी कथा **'हरितायन संहिता'** अथवा **'त्रिपुरा-रहस्य', 'माहात्म्य-खण्ड'**, ६३-६४-६५ वें अध्याय में वर्णित है। इस **'त्रिपुरा-रहस्य', माहात्म्य-खण्ड'** के कुल अस्सी अध्याय (६६८७ श्लोक) हैं। **'त्रिपुरा-रहस्य'** ग्रन्थ के–१ माहात्म्य-खण्ड, २. ज्ञान-खण्ड और ३. चर्या-खण्ड नाम से तीन खण्ड हैं। इस ग्रन्थ की रचना पुराणों की तरह शिथिल बन्धवाली नहीं है, अपितु प्रगाढ़-बन्धवाली दीर्घ-समास-युक्त काव्य-मयी रचना है।

❐❐❐

'श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी'-नाम का अर्थ

१. 'त्रिपुरा'-शब्द का महत्त्व

बाला, बाला त्रिपुरा, त्रिपुरा बाला, बाला-सुन्दरी, बाला त्रिपुर-सुन्दरी, पिण्डी-भूता त्रिपुरा, काम-त्रिपुरा, त्रिपुर-भैरवी, वाक् त्रिपुरा, महा-लक्ष्मी त्रिपुरा, वह्नि-त्रिपुरा, मोहिनी त्रिपुरा, भ्रामरी त्रिपुरा, नन्दा-त्रिपुरा, त्रैलोक्य-स्वामिनी-त्रिपुरा, हंसिनी त्रिपुरा, बाला-भैरवी, सम्पद्-प्रदा भैरवी, चैतन्य भैरवी, कामेश्वरी भैरवी, अघोर भैरवी, महा-भैरवी, ललिता भैरवी, कामेशी भैरवी, रक्त-नेत्रा भैरवी, नित्या भैरवी, मृत-सञ्जीवनी भैरवी, मृत्युञ्जय-परा भैरवी, वज्र-प्रस्तारिणी भैरवी, कमलेश्वरी भैरवी, सिद्ध-कौलेश भैरवी, डामर भैरवी, कामिनी भैरवी, सुन्दरी भैरवी, श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी, श्रीललिता राज-राजेश्वरी, षोडशी, महा-षोडशी तथा षोडशी के अन्य भेद-सभी **"श्री श्रीविद्या"** के नाम से पुकारे जाते हैं । इन सभी विद्याओं की उपासना ऊर्ध्वाम्नाय से होती है ।

बाला, बाला त्रिपुरा और **बाला त्रिपुर-सुन्दरी** नामों से एक ही महा-विद्या को सम्बोधित किया जाता है । किसी भी नाम से उपासना की जाए, उपासना तो 'जगन्माता' की ही की जाती है । **'नारदीय संहिता'** में लिखा है कि-'वेद, धर्म-शास्त्र, पुराण, पाञ्च-रात्र आदि शास्त्रों में एक 'परमेश्वरी' का वर्णन है, नाम चाहे भिन्न-भिन्न हों, किन्तु 'महा-शक्ति' एक ही है । कहीं मन्त्रोद्धार-भेद से, कहीं आसन-भेद से, कहीं सम्प्रदाय-भेद से, कहीं पूजा-भेद से, कहीं स्वरूप-भेद से, कहीं ध्यान-भेद से "त्रिपुरा" के बहुत प्रकार हैं । कहीं **त्रिपुर-भैरवी**, कहीं **त्रिपुरा-ललिता**, कहीं **त्रिपुर-सुन्दरी**, कहीं इन नामों से पृथक्, कहीं मात्र **'त्रिपुरा'** या **'बाला'** ही कही जाती है । इसलिए तन्त्र-वचन है कि-

न गुरोः सदृशो दाता, न देवः शङ्करोपमः । न कौलात् परमो योगी, न विद्या 'त्रिपुरा' परा ।।

अर्थात् 'श्रीगुरु-देव' के समान कोई दाता नहीं है, 'शङ्कर भगवान्' के समान कोई देवता नहीं, 'कौल' से अतिरिक्त कोई परम योगी नहीं और **"भगवती त्रिपुरा"** (त्रिपुर-सुन्दरी) से परे कोई उत्कृष्ट देवी (पर-देवता) नहीं है । 'सुन्दरी-स्तव' में लिखा है कि **ब्राह्मी (ब्रह्माणी), रौद्री (माहेश्वरी)** और **वैष्णवी**-ये तीन महा-शक्तियाँ हैं । इन तीनों महा-शक्तियों की समष्टि मूर्ति **'त्रिपुर-सुन्दरी'** हैं । यथा-

ब्राह्मी रौद्री वैष्णवीति, शक्तयस्तिस्र एव हि । पुरं शरीरं यस्याः सा, त्रिपुरेति प्रकीर्तिता ।।

तन्त्रान्तर में भी लिखा है-

प्रकाशश्च विमर्शश्च, स्पन्दः सत्ता चितिः क्रिया । स्फुरत्तेति समाख्याता, सा वै त्रिपुर-सुन्दरी ।।

'त्रिपुरा' शब्द की व्याख्या-'तिस्रः पुरस्त्रि-पथा विश्व-चर्षणी' इत्यादि **'त्रिपुरा महोपनिषद्'** के श्रीभास्कर राय कृत भाष्य में निम्न प्रकार है-

'...**'त्रिपुरा'** अर्थात् तीन पुरों की अधीश्वरी । तीन पुरियों में जाने के लिए मार्ग भी तीन हैं । 'मुक्ति' के पाँच प्रकार-**१. सालोक्य, २. सामीप्य, ३. सारूप्य, ४. सायुज्य** और **५. कैवल्य** हैं । इनमें से **'सालोक्य'** का एक मार्ग है और **'कैवल्य'** का एक । शेष तीन-**'सायुज्य, सारूप्य और सामीप्य'** का एक अलग मार्ग

है। इस प्रकार कुल तीन मार्ग हुए। त्रिविध मार्ग होने से पुरियाँ भी तीन हैं। तीन पुरियों की प्राप्ति अभीष्ट होने से पर-देवता को '**त्रिपुरा**' (त्रिपुर-सुन्दरी) कहा गया है।'

बहु-वाचक विशेषण से सम्पन्न एक-वाचक विशेष्य-''त्रिपुरा'' से अनेकता में एकता के दर्शन की पुष्टि होती है। त्रि-रूपात्मकता में वस्तुतः एक-रूपत्व ही निहित है। 'कालिका पुराण' में कहा गया है-

त्रिकोण-मण्डलं चास्या, भू-पुरं च त्रि-रेखकम्। मन्त्रोऽपि त्र्यक्षरः प्रोक्तस्तथा रूप-त्रयं पुनः ।।
त्रिविधा कुण्डली शक्तिस्त्रि-देवानां च सृष्टये। सर्वं त्रयं त्रयं यस्मात्, तस्मात् तु त्रिपुरा मता ।।

'मन्त्र-शास्त्र' में '**त्रिपुरा**' का अर्थ इस प्रकार किया गया है-

'त्रि-मूर्ति-सर्गाच्च पुरा भवत्वात् , त्रयी-मयत्वाच्च पुरैव देव्याः ।
लये त्रिलोक्या अपि पूरकत्वात् , प्रायोऽम्बिकाया त्रिपुरेति नाम ।।
त्रिभ्यः पुरा त्रिपुरा-इति च ।

अर्थात् त्रिमूर्ति-**१. ब्रह्मा, २. विष्णु** और **३. महेश्वर**-की सृष्टि से पूर्व जो विद्यमान थी तथा जो वेद-त्रयी-**१. ऋग्, २. यजुः** और **३. साम-वेद**-से पूर्व विद्यमान थी एवं **त्रि-लोकों-१. स्वर्ग, २. पृथ्वी** और **३. पाताल**-के लय होने पर भी पुनः उनको ज्यों-का-त्यों बना देनेवाली भगवती का नाम '**त्रिपुरा**' है।

विश्व भर में तीन-तीन वस्तुओं के जितने भी समुदाय हैं, वे सब **भगवती बाला त्रिपुर-सुन्दरी** के '**त्रिपुरा**' नाम में समाविष्ट हैं। अर्थात् संसार में त्रि-संख्यात्मक जो कुछ है, वे सभी वस्तुएँ '**त्रिपुरा**' के तीन अक्षरोंवाले नाम से ही उत्पन्न हुई हैं। अतएव '**देवी-स्तोत्र-पञ्चक**' के '**लघु-स्तव-राज**' में **श्रीलघ्वाचार्य** ने लिखा है-"हे **भगवति! बाला-त्रिपुर-सुन्दरि!** हे माता! संसार में जो कुछ भी तीन संख्या से नियमित की हुई, त्रि-वर्गादिक धर्म, अर्थ और काम आदि वस्तुएँ हैं, वे समग्र वस्तुएँ यथार्थ रूप से तुम्हारे '**त्रिपुरा**' नाम में ही मिलती हैं। अर्थात् जो कुछ संसार में तीन नामवाली वस्तुएँ हैं, वे सब तुमसे ही पैदा हुई हैं।"

श्रीलघ्वाचार्य ने त्रि-संख्यात्मक वस्तुओं में कतिपय त्रि-वर्गात्मक वस्तुओं के नाम भी गिनाए हैं। जैसे '**तीन देवता**'-१.ब्रह्मा, २. विष्णु और ३. महेश। 'देवता' का अर्थ 'गुरु' भी है। '**तीन गुरु**'-१. गुरु, २. परम गुरु और ३. परमेष्ठी गुरु।

'**तीन अग्नि**'-१. गार्हपत्य, २. दक्षिणाग्नि और ३. आहवनीय। अग्नि या ज्योति, अतः '**तीन ज्योतियाँ**'-१.हृदय-ज्योति, २. ललाट-ज्योति और ३. शिरो-ज्योति।

'**तीन शक्तियाँ**'-१. इच्छा-शक्ति, २. ज्ञान-शक्ति और ३. क्रिया-शक्ति। शक्ति से '**तीन देवियों**' का भी बोध होता है-१. ब्रह्माणी, २. वैष्णवी और ३. रुद्राणी।

'**तीन स्वर**'-१. उदात्त, २. अनुदात्त और ३. त्वरित। अथवा 'तन्त्र-शास्त्र' में कहे हुए षोडश स्वरों में से-१. 'अ'-कार, २. 'उ'-कार और ३. विन्दु।

'**त्रैलोक्य**' (तीन लोक)-१. स्वर्ग, २. मृत्यु और ३. पाताल। 'लोक' शब्द से देहस्थ 'चक्र' का अर्थ भी लिया जाता है। '**तीन चक्र**'-१. आज्ञा, २. शीर्ष और ३. ब्रह्म-ज्ञान।

'**त्रि-पदी**' (तीन स्थान)-१. जालन्धर पीठ, २. काम-रूप पीठ और ३. उड्डियान पीठ। 'पद' शब्द से 'नाद' शब्द का भी बोध होता है। '**तीन नाद**'-१. गगनानन्द, २. परमानन्द और ३. कमलानन्द। '**त्रि-पदी**' से तीन पदोंवाली 'गायत्री' भी ली जाती है।

'त्रि-पुष्कर' (तीन तीर्थ)–१. शिर, २. हृदय और ३. नाभि। अथवा 'पुष्कर' से तीनों पुष्कर–१. ज्येष्ठ पुष्कर, २. मध्यम पुष्कर और ३. कनिष्ठ पुष्कर।

'त्रि-ब्रह्म' (तीन ब्रह्म)–१. इड़ा, २. पिङ्गला और ३. सुषुम्णा। अथवा 'ब्रह्म' शब्द से–१. अतीत, २. अनागत और ३. वर्तमान-काल को प्रकाशित करनेवाले ब्रह्म कहे गए हैं। जैसे–१. हृदय, २. व्योम और ३. ब्रह्म-रन्ध्र।

'त्रयः वर्णाः' (तीन वर्ण)– १. ब्राह्मण, २. क्षत्रिय और ३. वैश्य। अथवा 'वर्ण' शब्द से बीजाक्षरों का ग्रहण होता है–१. वाग् -बीज, २. काम-बीज और ३. शक्ति-बीज।

२.'बाला', 'बालिका', 'बालक' और 'बाल'- शब्दों का महत्त्व

'बाला', 'बालक', 'बालिका' और **'बाल'** (केश)–ये शब्द 'भारतीय साहित्य' में अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। दुर्भाग्य की बात है कि इन शब्दों की महिमा जाने बिना लोग इनका प्रयोग इनके विपरीत अर्थ में तो करते ही हैं, इनके अर्थ को हीन बना डालते हैं। इन शब्दों में जो व्यापकत्व सन्निहित है, वह मानव को एक ओर उच्च शिखर पर पहुँचानेवाला है, तो दूसरी ओर इनके सु-प्रयोग से चतुर्वर्ग (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) की प्राप्ति भी हो सकती है। यास्क का कहना है–

'बलयति पुत्रान् लोकान् वा इति बाला'

अर्थात जो अपने पुत्रों को तथा संसार को बल प्रदान करती है, उसे **'बाला'** कहते हैं।

दूसरे वैयाकरणों ने बताया है कि "जिसमें बल है, वही **'बाला'** कहलाती है।" 'सीधे-सादे अर्थ में यह समझना चाहिए कि जो संसार के प्राणियों को बल प्रदान करती है, उसे **'बाला'** कहते हैं।' वेद-वाक्य है– **'एकः शब्दः सु-प्रयुक्तः, स्वर्गे लोके च काम-धुक् भवति।'**

अर्थात् अच्छी तरह प्रयोग किया गया एक शब्द भी इस लोक में तथा पर-लोक में इच्छाओं की पूर्ति करनेवाला होता है।

'बाला' अर्थात् नख से शिखा तक, रक्त से ओज तक बल प्रदान करनेवाली

उक्त नियम के अनुसार जो लोग **'बाला'** को 'अबला' के अर्थ में तथा चौका-चूल्हा सँभालनेवाली 'नारी' के अर्थ में करते और समझते हैं, ऐसे लोगों की बुद्धि का–दिमाग का दिवाला ही निकल गया है, यह कहना उचित ही होगा क्योंकि वास्तविकता तो यह है कि **'बाला'** का अर्थ ही है वह स्त्री, जो बल को बढ़ाती है। वह पुत्र के लिए माता हो सकती है, भाई के लिए 'बहन' और पति के लिए 'पत्नी'। इसीलिए आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'भाव-प्रकाश' में कहा गया है–**'बाला स्त्री क्षीर-भोजनम्।'**

अर्थात् **'बाला'** की तुलना बल-वर्धक खीर के भोजन से की गई है। अधिक दूर न जाकर घर में ही उदाहरण खोज निकालना चाहिए कि वही **'बाला'** (स्त्री) नव-जात शिशु को दूध पिला कर हृष्ट-पुष्ट कर सकती है, जो **'बाला'** है। यह क्षमता किसी दूसरी महिला में नहीं है। इससे भी यही स्पष्ट होता है कि **'बाला'** वही है, जो हमारे समस्त अङ्गों को बल प्रदान करती है। नख से शिखा तक, रक्त से ओज तक, बुद्धि से बल तक जो प्राणी को बल प्रदान करती है, वह शक्ति-मती अवश्य है, जिसके बिना प्राणी अपने को निस्सहाय समझता है।

इसमें सन्देह नहीं कि एक पति भी अपनी '**बाला**' (पत्नी) के वियोग में उसी तरह रोता-कलपता है, विलाप करता है तथा अनुभव करता है कि जीवन-सङ्गिनी, मेरी रक्षा करनेवाली, माता की तरह पालन करनेवाली, दासी की तरह सेवा करनेवाली, बन्धु-मित्र की तरह स्नेह करनेवाली, मन्त्री की तरह सलाह देनेवाली अब नहीं रही-मेरी शक्ति क्षीण हो गई, मैं निर्बल हो गया।

इसी प्रकार '**बाला**' (माता) से बिछुड़ जाने पर बालक भी बिलख-बिलख कर रोता है कि 'मेरी रक्षा, पालन-पोषण करनेवाली, मेरी गन्दगी दूर करनेवाली, प्यार-दुलार करनेवाली, मेरे जीवन के बोझ को ढोनेवाली अब नहीं रही! मैं अब जीवित नहीं रह सकूँगा क्योंकि मेरा बल छिन गया है।'

अब विचारने की बात है कि वह कौन-सी अद्‌भुत शक्ति है उस '**बाला**' में, जिसके बिना जगत् के प्राणी निर्बल और निष्प्राण हो जाते हैं ? वह है **'बाला'-बल प्रदान करनेवाली शक्ति माता**।

'बाला' अर्थात् सर्व-शक्ति-सम्पन्न, आदि-माता

इस प्रसङ्ग में यह भी नहीं भूलना चाहिए कि पशु-पक्षियों में भी यही बात है। मानव मात्र के लिए तो '**बाला**' बल-दायिनी है ही।

प्रकृति के पारखी लोगों का मत है कि मानव के लिए जिस तरह '**बाला**' बल-वर्द्धिनी समझी जाती है, उसी तरह लता, पेड़-पौधे आदि में भी '**बालाएँ**' होती हैं, जो **फूल-फलों** को शक्ति-सम्पन्न बनाती हैं। उन्हीं फलों से जगत् बल-शाली बनता है। इसी तरह और भी गहराई में जाएँ, तो पता चलेगा कि '**बाला**' ही पृथ्वी माता है, जो सर्व-शक्ति-सम्पन्न ही नहीं, चराचर को धारण और पोषण करनेवाली है, उसे भी '**बाला**' शास्त्रों में कहा गया है। इसीलिए पुराणों में बताया गया है कि वही मेरी माता है, जो आदि-काल से मेरी रक्षा करती आ रही है-

या माता सर्व-देवानां, युगादौ परि-कीर्तिता। आदि-मातेति विख्याता, नाम्ना तेन कुरुद्वह!॥

अर्थात् आदि-काल में, हे कुरुद्वह! समस्त देवताओं की जो माता कही जाती थी, वही हम लोगों की भी 'आदि-माता' के नाम से विख्यात है।

'**बाला**' का काम ही है वृद्धि करना। वह मानव या किसी प्राणी-विशेष को ही बल प्रदान करती हो, ऐसा नहीं-आदि-युग से ही यह जगन्माता इस संसार को बढ़ाती चली आ रही है। '**आदि-माता**' द्वारा निर्मित सृष्टि-जगत् को जननी से मिला रही है। **बल-वर्द्धिनी माता** की अद्‌भुत शक्ति से जो परिचित हो गया है, उसका जन्म तो सफल हो ही जाता है, उसके सामने त्रिभुवन की सम्पत्ति भी तृण के समान तुच्छ हो जाती है क्योंकि जिस पुत्र पर माता-पिता के स्नेह का हाथ फिर जाता है, वह धन्य-धन्य हो जाता है। वह अनुभव करता है कि माता का आशीर्वाद त्रिलोक का ऐश्वर्य है। मातृ-भक्त पुत्र भी यही चाहता है कि मेरी माता का हस्त-कमल मेरे सिर पर आशीर्वाद करते हुए एक बार भी घूम जाय। पुत्र चाहता है (देवी-भागवत, ५१/३१)-

तस्यात्मजोऽयं तव पाद-पङ्कजं, भीतः प्रपन्नार्ति-हरोपसादितः।
तत् पालयैनं कुरु हस्त-पङ्कजं, शिरस्यमुष्याखिल-कल्मषापहम्॥

अर्थात् यह तुम्हारा पुत्र तुम्हारे चरण-कमल के पास पीड़ाओं से पीड़ित हो डरा हुआ बैठा है। इसलिए अखिल पापों के विनाश करनेवाले अपने हस्त-कमल को मेरे शिर पर रखकर मेरी रक्षा करो, पालन करो।

'ज्ञान' और 'कर्म'- रूपी बल-वर्द्धिनी माँ की प्राप्ति

पुत्र माता से ऐसी प्रार्थना इसलिए करता है क्योंकि वह जानता है कि **'बाला' माता** बल-बर्द्धिनी है। वह मेरा बल बढ़ाएगी ही, घटने नहीं देगी। एक बात यह जरूर है कि बल-बर्द्धिनी होती हुई भी वह, जो जिस भाव से उसके समक्ष जाते हैं, उन्हें वैसी ही दीख पड़ती है तथा तदनुरूप फल भी देती है। इसीलिए 'देवी-भागवत' में कहा है-

ब्रह्मैव साऽति-दुष्प्राप्या, विद्याऽविद्या-स्वरूपिणी। योग-गम्या परा-शक्तिः, मुमुक्षूणां च वल्लभा ।।

अर्थात् वह **बल-वर्द्धिनी माँ,** कठिनता से प्राप्त होनेवाली **ब्रह्म** ही है। वह **'विद्या'** (ज्ञान) और **'अविद्या'** (कर्म) का रूप धारण करनेवाली है। **योग** द्वारा ही उसके पास पहुँचा जा सकता है। वह **'परा-शक्ति'** है और चाहनेवालों के लिए तो प्रिय पत्नी के समान ही है।

ऐसी जगज्जननी को जो न प्राप्त करे तथा उसे प्राप्त करने की चेष्टा न करे, उसे क्या कहा जा सकता है! जो मातृ-भक्त नहीं हैं, वे उसके वास्तविक बल को नहीं समझ पाते, लेकिन जो **'बाला' माता** की अतुलनीय शक्ति से पूर्ण परिचित हैं, वे जानते हैं कि उसी के कृपा-कटाक्ष से वज्र भी तृण का रूप धारण कर लेता है और तृण वज्र के समान घोर कठोर बन जाता है। उस **बल-वती 'बाला'** का यह बल है कि वह **डङ्के की चोट** पर कहती है-

शशको हन्ति शार्दूलं, मशको वै यथा गजम्। साहसं मुञ्च मेधाविन्! कुरु मे वचनं हितम् ।।

अर्थात् अपनी बुद्धि का व्यायाम, हे मेधा (बुद्धि) धारण करनेवाले पुरुष! छोड़ो। देखो, मेरी ही कृपा से शशक इतना बल-शाली हो जाता है कि सिंह को भी मार गिराता है और एक तुच्छ मच्छड़ हाथी को मार डालता है। इसलिए अपने साहस को छोड़ो, मेरी हित-कर बात को मानो।

यह सर्व-विदित है कि जो बुद्धि-वादी इस अदृश्य शक्ति पर विश्वास नहीं करते, वे ऐसी **बल-वती माता** की सेवा करने से वञ्चित रह जाते हैं, उसकी पूजा-अर्चना में योग-दान नहीं करते, उसका भजन-भाव नहीं करते, उसके प्रिय पात्र बनने की चेष्टा नहीं करते तथा उसके चिन्तन-मनन के लिए कभी समय नहीं निकालते! वे ही इस जगत् के मन्द-भागी हैं, शोचनीय हैं। 'देवी-भागवत' में ऐसे ही लोगों को चेतावनी देते हुए कहा है।

ते मन्दास्तेऽति-दुर्भाग्या, रोगैस्ते समभि-द्रुताः। येषां चित्ते न विश्वासो, भवेदम्बाऽर्चनादिषु ।।

अर्थात् वे ही प्राणी मन्द (मूर्ख) और अभागे हैं तथा वे ही रोगों से ग्रस्त रहा करते हैं, जिनके हृदय में 'माता' की अर्चना-पूजा आदि के प्रति विश्वास नहीं है।

'बाला' (बल-वर्द्धिनी) का सेवक कभी निर्बल कैसे रह सकता है? बल-शाली कभी दुखी कैसे रह सकता है और विश्वासी पर किसकी दया नहीं होती?

'मूर्खता' माता की दुष्कृपा का ही फल है और **'रोग'** को स्पष्ट शब्दों में पाप बताया गया है-**'रोगाः पापाः।'** इसलिए इस संसार में **सुखी** और **बलवान** रहने के लिए **माता 'बाला'** की शरण में रहना ही चाहिए। इसकी शरण इसलिए भी आवश्यक है कि **माता 'बाला'** पहले **बल** प्रदान करती हैं, तब **बुद्धि** क्योंकि वे जानती हैं कि संसार में पहले पुत्र को **'बल'** चाहिए, तब **'बुद्धि'**। **'बल'** के न रहने पर **'बुद्धि'** एक क्षण भी टिक नहीं

सकती। इसीलिए राम-भक्त हनुमान को-'**तुम बल-बुद्धि निधान**'-कहा गया है। उन्हें पहले बल प्राप्त हुआ, तब बुद्धि प्राप्त हुई, नहीं तो कहा जाता-'तुम बुद्धि-बल निधान।' इसका अभिप्राय यही है कि जिनको संसार में कुछ करके दिखाना है, उन्हें पहले 'बल' चाहिए, तब 'बुद्धि'। इन दोनों की प्राप्ति तभी होगी, जब संसार के लोग **माता 'बाला'** की शरण में आएँगे।

३. विश्वात्मिका शक्ति 'श्रीबाला'

'**शिव**' और '**शक्ति**'-तत्त्व सृष्टि के आदि कारण हैं। वे जब ही कल्पना करते हैं, तभी सृष्टि होने लगती है। महा-प्रलय के बाद जब '**एकोऽहं बहु स्याम प्रजाये**' की कल्पना होती है, तभी **शक्ति-तत्त्व-शिव-तत्त्व** से अलग होता है। उसके पहले वे एक ही रहते हैं। उस एक रहने का नाम '**नाद**' है अर्थात् सृष्टि की कल्पना होने के समय निष्क्रिय '**शिव**' और सक्रिय '**शक्ति**' की जो विपरीत रति होती है, उसे ही '**नाद**' कहते हैं और इसी विपरीत रति द्वारा '**विन्दु**' की उत्पत्ति होती है।

'**शक्ति**' जब '**निष्कल**' **शिव** से युक्त रहती हैं, तब वे चिद्-रूपिणी और विश्वोत्तीर्णा अर्थात् विश्व के बाहर रहती हैं और जब वे '**सकल**' **शिव** के साथ होती हैं, तब वे विश्वात्मिका होती हैं। '**परा-शक्ति**' वे हैं, जो चैतन्य के साथ विश्रामावस्था में रहती हैं। इनको ही '**कादि-विद्या**' में '**महा-काली**' कहा जाता है और '**हादि-विद्या**' में '**महा-त्रिपुर-सुन्दरी**'।

'**नाद**' से जो '**विन्दु**' उत्पन्न होता है, वही **श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी** हैं अर्थात् **महा-त्रिपुर-सुन्दरी** '**नाद**' हैं और **श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी**-'**विन्दु**' हैं। जो '**शक्ति**' विश्वोत्तीर्णा हैं, वही **महा-त्रिपुर-सुन्दरी** हैं और जो विश्वात्मिका हैं, वे ही **श्रीबाला** हैं।

दूसरे प्रकार से विचार करें। उपनिषद् के अनुसार जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ताभिमानी '**विश्व**', '**तैजस**' और '**प्राज्ञ**' पुरुष हैं। इन त्रि-मात्राओं के दर्शन से पता चलता है कि शक्ति ही जगत्-रूप में अभिव्यक्त है। उनका एक और स्वरूप है, जो मनोहर जगत् से भी उत्कृष्ट है, किन्तु वह अनुच्चार्य है। यही उत्कृष्ट स्वरूप उनका नित्य स्वरूप है, जिसे '**अर्द्ध-मात्रा**' कहा जाता है। वाक्य द्वारा इसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

जब उक्त '**अर्द्ध-मात्रा**'-नित्य स्वरूप में त्रि-मात्रा का लय होता है, तब '**विन्दु**'-रूप प्रकट होता है। जिस '**विन्दु**' की अवस्थिति तो है, किन्तु विस्तृति नहीं-वह अंश **निर्गुण ब्रह्म** का द्योतक है और जिस '**विन्दु**' में विस्तृति भी है, वह अंश **सगुण ब्रह्म** की शक्ति का प्रकाशक है और यही शक्ति '**नाद**' है।

जो **निर्गुण ब्रह्म** के 'गुण' या 'शक्ति' को नहीं मानते, वे ही **ब्रह्म** से **माया** को पृथक् करते हैं, किन्तु हम लोग तो **माया** को देखकर ही **ब्रह्म** को समझते हैं। जिसकी अवस्थिति है, उसकी कुछ-न-कुछ विस्तृति होगी ही क्योंकि '**विन्दु**' समष्टि पदार्थ है। इसलिए '**विन्दु**'-रूप निर्गुण है और '**नाद**'-रूप सगुण है, जो **त्रि-मात्रा**-रूप से जगत्-रूप में अभिव्यक्त है। इस प्रकार वे **त्रि-मात्रा**-रूप में जगज्जननी और **अर्द्ध-मात्रा** रूप में परा जननी हैं। इसी से यह सिद्धान्त निकलता है कि '**नाद**' को '**विन्दु**' में युक्त करना चाहिए।

उक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि **महा-त्रिपुर-सुन्दरी** से **श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी** को युक्त समझना आवश्यक है। वास्तव में नामान्तर से दो भेद 'शक्ति' के प्रतीत होते हैं, जो वस्तुतः एक ही हैं, कोई भेद नहीं है। जो '**नाद**' है, वही '**विन्दु**' है। जो '**महा-त्रिपुर-सुन्दरी**' हैं, वही '**श्रीबाला**' हैं।

❒❒❒

साधना-क्रम

[१]

श्रीबाला-गायत्री 'जप'-विधि

(१) ताम्र-पात्र (पञ्च-पात्र) में लाल चन्दन, दूर्वा (दूब) से युक्त 'जल' रक्खे । दाएँ हाथ में पञ्च-पात्र की आचमनी द्वारा 'जल' लेकर, सङ्कल्प पढ़कर 'जल' छोड़े–

ॐ तत् सत् । अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे, श्रीश्वेत-वराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे अमुक-प्रदेशान्तर्गते, अमुक पुण्य-क्षेत्रे, कलि-युगे, कलि-प्रथम-चरणे, अमुक-नाम-सम्वत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रोत्पन्नो, अमुक-नाम-शर्माऽहं (वर्माऽहं, दासोऽहं वा) श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थे स्नानं करिष्ये ।

(२) फिर '**प्राणायाम**' करे । तदनन्तर १. हृदय, २. शिर, ३. शिखा, ४. दोनों भुजा-मध्य, ५. नेत्र-त्रय और ६. करतल–इन छः अङ्गों का विधि-वत् स्पर्श करते हुए '**षडङ्ग-न्यास**' करे । यथा–

ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा । ॐ सौः शिखायै वषट् । ॐ ऐं कवचाय हुम् । ॐ क्लीं नेत्र-त्रयाय वौषट् । ॐ सौः अस्त्राय फट् ।

(३) तब, स्नान करने के लिए एकत्रित जल में '**अंकुश**'-मुद्रा द्वारा '**सूर्य**'-मण्डल से तीर्थों का आवाहन करे–

ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति!
नर्मदे सिन्धु कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

'**वं**' से धेनु-मुद्रा द्वारा स्नानीय जल का **अमृतीकरण**, '**हुं**' से '**अवगुण्ठन**' और '**फट्**' से उसका **संरक्षण** करे । फिर '**सूर्य**' को बारह जलाञ्जलियाँ देकर, '**इष्ट-देवता**' के चरणों से उस जल को निकला हुआ मानकर उससे '**स्नान**' करे ।

(४) 'स्नान' कर, '**सन्ध्योपासन**' करे । पहले पञ्च-पात्र के जल से तीन बार निम्न मन्त्र पढ़कर **आचमन** करे–**ॐ आत्म-तत्त्वाय स्वाहा, ॐ विद्या-तत्त्वाय स्वाहा, ॐ शिव-तत्त्वाय स्वाहा ।**

(५) तदनन्तर, 'पञ्च-पात्र' के जल में उक्त '**ॐ गङ्गे च०**' मन्त्र से पूर्व-वत् तीर्थों का आवाहन करे, '**मूल-मन्त्र**' (**ऐं क्लीं सौः**) अथवा '**ॐ श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः**' से कुशाग्र-भाग (तर्जनी-मध्यमा-अनामा के सम्मिलित अग्र-भाग से) द्वारा तीन बार भूमि पर 'जल' छिड़क कर, उस 'जल' से आठ बार अपने **मूर्धा का अभिसिञ्चन** करे ।

(६) तब, पुनः षडङ्ग-न्यास कर बाँएँ हाथ में जल ले और दाएँ हाथ से ढँक कर '**हं यं रं लं वं**' से तीन बार उसे अभिमन्त्रित करे । फिर '**ऐं -क्लीं-सौः**' अथवा '**ॐ श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः**' का उच्चारण करते हुए, टपकते हुए जल-विन्दुओं से '**तत्त्व**'-मुद्रा द्वारा अपने सिर पर सात बार '**अभ्युक्षण**' करे ।

शेष 'जल' को दाहिने हाथ में लेकर तेजो-रूप में '**ध्यान**' करे। उसे '**इड़ा**'-**नाड़ी** से आकृष्ट कर उसके द्वारा देह के भीतर स्थित कृष्ण-वर्ण के 'पाप' को धोकर, उस 'जल' को पाप-रूप 'ध्यान' कर '**पिङ्गला-नाड़ी** से निकाले और अपने सम्मुख 'मन' द्वारा कल्पित वज्र-शिला पर '**फट्**' से उस पाप-रूप 'जल' को पटक दे।

(७) इसके बाद हाथ-पैर धोकर 'पञ्च-पात्र' के 'जल' से '**आचमन**' करे।

(८) तब '**ॐ घृणिः सूर्य आदित्याय इदमर्घ्यं स्वाहा**' मन्त्र पढ़कर '**सूर्य को अर्घ्य**' दे। '**सूर्य-मण्डल**' **में देवी बाला का** '**ध्यान**' कर उन्हें 'नमस्कार' करे–

ॐ सूर्य-मण्डलस्थायै श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः ।

(९) **देवी-बाला** को नमस्कार करने के बाद '**श्रीबाला-गायत्री**' से तीन बार जल छोड़कर '**तर्पण**' करे। पुनः '**ॐ देवान् तर्पयामि नमः, ॐ ऋषीन् तर्पयामि नमः, ॐ पितॄन् तर्पयामि नमः, ॐ गुरुं तर्पयामि नमः, ॐ परम-गुरुं तर्पयामि नमः, ॐ परापर-गुरुं तर्पयामि नमः, ॐ परमेष्ठि-गुरुं तर्पयामि नमः, ॐ** (अथवा मूल मन्त्र) **श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरीं देवीं तर्पयामि नमः** से इन सबका तीन-तीन बार '**तर्पण**' करे। फिर '**ॐ श्रीबाला-आवरण-देवतास्तर्पयामि नमः**' से समस्त आवरण देवताओं का तर्पण करे।

(१०) इसके बाद सूखे वस्त्र पहनकर '**ॐ ह्रां ह्रूं सः मार्तण्ड-भैरवाय प्रकाश-शक्ति-सहिताय इदमर्घ्यं स्वाहा**' से सूर्य भगवान् को पुनः अर्घ्य देकर '**सूर्य-मण्डल**' में गायत्री का ध्यान करे। यथा–

श्याम-वर्णां चतुर्भुजां, शङ्ख-चक्र-लसत्कराम् ।
गदा-पद्म-धरां देवीं, सूर्यासन-कृताश्रयाम् ।।

(११) फिर **श्रीबाला-गायत्री** का ३, ११ या १०८ बार '**जप**' करे–

ऐं बालायै विद्महे क्लीं त्रिपुरायै धीमहि, सौः तन्नः सुन्दरी प्रचोदयात् ।

अथवा

ऐं वागीश्वरि विद्महे क्लीं कामेश्वरि धीमहि, सौः तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ।

अथवा

क्लीं त्रिपुरा-देवि! विद्महे कामेश्वरि! धीमहि, तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात् ।

उक्त तीन '**गायत्री-मन्त्र**' में से किसी एक '**गायत्री-मन्त्र**' का जप करे।

(१२) '**जप**' करने के बाद, **सूर्य-मण्डल-स्थित देवी बाला** को **मानसिक प्रणाम** करे। 'भावना' द्वारा उनके दाहिने हाथ में आचमनी से 'जल' देकर '**जप**'-**समर्पण** करे। अन्त में, पुनः '**मानसिक प्रणाम**' करे।

विशेष : मुद्राओं की जानकारी हेतु देखिए '**मुद्राएँ एवं उपचार**' मूल्य रु०१५-०० । **सन्ध्योपासन** की दूसरी विधि **श्रीबाला-नित्यार्चन,** मूल्य रु० ३०-०० में प्रकाशित है। इच्छुक बन्धु चाहें तो उस विधि के द्वारा भी **श्रीबाला-गायत्री की साधना** कर सकते हैं।

❒❒❒

[२]

श्रीबाला त्रिपुरा मातृका-साधना

किसी देवता का यजन करने से पूर्व शास्त्र यह आज्ञा देता है कि प्रथम उस देवता के स्वरूप बनो, पश्चात् यजन करो। ठीक भी है। यदि भाँग पीनेवाले से दोस्ती करनी है, तो प्रथम भाँग पीना-सीखना आवश्यक है, जिससे मैत्री शीघ्र व स्थायी हो सके। अन्यथा मैत्री का होना असम्भव है। उपासना करने में भी मानव का प्रधान लक्ष्य देवताओं से मैत्री करने का ही है। अतः देवता की साधना करने के लिए यह आवश्यक है कि स्वयं 'देव-स्वरूप' बने। इसीलिए शास्त्रों में लिखा है-**'देवो भूत्वा यजेत् देवं, नादेवो देवम् अर्चयेत्।'**

इसी सिद्धान्त को ध्यान में रखकर, प्रत्येक सम्प्रदाय के प्रवर्तकों ने, अपने अनुयायी-वर्ग को 'देव-स्वरूप' बनाने की प्रथम व्यवस्था की है। 'तन्त्र-कारों' ने भी '**देवत्व**' की प्राप्ति हेतु सुलभ साधनों को खोजकर उनका उपदेश किया है। इन साधनों में पहला साधन '**न्यास**' है। '**न्यास**' का सीधा-सा अर्थ होता है-रखना या स्थापित करना। अतः जिस देवता की शक्तियों का आप न्यास करेंगे, बस, आपकी आत्मा उस तत्त्व से युक्त हो जाएगी।

न्यासों में '**मातृका-न्यास**' प्रमुख है। लिखा भी है-'**उपास्या मातृका देवी, यद्वा भूत-लिपिः परा।**'

'**मातृका-न्यास**' शुद्ध-विन्दु-युक्त, विसर्ग-सहितादि भेद से अनेक प्रकार का होता है। प्रारम्भिक अवस्था में साधक सभी '**मातृका-न्यास**' नहीं कर सकता। अतः प्रारम्भ में साधकों को केवल अपने देवता की '**मातृकाओं**' का न्यास करना चाहिए। यहाँ '**बाला त्रिपुरा मातृका**' का वर्णन 'श्रीश्रीविद्यार्णव तन्त्र' के अनुसार किया जा रहा है-

कामिनी मोदिनी चैव, मदनोन्मादिनी ततः।
द्राविणी खेचरी चैव, घण्टिका च कलावती॥
क्लेदिनी शिव-दूती च, ततश्च सुभगा भगा।
विद्येशी च महा-लक्ष्मी, कौलिनी च सुरेश्वरी॥
स्वराणां शक्तयः प्रोक्तास्ततश्च कुल-मालिनी।
व्यापिनी च भगा चैव, वागीशी तदनन्तरम्॥
वषट्-कारी पिङ्गला च, भग-सर्पिण्यतः परम्।
सुन्दरी च ततो नील-पताका त्रिपुरा ततः॥
सिद्धेश्वरी ह्यमोघा च, रत्न-मालिन्यतः परम्।
मङ्गला भग-माला च, नित्या रौद्री ततः परम्॥
व्योमेश्वरी अम्बिका चाप्यट्टहासा ततः परम्।
आप्यायिनी च वज्रेशी, क्षोभिणी शाम्भवी तथा॥
स्तम्भिनी चाप्यनामा च, रक्ता शुक्लाऽपराजिता।

सम्वर्तिका च विमला, अघोरा घोरया युता ।।
बिम्बादि-भैरवी चैव, सर्वाकर्षिणिका तथा ।
एता पञ्चाशदाख्याता, पञ्चाशद्-वर्ण-विग्रहा ।।

अर्थात्–१. कामिनी, २. मोदिनी, ३. मदना, ४. उन्मादिनी, ५. द्राविणी, ६. खेचरी, ७. घण्टिका, ८. कलावती, ९. क्लेदिनी, १०. शिव-दूती, ११. सुभगा, १२. भगा, १३. विद्येशी, १४. महा-लक्ष्मी, १५. कौलिनी, १६. सुरेश्वरी, १७. व्यापिनी, १८. भगा, १९. वागीशी, २०. वषट्-कारी, २१. पिङ्गला, २२. भग-सर्पिणी, २३. सुन्दरी, २४. नील-पताका, २५. त्रिपुरा, २६. सिद्धेश्वरी, २७. अमोघा, २८. रत्न-मालिनी, २९. मङ्गला, ३०. भग-माला, ३१. नित्या, ३२. रौद्री, ३३. व्योमेश्वरी, ३४. अम्बिका, ३५. अट्टहासा, ३६. आप्यायिनी, ३७. वज्रेशी, ३८. क्षोभिणी, ३९. शाम्भवी, ४०. स्तम्भिनी, ४१. अनामा, ४२. रक्ता, ४३. शुक्ला, ४४. अपराजिता, ४५. सम्वर्तिका, ४६. विमला, ४७. अघोरा, ४८. घोरा, ४९. बिम्ब-भैरवी, ५०. सर्वाकर्षिणी ।

पञ्चाशत् शुद्ध मातृका के साथ मातृका-स्थलों पर, उक्त मातृकाओं का न्यास करने से साधक 'बाला-स्वरूप' हो जाता है तथा उसके पश्चात् जितने भी न्यास किए जाएँगे, वे सब भगवती बाला के न्यास-वत् यौग-वाही हो जाएँगे । यथा–

अं कामिन्यै नमः ललाटे । आं मोदिन्यै नमः मुख-वृत्ते । इं मदनायै नमः दक्ष नेत्रे । ईं उन्मादिन्यै नमः वाम नेत्रे । उं द्राविण्यै नमः दक्ष कर्णे । ऊं खेचर्यै नमः वाम कर्णे । ऋं घण्टिकायै नमः दक्ष नासायाम् । ॠं कलावत्यै नमः वाम नासायाम् । ऌं क्लेदिन्यै नमः दक्ष गण्डे । ॡं शिव-दूत्यै नमः वाम गण्डे । एं सुभगायै नमः ऊर्ध्व ओष्ठे । ऐं भगायै नमः अधो ओष्ठे । ओं विद्येश्यै नमः ऊर्ध्व दन्त-पंक्तौ । औं महा-लक्ष्म्यै नमः अधो दन्त-पंक्तौ । अं कौलिन्यै नमः शिरसि । अः सुरेश्वर्यै नमः मुखे ।

कं व्यापिन्यै नमः दक्ष बाहु-मूले । खं भगायै नमः दक्ष कूर्परे । गं वागीश्यै नमः दक्ष मणि-बन्धे । घं वषट्-कार्यै नमः दक्ष कर-तले । ङं पिङ्गलायै नमः दक्ष कराग्रे । चं भग-सर्पिण्यै नमः वाम बाहु-मूले । छं सुन्दर्यै नमः वाम कूर्परे । जं नील-पताकायै नमः वाम मणि-बन्धे । झं त्रिपुरायै नमः वाम कर-तले । ञं सिद्धेश्वर्यै नमः वाम कराग्रे । टं अमोघायै नमः दक्षोरु-मूले । ठं रत्न-मालिन्यै नमः दक्ष जानुनि । डं मङ्गलायै नमः दक्ष गुल्फे । ढं भग-मालायै नमः दक्ष पाद-तले । णं नित्यायै नमः दक्ष पादाग्रे । तं रौद्र्यै नमः वामोरुं-मूले । थं व्योमेश्वर्यै नमः वाम जानुनि । दं अम्बिकायै नमः वाम गुल्फे । धं अट्टहासायै नमः वाम पाद-तले । नं आप्यायिन्यै नमः वाम पादाग्रे । पं वज्रेश्यै नमः दक्ष पार्श्वे । फं क्षोभिण्यै नमः वाम पार्श्वे । बं शाम्भव्यै नमः पृष्ठे । भं स्तम्भिन्यै नमः नाभौ । मं अनामायै नमः जठरे । यं रक्तायै त्वगात्मने नमः हृदि । रं शुक्लायै असृगात्मने नमः दक्षांशे । लं अपराजितायै मांसात्मने नमः ककुदि । वं सम्वर्तिकायै मेदात्मने नमः वामांशे । शं विमलायै अस्थ्यात्मने नमः हृदादि दक्ष करांगुल्यन्तम् । षं अघोरायै मज्जात्मने नमः हृदादि वाम करांगुल्यन्तम् । सं घोरायै शुक्रात्मने नमः नाभ्यादि दक्ष पादान्तम् । हं बिम्ब-भैरव्यै जीवात्मने नमः नाभ्यादि वाम पादान्तम् । ळं सर्वाकर्षिण्यै परमात्मने नमः हृदादि कुक्षौ।

❒❒❒

'त्रिपुरा' के बीजों की सरल साधना

('कौलावली निर्णय' के अनुसार)

'कौलावली निर्णय' में 'त्रिपुरा' के बीजों की सरल साधना इस प्रकार वर्णित है–

साधक शुक्ल वस्त्र पहन कर, श्वेत गन्धादि से भूषित होकर, शुक्ल पुष्प–माला धारण कर, श्वेत आसन पर बैठकर, शुक्ल पुष्पों और श्वेत रङ्ग के नैवेद्य से, जो लड्डू, खीर, दुग्ध, नाना प्रकार के अन्नों, शर्करा, नाना प्रकार के फलों से युक्त हो, **'वाग्भव-बीज'** (ऐं) की साधना करे। **'वागीश्वरी'** का ध्यान करते हुए साधक **'वाग्भव-बीज'** का जप करे। **ध्यान यह है–**

कर्पूर-धवलां शुभ्र-पुष्पाभरण-भूषिताम् । अत्यन्त-शुभ्र-वसनां, वज्र-मौक्तिक-भूषणाम् ।।
मुक्ता-फल-समुद्भूत-जप-माला-लसत्-कराम् । पुस्तकं वर-दानं च, दधतीमभय-प्रदाम् ।।

इस प्रकार ध्यान कर 'वागीश्वरी' का यथा-विधि पूजन करे। फिर यह भावना करे कि **वागीश्वरी** मूलाधार से ब्रह्म–रन्ध्र–पर्यन्त पीयूष–वर्षा करती हुई, ज्योतिर्मयी होकर जिह्वाग्र में स्थित हैं। यह भावना करता हुआ साधक पुरश्चरण की संख्या (तीन लाख) के अनुसार **'वाग्भव-बीज'** का जप करे। इस साधना से अत्यन्त मूर्ख और जड़ व्यक्ति भी, जो एक पद तक शुद्धता-पूर्वक न बोल सकता हो, वृहस्पति के समान वाग्मी और विद्वान् हो जाता है।

'काम-बीज' (क्लीं) की साधना रक्त मन्दिर में स्थित होकर, रक्त–वस्त्र, रक्तालङ्कार और लाल चन्दनादि से भूषित हो, नाना प्रकार के लाल पुष्पों तथा विविध प्रकार के लाल रङ्ग के नैवेद्यों से करनी चाहिए। **'कामेश्वरी'** का ध्यान करते हुए साधक **'काम-बीज'** (क्लीं) का जप करे। **ध्यान यह है–**

मूलादि-ब्रह्म-रन्ध्रान्तं, स्फुरद्-दीप्ति-स्वरूपिणीम् । बन्धूक-कुसुमाकार-कान्ति-भूषण-भूषिताम् ।।
इक्षु-कोदण्ड-पुष्पेषु, वराभय-लसत्-कराम् । उद्-दीप्त-कान्ति-सिन्दूर-भाल-त्रिनयनान्विताम् ।।

इस प्रकार ध्यान कर **'कामेश्वरी'** का यथा-विधि पूजन करे। तदनन्तर पुरश्चरण की संख्या (तीन लाख) के अनुसार **'काम-बीज'** का जप करे। इस साधना के फल–स्वरूप त्रैलोक्य क्षण भर में वशीभूत होता है और साधक साक्षात् 'कामदेव' के समान जगत् में शोभायमान होता है।

'शक्ति-बीज' (सौः) की साधना में साधक को स्व–शरीर में मूलाधार से ब्रह्म–रन्ध्र तक व्याप्त 'शक्तीश्वरी' का ध्यान निम्न प्रकार करना होता है–

स्रवत्-पीयूष-धाराऽभिवर्षन्तीं विष-हारिणीम् । हेम-प्रभा-भासमानां, विद्युल्लता-सम-प्रभाम् ।।
स्फुरच्चन्द्र-कला-पूर्ण-कपालं वरदाभये । ज्ञान-मुद्रां च दधतीं, साक्षादमृत-रूपिणीम् ।।

इस प्रकार ध्यान कर सुवर्ण रङ्ग के उपचारों से पूजन कर पूर्व-वत् पुरश्चरण की संख्या (तीन लाख) के अनुसार 'शक्ति-बीज' (सौः) का जप करे। इससे साधक नाना प्रकार के विघ्नों, भूत-प्रेतादि बाधाओं

और व्याधियों का अति शीघ्र नाश करने में समर्थ होता है ।

जो साधक उक्त **त्रि-कूट-मयी भगवती त्रिपुरा** का 'नाभि-मण्डल-हृत्-पद्म-मुख-मण्डल-मध्यगा पद्म-राग-मणि-स्वच्छा' परिपूर्णा-रूप में ध्यान करता हुआ साधना में तत्पर होता है, वह आठ गुना अधिक ऐश्वर्यवान् होता है । '**मातृ-चक्र**' उसके शरीर में ही होता है, जिसके प्रताप से वह पुत्रवान्, धनवान्, धीर होकर सुखी होता है ।

पूर्ण-विद्या अर्थात् पूरे मन्त्र के जप से सभी प्राणी साधक के वशीभूत होते हैं । '**वाग्भव**' से 'वाक्-पतित्व' प्राप्त होता है, '**काम-बीज**' से 'कामदेव-समान' होता है और '**शक्ति-बीज**' से 'शिवत्व' प्राप्त होता है । **कूट-त्रय (ऐं क्लीं सौः)** के जप से 'सर्व-सिद्धि' होती है ।

❒❒❒

त्र्यक्षरी मन्त्र की साधना

क-मन्त्र-उद्धार

भगवती बाला के '**त्र्यक्षर मन्त्र**' (ऐं क्लीं सौः) का उद्धार 'मन्त्र-महोदधि' में इस प्रकार दिया है-

दामोदरश्चन्द्र-युतः, आद्यं वाग्-वीजमीरितम् ।
विधिर्वासव-शान्तीन्दु-युक्तं कामाभिदं परम् ।
सङ्कर्षण-विसर्गाढ्यो, भृगुस्तार्तीयमीरितम् ।
त्रि-बीजा गदिता बाला, जगत्-त्रितय-मोहिनी ।।

अर्थात्-दामोदर='ऐ'-कार, चन्द्र-युक्त=अनुस्वार से युक्त-यह 'त्र्यक्षरी' का पहला बीज (**ऐं-वाग्-वीज**) है । विधि='क'-कार, वासव='ल'-कार, शान्ति='ई'-कार और इन्दु=चन्द्रमा=अनुस्वार-यह 'त्र्यक्षरी' का दूसरा वीज (**क्लीं-काम-वीज**) है । सङ्कर्षण=औकार, विसर्गाढ्यः=विसर्ग से युक्त, भृगुः='स'-कार-यह 'त्र्यक्षरी' का तीसरा वीज (**सौः-शक्ति-वीज**) है । यह त्रि-वीजा (**ऐं क्लीं सौः**)-तीन बीजाक्षरोंवाली **बाला-विद्या** जगत्-त्रय को मोहित करनेवाली है ।

'मन्त्र-कोष' में '**त्र्यक्षरी**' मन्त्र का उद्धार इस प्रकार है-

अधरो बिन्दुमानाद्यं, ब्रह्मेन्द्रस्थः शशि-युतः द्वितीयं । भृगु-सर्गाढ्यो मनुस्तार्ती समीरितः ।।
एषा बालेति विख्याता, त्रैलोक्य-वश-कारिणी ।

अर्थात्-अधर (ऐ-कार) बिन्दु-योग द्वारा प्रथम बीज '**ऐं**' होता है । ब्रह्म (क) के द्वारा इन्द्र (ल) से और शशि (ई) से योग करके बिन्दु देने पर '**क्लीं**' द्वितीय बीज होता है । भृगु (स) से मनु (औ) से योग करके विसर्ग देने पर तृतीय बीज '**सौः**' होता है । यह **त्रैलोक्य-वश-कारिणी बाला विद्या** विख्यात है ।

'ज्ञानार्णव तन्त्र' में इस '**त्र्यक्षरी मन्त्र**' का उद्धार इस प्रकार दिया है-

सूर्य-स्वरं समुच्चार्य, विन्दु-नाद-कलान्वितं । स्वरान्त-पृथिवी-संस्थं , तूर्य-स्वर-समन्वितम् ।।
विन्दु-नाद-कला-क्रान्तं, सर्ग-वान् भृगुरव्ययः । शक्र-स्वर-समायुक्ता, विद्येयं त्र्यक्षरी मता ।।

अर्थात्-सूर्याक्षर, द्वादश स्वर 'ऐ'-कार विन्दु-युक्त प्रथम बीज '**ऐं**' है । स्वर-वर्ण के परवर्ती वर्ण 'क'-कार में पृथ्वी (ल) का प्रयोग करके 'ई' और विन्दु देने पर द्वितीय वीज '**क्लीं**' होता है । शक्र स्वर 'औ'-कार, भृगु (स) और विन्दु एवं विसर्ग के देने पर '**सौः**' होता है । अर्थात् '**ऐं क्लीं सौः**' इस '**त्र्यक्षर मन्त्र**' से भी **त्रिपुरा बाला** की आराधना की जाती है । विसर्ग और बिन्दु-संयुक्त यह -'**त्र्यक्षरी मन्त्र**' 'शाप-ग्रस्त' है ।

'त्रिपुरा-सार-समुच्चय' में **बाला माता** के मूल-मन्त्र '**त्र्यक्षरी**' के विषय में इस प्रकार लिखा है-

अथ त्रि-लोकार्चित-शासनाया, वक्ष्यामि बीज-त्रयमम्बिकायाः ।
गोप्तव्यमेतत् कुल-धर्म्मविद्भिरमुष्य-हेतोर्निज-सिद्धये च ।।१

अर्थात् तीनों लोकों द्वारा अर्चिता शासिका के तीनों बीजों को बताऊँगा । कुल-धर्म के जाननेवालों को कुल-रक्षा एवं अभीष्ट-सिद्धि के लिए उन्हें गुप्त रखना चाहिए ।।१

कान्तादि-भूत-पदगं क-गतार्द्ध-चन्द्रम् , दन्तान्त-पूर्व-जलधि-स्थित-वर्ण-युक्तम् ।
एतज्जपन् नर-वरो भुवि वाग्भवाख्यं, वाचां सुधा-रस-मुचां लभते स सिद्धिम् ।।२

पहले वीज का उद्धार करते हैं–'**कान्तादि-भूत-पदगं**' अर्थात् क-कार अन्त में है जिसके, उस विसर्ग '**अः**' का आदि-भूत पद='अ'। '**दन्तान्त-पूर्व**' अर्थात् 'दन्त'=ओ, उसके अन्त में आनेवाला 'औ' उससे पहले– '**जलधि-स्थित-वर्ण**' अर्थात् विलोम क्रम से चौथे स्थानवाला अक्षर–'ए'। इन 'अ' और 'ए' के मिलने से बना 'ऐ', उसे '**क-गतार्द्ध-चन्द्रं**' अर्थात् सिर पर अनुस्वार युक्त करने से '**वाग्भव**' नामक बीज 'ऐं' प्रस्तुत होता है, जिसे जपता हुआ श्रेष्ठ मनुष्य पृथ्वी पर अमृत रस बहानेवाली वाणी से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करता है।।२

कान्तान्तं कुल-पूर्व-पञ्चम-युतं नेत्रान्त-दन्तान्वितम् ।
कामाख्यं गदितं जपन् मनुरयं साक्षाज्जगत्-क्षोभ-कृत् ।।३

दूसरे बीज का उद्धार करते हैं–'**कान्तान्तं**' अर्थात् 'क'=विन्दु या 'अं' उसके अन्त में आनेवाला 'अः' और उसके बाद का अक्षर '**क**', '**कुल-पूर्व-पञ्चम-युतं**' अर्थात् 'कुल' या स-कार से पहले विलोम-क्रम से पाँचवें स्थान पर आनेवाला अक्षर '**ल**' से युक्त='**क्ल**'। '**नेत्रान्त-दन्तान्वितं**' अर्थात् 'नेत्र' या 'इ' के अन्त में आनेवाला स्वर 'ई', 'दन्त' या अनुस्वार से युक्त उसमें जोड़ें, तो 'काम' नामक यह मन्त्र '**क्लीं**' जपने से सारा संसार प्रत्यक्ष रूप से विचलित हो उठता है ।।३

दन्तान्तेनयुतं स-दन्ति-सकलं सम्मोहनाख्यं कुलम् ।
सिद्ध्यत्यस्य गुणाष्टकं खेचरता-सिद्धिश्च नित्यं जपात् ।।४

तीसरे बीज का उद्धार करते हैं–'**दन्तान्त**' अर्थात् 'औ' से युक्त दन्ती 'स' = 'सौ' को '**सकल**' अर्थात् विसर्ग-सहित–'**सौः**' का सदा जप करने से अष्ट-सिद्धि और खेचरी-सिद्धि प्राप्त होती है ।।४

ऋषिर्दक्षिणामूर्ति-संज्ञो महात्मा, भवेच्छन्द एतस्य मन्त्रस्य पंक्तिः ।
सरस्वत्यचिन्त्य-प्रभावा प्रदिष्टा, बुधैर्देवता देव-वृन्दार्चिताङ्घ्रीः ।।
अमुष्य मन्त्रस्य रदान्त-युक्तम्, बीजं स-दण्डं नकुलीश-पूर्वम् ।
शक्तिस्तु साखण्डल-कर्ण-पूर्व-सहार्ध-जैवातृकमाननान्तम् ।।५

उक्त त्र्यक्षर मन्त्र के ऋषि आदि बताते हैं–इस मन्त्र के ऋषि **दक्षिणामूर्ति** नामक महात्मा हैं। **छन्द पंक्ति** है। इस मन्त्र का **बीज** 'रद' या 'ओ' के अन्त में आनेवाला स्वर 'औ' से युक्त 'नकुलीश' या 'ह' से पूर्व आनेवाले व्यञ्जन 'स' अर्थात् 'सौ' को 'दन्त' या अनुस्वार लगाने से '**सौं**' बनता है। इस मन्त्र की **शक्ति** '**आखण्डल-कर्ण-पूर्व**' अर्थात् 'ल' में 'ई' को 'अर्द्ध-जैवातृक' या 'अर्द्ध-चन्द्र' के साथ 'आननान्त' या 'क' में लगाने से '**क्लीं**' बनता है। इस मन्त्र का वर्ण '**शुक्ल**' है और स्वर '**गान्धार**' है ।।५

उक्त '**त्र्यक्षरी मन्त्र**' का माहात्म्य लिखते हुए 'मन्त्र-महोदधि'-कार कहते हैं कि इस '**त्र्यक्षरी मन्त्र**' के जपने से उपासक विद्या में देव-गुरु 'वृहस्पति' के समान विद्वान् और धन-धान्य-सम्पत्ति में 'कुबेर' के समान हो जाता है।

✵✵

ख–'त्र्यक्षरी मन्त्र' के प्रत्येक वीज की साधना

'त्र्यक्षरी मन्त्र' के प्रत्येक बीज को 'एकाक्षर मन्त्र' मानकर भी उपासना की जाती है। **तीनों बीजाक्षर-मन्त्रों के ध्यान और** उपासना-विधि निम्न प्रकार है–

'ऐं' का ध्यान'

विद्याक्ष-माला-सुकपाल-मुद्रा-राजत्-करां कुन्द-समान-कान्तिम् ।
मुक्ता-फलालंकृति-शोभिताङ्गीं, बालां स्मरेद् वाङ्-मय-सिद्धि-हेतोः ।।
ध्यात्वैवं वाग्भवं लक्ष-त्रयं शुक्लाम्बरावृतः ।
शुक्ल-चन्दन-लिप्ताङ्गो, मौक्तिकाभरणान्वितः ।।
जपित्वा तद्दशांशेन, पालाश-कुसुमैर्नवैः ।
जुहुयात् मधुराक्तैर्यः, स कविर्युवती-प्रियः ।।

प्रथम वीज की उपासना हेतु उपासक को शुक्ल वस्त्र धारण कर, शुक्ल चन्दन और मोतियों के आभरणों से विभूषित होकर, **भगवती बाला** का उक्त प्रकार ध्यान कर प्रथम वाग्–भव बीज '**ऐं**' का तीन लाख जप करना चाहिए। जप के बाद मधु-युक्त पलाश (ढाक) पुष्पों से दशांश हवन करना चाहिए। जो ऐसा करता है, वह कवि और वनिता-प्रिय बनता है।

क्लीं का ध्यान

भजेत् कल्प-वृक्षाध उद्दीप्त-रत्नासने, सन्निषण्णां मदाघूर्णिताक्षीम् ।
करैर्बीज-पूरं कपालेषु-चापं, स-पाशांकुशां रक्त-वर्णं दधानाम् ।।
ध्यात्वा देवीं जपेल्लक्ष-त्रयं यो मध्य-वीजकम् ।
रक्त-वस्त्रावृतो रक्त-भूषणो रक्त-लेपनः ।।
दशांशं मालती-पुष्पैश्चन्द्र-चन्दन-लोलितैः ।
जुहुयात् तस्य वश्याः स्युस्त्रि-लोक-जनताः क्षणात् ।।

द्वितीय बीज की उपासना हेतु उपासक को रक्त वस्त्र पहन कर, रक्त-चन्दन और रक्त-पुष्पों से सु-सज्जित होकर, **भगवती बाला** का उक्त प्रकार ध्यान कर द्वितीय काम-वीज (**क्लीं**) का तीन लाख जप करना चाहिए। जप के बाद कर्पूर और चन्दन से मिश्रित मालती के पुष्पों से दशांश हवन करना चाहिए। जो ऐसा करता है, वह तीनों लोकों के लोगों को वश में कर लेता है।

'सौः' का ध्यान

व्याख्यान-मुद्रामृत-कुम्भ-विद्यामक्ष-स्रजं सन्दधतीं कराग्रैः ।
चिद्-रूपिणीं शारद-चन्द्र-कान्तिं, बालां स्मरेन्मौक्तिक-भूषिताङ्गीम् ।।
ध्यात्वैवं शक्ति-वीजं च, जपेल्लक्ष-त्रयं सुधीः ।
सित-वस्त्रानुलेपाढ्यामात्मनं देवतां स्मरेत् ।।

मालती-कुसुमैर्हुत्त्वा, चन्दनाक्तैर्दशांशतः ।
लक्ष्मीर्विद्या-सुकीर्ति-नामाधारो जायते चिरात् ।।

तृतीय वीज की उपासना हेतु उपासक को शुभ्र-वस्त्र पहन कर, शुक्ल चन्दन, माला से विभूषित होकर, **भगवती बाला** का उक्त प्रकार ध्यान कर तृतीय वीज (**सौः**) का तीन लाख जप करना चाहिए। जप के बाद चन्दन-मिश्रित मालती पुष्पों से दशांश हवन करना चाहिए। जो ऐसा करता है, वह चिर-काल तक संसार में लक्ष्मी, विद्या और कीर्ति का भाजन बन जाता है।

✱✱

ग-पुरश्चरण

बाला त्रिपुर-सुन्दरी के '**त्र्यक्षरी मन्त्र**' का **पुरश्चरण** करने के लिए **तीन लाख जप** करना चाहिए। जप के बाद, जप का दशांश हवन किंशुक पुष्प (ढाक के फूल) अथवा रक्त करवीर (लाल कनेर) के फूलों को मधु में मिलाकर करना चाहिए। यथा–

लक्ष-त्रयं जपेन्मन्त्रं, दशांशं किंशुकोद्भवैः । पुष्पैर्हयारिजैर्वाऽपि, जुहुयान्मधुरान्वितैः ।।

✱✱

घ-शापोद्धार, उत्कीलन, दीपन तथा गुरु-परम्परा

भगवती बाला की यह '**त्र्यक्षरी विद्या**' भगवान् सदा-शिव से कीलित की गई है। अतः इसका **शापोद्धार** और **उत्कीलन** कर तथा बीजाक्षरों का **दीपन** कर मन्त्र का जप करना चाहिए। **शापोद्धार, उत्कीलन एवं दीपन की विधि** इस प्रकार है–

योजयेद् आदिमे वीजे, वाराह-भृगु-पावकान् ।
मध्यमादौ नभो हंसो, मध्यमान्ते तु पावकम् ।।
आदाबन्ते च तार्तीये, क्रमाद्वै धूम-केतनम् ।
एवं जप्त्वा शतं विद्या, शाप-हीना फल-प्रदा ।।

बाला त्रिपुर-सुन्दरी के प्रथम **वाग्भव-वीज** के पहले वाराह= 'ह'-कार, भृगु= 'स'-कार, पावक= 'र'-कार जोड़कर उसे भैरवी-वीज (**ह्स्रैं**) बनाए। द्वितीय **काम-वीज** के पूर्व भी नभः= 'ह'-कार, हंसः= 'स'-कार जोड़कर द्वितीय भैरवी-वीज (**ह्स्क्लीं**) बना ले। पुनः तृतीय **शक्ति-बीज** के आगे भैरवी-बीज जोड़े (**ह्स्रौः**)। इस प्रकार '**त्र्यक्षरी मन्त्र**' के तीनों बाला-वीजों के आगे भैरवी के वीज लगाकर मन्त्र बनाना चाहिए। इस मन्त्र का एक सौ बार जप करने से '**बाला त्र्यक्षरी विद्या**' शाप-हीना होकर फल-प्रदा होती है।

'**शाप-मोचन' का द्वितीय प्रकार** भी है। यथा–दो बार 'वाग्'-बीज, पुनः 'शक्ति'-बीज, पुनः 'काम'-बीज दो बार, फिर 'वाग्-वीज', फिर दो बार 'शक्ति'-बीज और अन्त में 'काम'-बीज लगाने से 'बाला विद्या'

का 'नवाक्षर मन्त्र' (ऐं ऐं सौः क्लीं क्लीं ऐं सौः सौः क्लीं) बन जाता है । इस **'नवाक्षर मन्त्र'** का **१०८ बार (अष्टोत्तर-शत)** जप करने से 'शाप' की निवृत्ति हो जाती है । यथा–

आद्यमाद्यञ्च तार्तीयं, कामः कामोऽथ वाग्भवम् ।
अन्त्यमन्त्यमनङ्गश्च, नवार्णः कीर्तितो मनुः ।।
जप्तोऽयं शतधा शापं, बालाया विनिवर्तते ।

'चेतनी' और **'आह्लादिनी'** मन्त्रों के जपने से बाला **'त्र्यक्षरी विद्या'** का निष्कीलन हो जाता है ।

'चेतनी-मन्त्र' में तीन स्वर हैं अर्थात् अधरः=ऐं वाग् -वीज, शान्तिः='ई'-कार अनुस्वार के साथ, अनुग्रह=सानुस्वार 'औ'-कार । इस **'चेतनी-मन्त्र'** (**ऐं ईं औं**) के सौ बार जपने से **'निष्कीलन'** होता है ।

'काम'-बीज के आदि में तार=**'ॐ'-कार** और अन्त में हृदय=**'नमः'** जोड़ने से **'आह्लादिनी-मन्त्र' (ॐ क्लीं नमः)** बन जाता है । इस मन्त्र का **शत-बार** जप करने से **निष्कीलन** हो जाता है । यथा–

चेतना ह्लादिनी मन्त्रौ, जप्तौ निष्कीलिता करौ ।
त्रि-स्वराश्चेतनी मन्त्रोऽधरः शान्तिरनुग्रहः ।।
तारादि-हृदयान्तः स्यात्, काम आह्लादिनी मनुः ।

'त्र्यक्षरी विद्या' के तीनों वीजों का **दीपन** तीन मन्त्रों से होता है । प्रथम **'वाग्'-वीज का 'दीपनी मन्त्र'–'ॐ वद वद वाग्वादिनि ऐं'** है । द्वितीय **'काम'**-वीज का–**'ॐ क्लिन्ने क्लेदिनि महा-क्षोभं कुरु क्लीं'** है तथा तृतीय **'शक्ति'-वीज** का 'दीपनी मन्त्र'–**'ॐ सौः मोक्षं कुरु'** है । इन **'दीपनी मन्त्रों'** का जप किए बिना **बाला 'त्र्यक्षरी विद्या'** का मन्त्र फल-प्रद नहीं होता । **'त्र्यक्षरी विद्या'** के इस रहस्य को कृतघ्न और शठ पुरुषों को कभी न बताना चाहिए । यथा–

तथा त्रयाणां वीजानां, दीपनैर्मनुभिस्त्रिभिः । सु-दीप्तानि विधायादौ, जपेत्तानीष्ट-सिद्धये ।।
वद युग्मं सदीर्घाम्बु, स्मृति बाला वनन्तगौ । सत्यः स-नेत्रो नस्तादृक्, वाङ् नवार्णाद्य-दीपिनी ।।
क्लिन्ने क्लेदिनि वैकुण्ठो, दीर्घ-खं सद्यगोऽन्तिमः । निद्रा स-चन्द्रा कुर्वन्ता, शिवार्णा मध्य-दीपिनी ।।
तारो मोक्षं च कुर्वन्ता, पञ्चार्णाऽन्त्यस्य दीपिनी । दीपिनीमन्तरा बालाऽऽराधिताऽपि न सिद्धिदा ।।
इदं रहस्यं नाख्येयं, कृतघ्न-कितवे शठे । परीक्षिताय दातव्यं, अन्यथा दातृ-दोषदम् ।।

बाला 'त्र्यक्षरी मन्त्र' की गुरु-परम्परा निम्न प्रकार है–

दिव्यौघ गुरु–**१. प्रकाशानन्द-नाथ, २. परमेशानन्द-नाथ, ३. पर-शिवानन्द-नाथ, ४. कामेश्वरानन्द-नाथ, ५. मोक्षानन्द-नाथ, ६. कामानन्द-नाथ** और **७. अमृतानन्द-नाथ ।**

सिद्धौघ गुरु–**१. ईशानानन्द-नाथ, २. तत्पुरुषानन्द-नाथ, ३. अघोरानन्द-नाथ, ४. वामदेवानन्द-नाथ** और **५. सद्योजातानन्द-नाथ ।**

मानवौघ गुरु–**१. गगनानन्द-नाथ, २. विश्वानन्द-नाथ, ३. विमलानन्द-नाथ, ४. मदनानन्द-नाथ, ५. आत्मानन्द-नाथ, ६. प्रियानन्द-नाथ ।**

गुरु-चतुष्टय–१. गुरु, २. परम गुरु, ३. परात्पर गुरु और ४. परमेष्ठि-गुरु (अपने गुरु-देव के सम्प्रदायानुसार) ।

✱✱

च-हवन

बाला 'त्र्यक्षरी मन्त्र' की साधना में प्रति-दिन त्रि-मधु-युक्त निर्दोष रक्त **'पद्म'** द्वारा होम कर ब्राह्मण साधकों को भोजन कराए। सु-वासिनी स्त्रियों को जगदम्बा-स्वरूप समझते हुए उनका पूजन कर उन्हें प्रसन्न करे। इस प्रकार होमादि के समाप्त होने पर अपने गुरु-देव को धन-धान्यादि द्वारा सन्तुष्ट करे।

उक्त विधि से अनुष्ठान करने पर जगत् वशीभूत होता है। साधक पर लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और वह सभी प्रकार के वैभव से युक्त होता है, इसमें संशय नहीं।

त्रि-मधु-समन्वित रक्त 'उत्पल', रक्त-वर्ण 'करवीर' पुष्प अथवा घृताक्त **'परमान्न'** द्वारा होम करके अखिल जगत् को वशीभूत किया जा सकता है। **'पलाश पुष्प'** द्वारा होम करने पर साधक 'वाक्'-सिद्धि को प्राप्त करता है। **'कर्पूर'** और **'अगरु'**-संयुक्त **'गुग्गुल'** द्वारा होम करने पर साधक 'दिव्य-ज्ञान' को प्राप्त करता है, कवित्व-शक्ति उसमें उत्पन्न हो जाती है। **'दुग्ध'** के साथ **'गुडूची-खण्ड'** द्वारा होम करने पर सकल प्रकार की अप-मृत्यु दूर होती है। **'दूर्वा'** द्वारा त्रि-दिन हवन करने पर दीर्घ जीवन का लाभ होता है। **'गिरिकर्णि पुष्प'** द्वारा 'ब्राह्मण' को, **'कल्लार पुष्प'** द्वारा 'राज-वृन्द' को, **'मालती कुसुम'** द्वारा 'राज-पुत्र-गण' को, **'पीतझिण्टी पुष्प'** द्वारा 'वैश्य-गण' को, **'पाटल पुष्प'** द्वारा हवन कर 'शूद्र' को वशीभूत किया जा सकता है।

मन्त्र के मध्य में अनुलोम-विलोम से साध्य का नाम युक्त कर मन्त्र का उच्चारण करते हुए **त्रि-मधु-समन्वित जाती पुष्प, विल्व पुष्प, जाती-फल, विल्व-फल** द्वारा हवन करने पर नर-नारी और नरपति सकल को वश में किया जा सकता है, इसमें सन्देह नहीं।

चन्दनाक्त 'मालती' और **'वकुल'** पुष्प द्वारा हवन करने पर साधक एक वर्ष में 'कवित्व-शक्ति' को प्राप्त करता है। **त्रि-मधु-युक्त 'विल्व-फल'** द्वारा हवन करने पर समस्त लोक का वशीकरण एवं वाञ्छित सम्पदा का लाभ होता है। जो व्यक्ति **'पाटल'** पुष्प, **'कुन्द'** पुष्प, **'उत्पल'**, **'नागकेशर'**, **'चम्पक'** द्वारा हवन करता है, वह एक वर्ष में ऐश्वर्य-बल से परिपूर्ण होता है। **'घृताक्त अन्न'** द्वारा हवन करने पर अन्न-समृद्धि का लाभ किया जा सकता है। जो व्यक्ति इन्द्रिय-संयम करके **'कस्तूरी'** और **'कुंकुम'** एकत्र करके **कर्पूर** द्वारा हवन करता है, वह कन्दर्प की भी अपेक्षा अधिक सौन्दर्य-सम्पन्न होता है। जो साधक **घृत, दग्धि, दुग्ध-मिश्रित 'लाजा'** द्वारा हवन करता है, वह निखिल रोग से मुक्त होकर शत वर्ष जीवित रहता है।

हवन के पश्चात् अर्द्ध-भाग **चन्दन**, चतुर्थांश **कुंकुम** एवं **गोरोचन**-इन तीन वस्तुओं को शीतल जल से मिलाकर उससे ललाट में **'तिलक'** धारण करने से सारा विश्व वशीभूत होता है। इसी प्रकार **कर्पूर, गाँठियाला** और **कृष्ण-शटी** सम परिमाण में लेकर, उसके चार भाग **जटामांसी**, चार भाग **गोरोचन**, सात भाग **कुंकुम**, दो भाग **चन्दन**-ये सब वस्तुएँ मिश्रित करके शीतल जल में किसी कन्या से पिसवा ले। इस द्रव्य को मन्त्र-पूत कर उससे **'तिलक'** करे, तो सभी प्राणी वशीभूत होते हैं।

❑❑❑

[५]

श्री त्रिपुरा लघु-स्तव-राज-विधान

सृष्टि के आरम्भ में **ब्रह्म-सत्ता** स्वतः चेतन होकर प्रथम '**ज्ञान-शक्ति**' को उत्पन्न करती है। तदनन्तर '**इच्छा-शक्ति**' प्रगट होती है और **ब्रह्म-सत्ता** इच्छा करती है कि मैं एक-रूपा अनेक रूपों में परिणत हो जाऊँ। फिर '**क्रिया-शक्ति**' प्रकट होती है और **ब्रह्म-सत्ता** सृष्टि की रचना प्रारम्भ करती है। इस प्रकार **ब्रह्म-सत्ता**–**१. ज्ञान, २. इच्छा** और **३. क्रिया**–इन तीन रूपों में प्रगट होकर संसार को रचती है। '**ज्ञान**'– 'चित् -शक्ति', '**इच्छा**' को 'आनन्द-शक्ति' और '**क्रिया**' को 'सत्-शक्ति' कहते हैं। अतएव '**ब्रह्म-सत्ता**' का नाम–'**सच्चिदानन्द**' भी है।

वेदान्त में इस '**ब्रह्म-सत्ता**' को '**धर्मी**' और इसके स्वाभाविक धर्म–ज्ञान, इच्छा और क्रिया के समष्टि-रूप को '**ब्रह्म-धर्म**' कहा गया है। उपनिषदों का यह स्पष्ट सिद्धान्त है कि '**ब्रह्म-धर्म**' न तो जड़ वस्तु है और न ही सजीव, अपितु **चित्-स्वरूप** ब्रह्म ही है।

तन्त्रों एवं पुराणों में उपर्युक्त '**ब्रह्म-धर्म**'–**१. विष्णु** और **२. शक्ति** के भेदों से दो प्रकार का माना गया है। '**विष्णु-धर्म**' अर्थात् '**वैष्णव धर्म**' में ज्ञान, इच्छा और क्रिया-शक्ति का स्वरूप क्रमशः **ब्रह्मा, विष्णु** और **महेश** हैं तथा '**शक्ति-धर्म**' में ज्ञान, इच्छा और क्रिया-शक्ति का स्वरूप क्रमशः **महा-सरस्वती, महा-लक्ष्मी** और **महा-काली** रूपात्मक माना गया है।

'मन्त्र-शास्त्र' में उपर्युक्त '**ब्रह्म-धर्म**' के लिए तीन बीजाक्षरों का सङ्केत हुआ है। यथा-'**ज्ञान-शक्ति**' हेतु बीजाक्षर-'**ऐं**', '**इच्छा-शक्ति**' हेतु बीजाक्षर-'**क्लीं**' और '**क्रिया-शक्ति**' हेतु बीजाक्षर-'**सौः**' निरूपित है तथा इन बीजाक्षरों की सङ्केत-संज्ञा क्रमशः– '**ऐ, ई, औ**' है।

प्राचीन समय में एक 'मन्त्र-शास्त्र-सिद्ध' **श्री लघ्वाचार्य ऋषि हुए हैं**। इनके द्वारा '**ब्रह्म-धर्म**' के सङ्केताक्षर, गूढ़ रूप से एक स्तोत्र में स्थापित हुए। यह स्तोत्र '**श्रीलघु-स्तव-राज**' नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि एक समय उक्त 'सर्व-शास्त्र-सिद्ध' श्रेष्ठ पण्डित किसी बड़े राजा की सभा में पधारे। राजा ने उनसे पूछा कि 'क्या आप कोई चामत्कारिक विद्या जानते हैं ?'

प्रत्युत्तर में पण्डित जी ने कहा कि 'यदि मैं किसी अपढ़ बालक के सिर पर हाथ धर दूँ, तो वह तत्काल ही धारा-प्रवाह के समान संस्कृत बोलना आरम्भ कर देगा।'

यह सुनकर राजा ने अपने नौकरों को वैसा एक बालक लाने का सङ्केत किया। नौकर लोग आठ वर्ष की आयु का एक अपढ़ बालक ले आए।

तब उक्त पण्डित जी ने लड़के को स्नान कराकर, लाल वस्त्र पहनाए और उसे राजा के सम्मुख बिठाकर, उसके सिर पर हाथ रख कर उससे उच्च स्वर से कहा कि 'बोल!'

बालक ने मनोवांछित सिद्धियों को देनेवाले, '**ऐं-क्लीं-सौः**' बीजाक्षर-युक्त, २३ श्लोकों से नव-कोटि नामवाली श्री त्रिपुरा-देवी की स्तुति की। यही स्तुति '**लघु-स्तव-राज**' अथवा '**लघु-स्तवः**' नाम से लोक-

प्रसिद्ध है। इस स्तोत्र में **भगवती बाला त्रिपुर-सुन्दरी** के जो मन्त्र आए हैं, बड़े चामत्कारिक और तात्कालिक फल-दायक हैं। **कालिदास, भारवि, माघ, श्रीहर्ष** आदि कवि-जनों का तथा **विक्रम, भोज** आदि राज-पुरुषों का जीवन-चरित देखने से विदित होता है कि ये सभी इस स्तोत्र में वर्णित मन्त्रों की साधना करके ही गौरवशाली हुए थे। सङ्कल्प और विनियोगादि-सहित वही स्तोत्र आगे प्रस्तुत है–

सङ्कल्प : **ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्वेत-वाराह-कल्पे जम्बू-द्वीपे भरत-खण्डे आर्यावर्त्त-देशे अमुक-पुण्य-क्षेत्रे कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे अमुक-संवत्सरे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्नो अमुक-नामो श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीत्यर्थे लघु-स्तोत्रस्य अमुक-संख्यक-पाठमहं करिष्यामि।**

विनियोग : **ॐ अस्य श्रीलघु-स्तव-राज-स्तोत्र-महा-मन्त्रस्य श्रीवृद्ध-सारस्वत ऋषिः। शार्दूल-विक्रीडित छन्दः। श्री त्रिपुरा-बाला देवता। ऐं वीजं। क्लीं कीलकं। सौः शक्तिः। श्रीत्रिपुरा-बाला-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादि-न्यास : **श्रीवृद्ध-सारस्वत-ऋषये नमः शिरसि। शार्दूल-विक्रीडित-छन्दसे नमः मुखे। श्रीत्रिपुरा-बाला-देवतायै नमः हृदि। ऐं-वीजाय नमः लिङ्गे। क्लीं-कीलकाय नमः पादयोः। सौः-शक्तये नमः नाभौ। श्रीत्रिपुरा-बाला-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

कर-न्यास : **ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। सौः मध्यमाभ्यां वषट्। ऐं अनामिकाभ्यां हुं। क्लीं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। सौः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।**

अङ्ग-न्यास : **ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौः शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुं। क्लीं नेत्र-त्रयाय वौषट्। सौः अस्त्राय फट्।**

ध्यान–

आधारे तरुणार्क-बिम्ब-रुचिरं सोम-प्रभं वाग्भवम्।
बीजं मन्मथमिन्द्र-गोपक-निभं हृत्-पङ्कजे संस्थितम्॥
रन्ध्रे ब्रह्म - पदे च शक्तिमपरं चन्द्र - प्रभा - भासुरम्।
ये ध्यायन्ति पद-त्रयं तव शिवे! ते यान्ति सौख्यं पदम्॥

मानस-पूजन–**लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः। हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः। यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः। रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं दर्शयामि नमः। वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः। सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।**

उपर्युक्त प्रकार से **ध्यान** एवं **मानस-पूजन** करने के बाद निम्न मन्त्र पढ़ते हुए '**माला-ग्रहण**' करे–

ॐ मां माले! महा-माये! शुद्ध-सत्त्व-स्वरूपिणि!
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मां सिद्धिदा भव॥

'**माला-ग्रहण**' करने के बाद पद-त्रय (**ऐं क्लीं सौः**) का **३ माला जप** करे। जप करने के बाद निम्न मन्त्र द्वारा देवी के बाँएँ हाथ में '**जप-समर्पण**' कर '**लघु-स्तव**' का पाठ करे–

ॐ गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम्।
सिद्धिर्मे भवतु देवि! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि!॥

लघु-स्तव (मूल पाठ)

ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती मध्ये ललाटं प्रभाम् ,
शौक्लीं कान्तिमनुष्णगोरिव शिरस्यातन्वती सर्वतः।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः सदाहः-स्थिता ,
छिन्द्यान्नः सहसा पदैस्त्रिभिरघं ज्योतिर्मयी वाङ्-मयी ।।१

या मात्रा त्रपुषी-लता-तनु-लसत्-तन्तूत्थिति-स्पर्द्धिनी,
वाग्-बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम् ।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्व-जनन-व्यापार-बद्धोद्यमा,
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पृशन्ति जननी-गर्भेऽर्भकत्वं नराः।।२

दृष्ट्वा सम्भ्रम-कारि वस्तु सहसा ऐ-ऐ इति व्याहृतम्,
येनाकूत - वशादपीह वरदे! विन्दुं विनाऽप्यक्षरम्।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि! तरसा जाते तवानुग्रहे,
वाचः सूक्ति-सुधा-रस-द्रव-मुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात् ।।३

यन्नित्ये! तव काम-राजमपरं मन्त्राक्षरं निष्कलम्,
तत् सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद् बुधश्चेद् भुवि ।
आख्यानं प्रति-पर्व सत्य-तपसो यत् कीर्त्तयन्तो द्विजाः,
प्रारम्भे प्रणवास्पदं प्रणयितां नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम् ।।४

यत् सद्यो वचसां प्रवृत्ति-करणे दृष्ट-प्रभावं बुधै-
स्तार्त्तीयं तदहं नमामि मनसा तद्-बीजमिन्दु-प्रभम् ।
अस्त्वौर्वोऽपि सरस्वतीमनु-गतो जाड्याम्बु-विच्छित्तये,
गौः शब्दो गिरि वर्त्तते सुनियतं योगं विना सिद्धिदः ।।५

एकैकं तव देवि! बीजमनघं सव्यञ्जनाव्यञ्जनम्,
कूटस्थं यदि वा पृथक्-क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात् ।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितम्,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम् ।।६

वामे पुस्तक-धारिणीमभयदां साक्ष-स्त्रजं दक्षिणे,
भक्तेभ्यो वर-दान-पेशल-करां कर्पूर-कुन्दोज्ज्वलाम् ।
उज्जृम्भाम्बुज-पत्र-कान्त-नयन-स्निग्ध-प्रभाऽऽलोकिनीम्,
ये त्वामम्ब! न शीलयन्ति मनसा तेषां कवित्वं कुतः ।।७

ये त्वां पाण्डुर-पुण्डरीक-पटल-स्पष्टाभिराम-प्रभाम् ,
सिञ्चन्तीममृत-द्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम् ।
अश्रान्तं विकट-स्फुटाक्षर-पदा निर्याति वक्त्राम्बुजात् ,
तेषां भारति! भारती सुर-सरित्-कल्लोल-लोलोर्म्मि-वत् ।।८

ये सिन्दूर-पराग-पुञ्ज-पिहितां त्वत् तेजसा द्यामिमा-
मुर्व्वीं चापि विलीन-यावक-रस-प्रस्तार-मग्नामिव ।
पश्यन्ति क्षणमप्यनन्य - मनसस्तेषामनङ्ग - ज्वर-
क्लान्तास्त्रस्त-कुरङ्ग-शावक-दृशो वश्या भवन्ति स्त्रियः ।।९

चञ्चत् -काञ्चन-कुण्डलाङ्गद-धरामाबद्ध-काञ्ची-स्त्रजम् ,
ये त्वां चेतसि त्वद्-गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थिराम् ।
तेषां वेश्मसु विभ्रमादहरहः स्फारी भवन्त्यश्चिरम् ,
माद्यत् -कुञ्जर-कर्ण-ताल-तरलाः स्थैर्य्यं भजन्ति श्रियः ।।१०

आर्भट्या शशि-खण्ड-मण्डित-जटा-जूटां नृ-मुण्ड-स्त्रजम् ,
बन्धूक - प्रसवारुणाम्बर - धरां प्रेतासनाध्यासिनीम् ।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामापीन-तुङ्ग-स्तनीम् ,
मध्ये निम्न-वलि-त्रयाङ्कित-तनुं त्वद्-रूप-संवित्तये ।।११

जातोऽप्यल्प-परिच्छदे क्षिति-भुजां सामान्य-मात्रे कुले,
निश्शेषावनि - चक्रवर्ति - पदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः ।
यद्-विद्याधर-वृन्द-वन्दित-पदः श्रीवत्स-राजोऽभवद्-
देवि! त्वच्चरणाम्बुज-प्रणतिजः सोऽयं प्रसादोदयः ।।१२

चण्डि! त्वच्चरणाम्बुजार्च्चन-कृते बिल्वीदलोल्लुण्ठनात् ,
त्रुट्यत-कण्टक-कोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः ।
ते दण्डांकुश-चक्र-चाप-कुलिश-श्रीवत्स-मत्स्याङ्कितै-
र्जायन्ते पृथिवी-भुजः कथमिवाम्भोज-प्रभैः पाणिभिः ।।१३

विप्राः क्षोणि-भुजो विशस्तदितरे क्षीराज्य-मध्वासवै-
स्त्वां देवि! त्रिपुरे! परापर-कलां सन्तर्प्य पूजा-विधौ ।
यां यां प्रार्थयते नरः स्थिर-धियां येषां त एव ध्रुवम् ,
तां तां सिद्धिमवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नीकृताः ।।१४

शब्दानां जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे,
त्वत्तः केशव-वासव-प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति ध्रुवम् ।
लीयन्ते खलु यत्र कल्प-विरमे ब्रह्मादयस्तेऽप्यमी,
सा त्वं काचिदचिन्त्य-रूप-महिमा शक्तिः परा गीयसे ।।१५

देवानां त्रितयी त्रयी हुत-भुजां शक्ति-त्रयं त्रि-स्वरा-
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्म-वर्णास्त्रयः ।
यत् किञ्चिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गादिकम् ,
तत् सर्वं त्रिपुरेति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः ।।१६

लक्ष्मीं राज - कुले जयां रण - मुखे क्षेमङ्करीमध्वनि,
क्रव्याद-द्विप-सर्प-भाजि शबरीं कान्तार-दुर्गे गिरौ ।
भूत-प्रेत-पिशाच-जृम्भक-भये स्मृत्वा महा-भैरवीम् ,
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोय-प्लवे ।।१७

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला-मालिनी,
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी ।
शक्तिः शङ्कर-वल्लभा त्रिनयना वाग्-वादिनी भैरवी,
ह्रींकारी त्रिपुरा परापर - मयी माता कुमारीत्यसि ।।१८

आ - ई - पल्लवितैः परस्पर - युतैर्द्वि - त्रि - क्रमादक्षरैः,
काद्यैः क्षान्त-गतैः स्वरादिभिरथ क्षान्तैश्च तैः स-स्वरैः।
नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त-गुह्यानि ते,
तेभ्यो भैरव-पत्नि! विंशति-सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ।।१९

बोद्धव्या निपुणं बुधैः स्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्-गतम् ,
भारत्यास्त्रिपुरेत्यनन्य - मनसो यत्राद्य - वृत्ते स्फुटम् ।
एक-द्वि-त्रि-पद-क्रमेण कथितस्तत् - पाद-संख्याक्षरै-
र्मन्त्रोद्धार - विधिर्विशेष - सहितः सत्-सम्प्रदायान्वितः ।।२०

सावद्यं निरवद्यमस्तु यदि वा किं वाऽनया चिन्तया,
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति जनो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि ।
सञ्चिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं सञ्जायमानं हठात् ,
त्वद्-भक्त्या मुखरी-कृतेन रचितं यस्मान्मयाऽपि ध्रुवम् ।।२१

।। इति श्रीमल्लघ्वाचार्य-विरचितः श्रीलघुस्तव-राजः समाप्तः ।।

श्री लघु-स्तव-मन्त्र-प्रयोग

'**श्लोक**' का पाठ कर तत्सम्बन्धी '**मन्त्र**' का भक्ति-पूर्वक निश्चित संख्या में प्रति-दिन **प्रातः**, **मध्याह्न** और **सन्ध्या**-काल-तीनों समय जप करने से यथोक्त फल जप-कर्त्ता को मिलता है। जप करने के लिए आवश्यक अनुमति एवं आशीर्वाद अपने गुरु-देव से प्राप्त कर लेना चाहिए। केवल दीक्षित साधकों को ही इन मन्त्रों के जप का अधिकार है।

(१)

ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती मध्ये ललाटं प्रभाम् ,
शौक्लीं कान्तिमनुष्णगोरिव शिरस्यातन्वती सर्वतः।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः सदाहः-स्थिता ,
छिन्द्यान्नः सहसा पदैस्त्रिभिरघं ज्योतिर्मयी वाङ्-मयी ।।

।। श्रीं क्लीं ईश्वर्यै नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रिकाल (प्रातः, मध्याह्न एवं सन्ध्या-तीन समय) निर्दिष्ट संख्या में जप करने से सभी प्रकार के ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

(२)

या मात्रा त्रपुषी-लता-तनु-लसत्-तन्तूत्थिति-स्पर्द्धिनी,
वाग्-बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम् ।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्व-जनन-व्यापार-बद्धोद्यमा,
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पृशन्ति जननी-गर्भेऽर्भकत्वं नराः।।

।। श्रीवाङ्-मय्यै नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से वाक्-सिद्धि होती है।

(३)

दृष्ट्वा सम्भ्रम-कारि वस्तु सहसा ऐ-ऐ इति व्याहृतम्,
येनाकूत - वशादपीह वरदे! विन्दुं विनाऽप्यक्षरम्।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि! तरसा जाते तवानुग्रहे,
वाचः सूक्ति-सुधा-रस-द्रव-मुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात् ।।३

।। स्यैं वः क्रौं नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से जगत् का वशीकरण होता है।

(४)

यन्नित्ये! तव काम-राजमपरं मन्त्राक्षरं निष्कलम्,
तत् सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद् बुधश्चेद् भुवि ।

आख्यानं प्रति-पर्व सत्य-तपसो यत् कीर्त्तयन्तो द्विजाः,
प्रारम्भे प्रणवास्पदं प्रणयितां नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम् ।।४

।। ॐ वः सरस्वत्यै नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से विद्या-लाभ होता है ।

(५)

यत् सद्यो वचसां प्रवृत्ति-करणे दृष्ट-प्रभावं बुधै-
स्तार्त्तीयं तदहं नमामि मनसा तद्-बीजमिन्दु-प्रभम् ।
अस्त्वौर्वोऽपि सरस्वतीमनु-गतो जाड्याम्बु-विच्छित्तये,
गौः शब्दो गिरि वर्त्तते सुनियतं योगं विना सिद्धिदः ।।५

।। योगिन्यै नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से सभी आपत्तियों का निवारण होता है ।

(६)

एकैकं तव देवि! बीजमनघं सव्यञ्जनाव्यञ्जनम्,
कूटस्थं यदि वा पृथक्-क्रम-गतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात् ।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितम्,
जप्तं वा सफली-करोति तरसा तं तं समस्तं नृणाम् ।।६

।। ॐ धारकस्य सौभाग्यं कुरु-कुरु स्वाहा ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से दुर्भाग्य का निवारण होता है ।

(७)

वामे पुस्तक-धारिणीमभयदां साक्ष-स्त्रजं दक्षिणे,
भक्तेभ्यो वर-दान-पेशल-करां कर्पूर-कुन्दोज्ज्वलाम् ।
उज्जृम्भाम्बुज-पत्र-कान्त-नयन-स्निग्ध-प्रभाऽऽलोकिनीम्,
ये त्वामम्ब! न शीलयन्ति मनसा तेषां कवित्वं कुतः ।।७

।। धरण्यै नमः सौभाग्यं कुरु-कुरु स्वाहा ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से विशेष सौभाग्य की प्राप्ति होती है ।

(८)

ये त्वां पाण्डुर-पुण्डरीक-पटल-स्पष्टाभिराम-प्रभाम् ,
सिञ्चन्तीममृत-द्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम् ।
अश्रान्तं विकट-स्फुटाक्षर-पदा निर्याति वक्त्राम्बुजात् ,
तेषां भारति! भारती सुर-सरित्-कल्लोल-लोलोर्म्मि-वत् ।।८

।। ऐं क्लीं श्रीं धनं कुरु-कुरु स्वाहा ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से धन-सम्पत्ति का लाभ होता है ।

(९)

ये सिन्दूर-पराग-पुञ्ज-पिहितां त्वत् तेजसा द्यामिमा-
मुर्व्वीं चापि विलीन-यावक-रस-प्रस्तार-मग्नामिव ।
पश्यन्ति क्षणमप्यनन्य - मनसस्तेषामनङ्ग - ज्वर-
क्लान्तास्त्रस्त-कुरङ्ग-शावक-दृशो वश्या भवन्ति स्त्रियः ।।९

।। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रः पुत्रं कुरु-कुरु स्वाहा ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से पुत्र-प्राप्ति होती है ।

(१०)

चञ्चत् -काञ्चन-कुण्डलाङ्गद-धरामाबद्ध-काञ्ची-स्त्रजम् ,
ये त्वां चेतसि त्वद्-गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थिराम् ।
तेषां वेश्मसु विभ्रमादहरहः स्फारी भवन्त्याश्चिरम् ,
माद्यत् -कुञ्जर-कर्ण-ताल-तरलाः स्थैर्य्यं भजन्ति श्रियः ।।१०

।। ॐ ह्रीं क्लीं महा-लक्ष्म्यै नमः, जयं कुरु-कुरु स्वाहा ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से सर्वत्र विजय-लाभ होता है ।

(११)

आर्भट्या शशि-खण्ड-मण्डित-जटा-जूटां नृ-मुण्ड-स्त्रजम् ,
बन्धूक - प्रसवारुणाम्बर - धरां प्रेतासनाध्यासिनीम् ।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामापीन-तुङ्ग-स्तनीम् ,
मध्ये निम्न-वलि-त्रयाङ्कित-तनुं त्वद्-रूप-संवित्तये ।।११

।। ऐं क्लीं नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से कर्म-क्षय होकर, अशुभ शुभ में बदल जाता है ।

(१२)

जातोऽप्यल्प-परिच्छदे क्षिति-भुजां सामान्य-मात्रे कुले,
निश्शेषावनि - चक्रवर्ति - पदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः ।
यद्-विद्याधर-वृन्द-वन्दित-पदः श्रीवत्स-राजोऽभवद्-
देवि! त्वच्चरणाम्बुज-प्रणतिजः सोऽयं प्रसादोदयः ।।१२

।। ब्लूँ द्रीं नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से शासनाधिकार की प्राप्ति होती है ।

(१३)

चण्डि! त्वच्चरणाम्बुजार्च्चन-कृते बिल्वीदलोल्लुण्ठनात् ,
त्रुट्यत-कण्टक-कोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः ।

ते दण्डांकुश-चक्र-चाप-कुलिश-श्रीवत्स-मत्स्याङ्कितै-
र्जायन्ते पृथिवी-भुजः कथमिवाम्भोज-प्रभैः पाणिभिः ।।१३

।। ह्सौः नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से सर्वोच्च पद की प्राप्ति होती है ।

(१४)

विप्राः क्षोणि-भुजो विशस्तदितरे क्षीराज्य-मध्वासवै-
स्त्वां देवि! त्रिपुरे! परापर-कलां सन्तर्प्य पूजा-विधौ ।
यां यां प्रार्थयते नरः स्थिर-धियां येषां त एव ध्रुवम् ,
तां तां सिद्धिमवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नीकृताः ।।१४

।। ॐ वाङ् -मय्यै नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से सर्वाभीष्ट-सिद्धि होती है ।

(१५)

शब्दानां जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे,
त्वत्तः केशव-वासव-प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति ध्रुवम् ।
लीयन्ते खलु यत्र कल्प - विरमे ब्रह्मादयस्तेऽप्यमी,
सा त्वं काचिदचिन्त्य-रूप-महिमा शक्तिः परा गीयसे ।।१५

।। ॐ श्रीं भारत्यै नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से वाक्-सिद्धि होती है ।

(१६)

देवानां त्रितयी त्रयी हुत - भुजां शक्ति - त्रयं त्रि-स्वरा-
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्म-वर्णास्त्रयः ।
यत् किञ्चिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गादिकम् ,
तत् सर्वं त्रिपुरेति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः ।।१६

।। ॐ सरस्वत्यै नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से ज्ञान-प्राप्ति होती है ।

(१७)

लक्ष्मीं राज - कुले जयां रण - मुखे क्षेमङ्करीमध्वनि,
क्रव्याद-द्विप-सर्प-भाजि शबरीं कान्तार-दुर्गे गिरौ ।
भूत-प्रेत-पिशाच-जृम्भक-भये स्मृत्वा महा-भैरवीम् ,
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोय-प्लवे ।।१७

।। ॐ ह्रीं श्रीं शारदायै नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से बहुमुखी प्रतिभा का लाभ होता है ।

(१८)

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला-मालिनी,
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी ।
शक्तिः शङ्कर-वल्लभा त्रिनयना वाग्-वादिनी भैरवी,
ह्रींकारी त्रिपुरा परापर - मयी माता कुमारीत्यसि ।।१८

।। ॐ हंस-वाहिन्यै नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से ज्ञान-प्राप्ति होती है ।

(१९)

आ - ई - पल्लवितैः परस्पर - युतैर्द्वि - त्रि - क्रमादक्षरैः,
काद्यैः क्षान्त-गतैः स्वरादिभिरथ क्षान्तैश्च तैः स-स्वरैः।
नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त-गुह्यानि ते,
तेभ्यो भैरव-पत्नि! विंशति-सहस्त्रेभ्यः परेभ्यो नमः ।।१९

।। ॐ जगन्मात्रे नमः ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से सभी प्रकार का कल्याण होता है ।

(२०)

बोद्धव्या निपुणं बुधैः स्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्-गतम् ,
भारत्यास्त्रिपुरेत्यनन्य - मनसो यत्राद्य - वृत्ते स्फुटम् ।
एक-द्वि-त्रि-पद-क्रमेण कथितस्तत् -पाद-संख्याक्षरै-
र्मन्त्रोद्धार - विधिर्विशेष - सहितः सत् - सम्प्रदायान्वितः ।।२०

।। ॐ भगवत्यै महा-वीर्यायै नमः, धारकस्य पुत्र-वृद्धिं कुरु-कुरु स्वाहा ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से वंश और परिवार की वृद्धि होती है ।

(२१)

सावद्यं निरवद्यमस्तु यदि वा किं वाऽनया चिन्तया,
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति जनो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि ।
सञ्चिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं सञ्जायमानं हठात् ,
त्वद्-भक्त्या मुखरी-कृतेन रचितं यस्मान्मयाऽपि ध्रुवम् ।।२१

।। ॐ ऐं ॐ ऐं क्लीं लक्ष्मीं कुरु-कुरु स्वाहा ।।

उक्त मन्त्र का त्रि-काल जप करने से धन, वैभव की प्राप्ति होती है ।

❐❐❐

[६]

दशात्मिका श्रीबाला त्रिपुर-सुन्दरी पञ्च-दशाक्षर मन्त्र-साधना

॥ मन्त्रोद्धार ॥

दामोदर चन्द्र-युत (विन्दु-युत)=ऐं । विधि (क), वासव ल, शान्तीन्दु (ईं)=क्लीं । भृगु (स), सङ्कर्षण (औ), विसर्ग (ः)-सौः । प्रणव=ॐ । कूट= **परमेश्वर्यै** । विलोम-गति-संयुता वेद-बीज-मयी विद्या-सौः क्लीं ऐं ॐ । वह्नि-जाया-स्वाहा ।

मन्त्र-ॐ ऐं क्लीं सौः परमेश्वर्यै सौः क्लीं ऐं ॐ स्वाहा । (१५ अक्षर)।

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्रीदशात्मिका बाला-त्रिपुर-सुन्दरी-मन्त्रस्य भगवान् श्रीदक्षिणा-मूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीदशात्मिका भगवती श्रीत्रिपुरा-बाला देवता, मध्ये क्लीं शक्तिः, अन्ते सौः बीजं, आदौ वाक् कीलकम्, ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

भगवान् श्रीदक्षिणा-मूर्ति-ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, श्रीदशात्मिका भगवती श्रीत्रिपुरा-बाला-देवतायै नमः हृदये, क्लीं शक्तये नमः नाभौ, सौः बीजाय नमः लिङ्गे, ऐं कीलकाय नमः पादयोः, श्रीमती अन्तर्महा-विद्यायै नमः सर्वाङ्गे, ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

॥ तार्तीय-न्यास ॥

ऐं नमो नाभेः पादान्तं । क्लीं नमो हृदयात् पर-नाभ्यन्तं । सौः नमो मूर्द्धना हृदन्तं । ऐं नमो वाम-करे । क्लीं नमो दक्ष-करे । सौः नमो उभयोः करयोः । ऐं नमो मूर्ध्नि । क्लीं नमो गुह्ये । सौः नमो दक्षसि ।

॥ योनि-न्यास ॥

ॐ नमो कर्णयोः, ऐं नमो चिबुके, क्लीं नमो शङ्खयोः, सौः नमो भ्रुवे, प नमो नेत्रयोः, र नमो नासिकायां, मे नमो स्कन्धयोः, श्व नमो उदरे, रि नमो कर्पूरयोः, स्वा नमो नाभौ, हा नमो जानुनो, सौः नमो लिङ्गे, क्लीं नमो मस्तके, ऐं नमो पादयोः, ॐ नमो गुह्ये, ॐ ऐं क्लीं सौः नमो पार्श्वयोः, परमेश्वरी नमो हृदये, स्वाहा नमो स्तनयो, सौः क्लीं ऐं ॐ नमो कण्ठ-देशे ।

॥ रत्यादि-न्यास ॥

ऐं रत्यै नमो गुह्ये, सौः प्रीत्यै नमो हृदि, क्लीं मनोभवायै नमो भ्रू-मध्ये, ऐं अमृतेश्यै नमो मूर्ध्नि-गुह्ये, सौः योगेश्यै नमो वक्त्रे-हृदि, क्लीं विश्व-योन्यै नमो हृदि-भ्रू-मध्ये ।

॥ कामेशी पञ्च-बीज-न्यास ॥

ह्रीं मनोभवाय नमः मूर्ध्नि, क्लीं मकर-ध्वजाय नमः वक्त्रे, ऐं कन्दर्पाय नमः हृदि, ब्लूं मन्मथाय नमः गुह्ये, स्त्रीं काम-देवाय नमः चरणयोः ।

॥ कामेशी पञ्च-बीज-न्यास ॥

द्रां द्राविण्यै नमः शिरसि, द्रीं क्षोभिण्यै नमः चरणयोः, क्लीं वशीकरिण्यै नमः मुखे, ब्लूं आकर्षिण्यै नमः गुह्ये, सः सम्मोहिन्यै नमः हृदि ।

॥ कर-न्यास ॥

सौः क्लां ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः, सौः क्लीं ऐं तर्जनीभ्यां स्वाहा, सौः क्लूं ऐं मध्यमाभ्यां वषट्, सौः क्लैं ऐं अनामिकाभ्यां हुं, सौः क्लौं ऐं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् , सौः क्लः ऐं करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट् ।

॥ अङ्ग-न्यास ॥

सौः क्लां ऐं हृदयाय नमः, सौः क्लीं ऐं शिरसे स्वाहा, सौः क्लूं ऐं शिखायै वषट् , सौः क्लैं ऐं कवचाय हुं, सौः क्लौं ऐं नेत्र-त्रयाय वौषट्, सौः क्लः ऐं अस्त्राय फट् ।

ध्यान–

रक्ताम्बरां चन्द्र-कलावतंसां, समुद्यदादित्य-निभां त्रि-नेत्राम् ।
विद्याक्ष-मालाऽभय-दान-हस्तां, ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम् ॥

मन्त्र-जप–एक लक्ष (एक लाख) जप । दशांश (१०,०००) होम ।

॥ यन्त्रोद्धार ॥

नव-योन्यात्मकं यन्त्रं, बहिरष्ट-दलावृतम् । भू-गृहेण पुनर्वितं, पूजनाय लिखेत् सुधीः ॥
मध्ये योनौ तु तार्तीयमष्ट-योनिषु मन्मथम् । केसरेषु स्वरान् न्यस्येद् वर्गानष्टौ दलेष्वपि ॥
दलाग्रेषु त्रिशूलानि, पद्मं मातृकयाऽऽवृतम् । एवं विलिखेत् सुयन्त्रे, पीठ-शक्तीः प्रपूजयेत् ॥
इच्छा-ज्ञान-क्रिया चैव, कामिनी काम-दायिनी । रतिः रति-प्रियानन्दा, मनोन्मन्यपि चान्तिमा ॥
पीठ-शक्तीरिमा दृष्ट्वा, पीठं तं मनुना दिशेत् ॥

✱✱

दश-मयी भगवती श्रीबाला-गर्भित श्री-यन्त्र का विवरण

विश्व के प्रवाह में, **भगवती दश-मयी महा-शक्ति बाला-त्रिपुर-सुन्दरी** के मूलान्तर-तमाग्नि में से, श्री-क्रिया का भाव किस रीति से स्फुरित होता है, इसका '**श्रीबाला-गर्भित श्री-यन्त्र**' दिग्दर्शक है ।

मध्य-योनि में मूल-तम का भाव है, जो **इच्छा-शक्ति** के नाम से पहचाना जाता है । मूल-योनि के इस भाव को '**कृष्ण-वर्ण**' बताया है । इस तम का नाम '**महा-विष्णु-तम**' है । योनि के दोनों ओर दो '**योनिज चतुष्कोण**' हैं । तमज क्रिया का भाव इन चतुष्कोणों में आकर स्फुरित होता है । इससे मूल-रज और मूल-सत्त्व का जन्म होता है ।

मूल-सत्त्व की प्रशान्त गति का भाव महा-पुरुष सिद्ध-योग से भी नहीं जान सकते। इसलिए अनुभवी महात्मा उसको स्थिति-मय गुण के नाम से जानते हैं। मूल में स्पन्द का भाव स्फुरित होता है। विश्वास्तित्व के ये तीन भाव "**त्रिपुटि-चक्र**" के नाम से प्रख्यात हैं। '**त्रिपुटि-चक्र**' के मिश्रित गति-सङ्घर्षण के भाव बाह्य-योनियों में स्फुरित होते बताए गए हैं।

ज्ञान, क्रिया, कामिनी, काम-दायिनी, मनोभवा, रति-प्रिया, नन्दा, मनोन्मनी आदि नामवाली प्रवाहित स्फुरण-शक्तियाँ मूल-शक्ति की गति के गुण का सम्मिश्रित भाव हैं। इनमें से प्रत्येक में एक गुण प्रधान रहकर अमुकामुक गुणों का गौण रूप से सम्मिश्रण होता है।

उपर्युक्त **त्रि-गुणा प्रकृति** की गति मूल तत्त्वीकरण के भाव को जन्म देती है और **अष्ट-पत्र**-रूप से भिन्न-भिन्न तत्त्व-गुण में प्रकट होती है। इसका भाव '**अष्ट-दल**' रूप में बताया है।

'**मूल-चक्र**' में **श्री-बिन्दु** अर्थात् मूल-बीज-रूप महत्-तत्त्व-स्पन्द की उत्पत्ति होती है, जो **श्रीमहा-माया के नवावरणात्मक विश्व-महा-जाल** की शक्तियों का प्रवर्त्तक है, जन्म-दाता है। **नवावरणात्मक विश्व-महा-जाल की शक्तियों का वर्णन** इस प्रकार है–

प्रथमावरण–बिन्दु में जाल-नायिका **महा-माया श्रीत्रिपुर-सुन्दरी** और उनके अङ्ग-रूप मूल षोडश प्रवाह अर्थात् कलाएँ (**षोडश नित्याएँ**) उनके नाम से विश्व में होती उनकी क्रियाओं के प्रमाण में हैं। इस शक्ति का नाम '**परा-रहस्य-योगिनी**' है। १६ नित्याएँ हैं–**१. कामेश्वरी, २. भग-मालिनी, ३. नित्य-क्लिन्ना, ४. भेरुण्डा, ५. वह्नि-वासिनी, ६. महा-विद्येश्वरी, ७. शिव-दूती, ८. त्वरिता, ९. कुल-सुन्दरी, १०. नित्या, ११. नील-पताकिनी, १२. विजया, १३. सर्व-मङ्गला, १४. ज्वाला-मालिनी, १५. विचित्रा, १६. त्रिपुर-सुन्दरी**। साथ में दूसरी उप-शक्तियाँ भी हैं। इस चक्र को '**सर्व-काम-प्रद सर्वानन्द-मय-चक्र**' कहते हैं।

द्वितीयावरण–यह '**सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र**' है। इसमें **अति-रहस्य-योगिनी शक्ति** है तथा **कामेश्वरी (रुद्र), वज्रेश्वरी (विष्णु), भग-मालिनी (ब्रह्मा)**–इन तीन त्रि-गुणात्मक त्रि-देव-शक्तियों का आवरण है। साथ में **पञ्च-मदन-बाण** भी हैं।

तृतीय अष्ट-दलावरण–इसमें **अष्ट काल-शक्तियाँ** हैं। उनके नाम ये हैं–**१. वशिनी, २. कौमारी, ३. मोदिनी, ४. विमला, ५. अरुणा, ६. जयिनी, ७. सर्वेशी, ८. कौलिनी**। इस चक्र को '**सर्व-रोग-हर-चक्र**' कहते हैं। शक्तियाँ '**रहस्य-योगिनी**' नाम से प्रख्यात हैं।

चतुर्थावरण–यह **दश-दलावरण** है। इसमें मूल सत्त्व-भाव-दर्शिका **दश धात्री शक्तियाँ** हैं। उनके नाम हैं–**१. सर्वज्ञा, २. सर्व-शक्ति, ३. सर्वैश्वर्य-फलदा, ४. सर्व-ज्ञान-मयी, ५. सर्व-व्याधि-नाशिनी, ६. सर्वाधार-स्वरूपा, ७. सर्व-पाप-हरा, ८. सर्वानन्द-मयी, ९. सर्व-रक्षाकरी, १०. सर्वेप्सितार्थ-फलदा**। इस जाल-चक्र का नाम '**सर्व-रक्षाकर-चक्र**' है और शक्तियाँ '**निगर्भ-योगिनी**' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

पञ्चमावरण–यह भी **दश-दलावरण** है। ये दश मूल भू-अणु की महा-माया-कर सिद्धियाँ हैं। उनके नाम हैं–**१. सर्व-सिद्धि-प्रदा, २. सर्व-सम्पत्-प्रदा, ३. सर्व-प्रियङ्करी, ४. सर्व-मङ्गल-कारिणी,**

५. **सर्व-काम-प्रदा**, ६. **सर्व-दुःख-मोचिनी**, ७. **सर्व-मृत्यु-प्रशमिनी**, ८. **सर्व-विघ्न-निवारिणी**, ९. **सर्वाङ्ग-सुन्दरी**, १०. **सर्व-सौभाग्य-दायिनी**। इस जाल-चक्र को '**सर्वार्थ-साधक-चक्र**' कहते हैं और शक्तियाँ '**कुल-योगिनी**' के नाम से प्रख्यात हैं।

षष्ठावरण–यह **चतुर्दश-दलावरण** है। इसमें मूलाग्नि की प्रथक्करण (लय-कारिणी) शक्तियाँ और तरलाग्नि की उन्मादिनी शक्तियाँ हैं। उनमें से प्रथम सात **लय-कारिणी** और अन्य सात **उन्मादिनी** हैं। उनके नाम हैं –(लय-कारिणी) १. **सर्व-संक्षोभिणी**, २. **सर्व-विद्राविणी**, ३. **सर्वाकर्षिणी**, ४. **सर्वाह्लाद-करी**, ५. **सर्व-सम्मोहिनी**, ६. **सर्व-स्तम्भिनी**, ७. **सर्व-जृम्भिणी**। (उन्मादिनी) १. **सर्व-वशङ्करी**, २. **सर्व-रञ्जिनी**, ३. **सर्वोन्मादिनी**, ४. **सर्वार्थ-साधिनी**, ५. **सर्व-सम्पत्ति-पूरिणी**, ६. **सर्व-मन्त्र-मयी**, ७. **सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करी**।

इस चक्र-जाल को '**सर्व-सौभाग्य-प्रद-चक्र**' कहते हैं और इसकी शक्तियों को '**सम्प्रदाय-योगिनी**' के नाम से जानते हैं।

सप्तमावरण–यह **अष्ट-दल** का है। इसमें मूल जल की (क) **मोहिनी** और (ख) **आकर्षिणी शक्तियाँ** हैं। उनके नाम ये हैं–

(क) मोहिनी–१. **अनङ्ग-कुसुमा**, २. **अनङ्ग-मेखला**, ३. **अनङ्ग-मदना**, ४. **अनङ्ग-मदनातुरा**।

(ख) आकर्षिणी–१. **अनङ्ग-रेखा**, २ **अनङ्ग-वेशा**, ३. **अनङ्गांकुशा**, ४. **अनङ्ग-मालिनी**।

इस चक्र-जाल का नाम है–'**सर्व-संक्षोभण-चक्र**' और इसकी शक्तियों का नाम है '**गुप्ततर योगिनी**'।

अष्टमावरण–प्रकृति-जाल का यह **षोडश (१६) दलावृत** आवरण है। इसमें वायु-तत्त्व की (क) **वशीकरण**, (ख) **स्तम्भिनी**, (ग) **उच्चाटिनी** तथा (घ) **विक्षेपिणी शक्तियाँ** हैं। इनके नाम ये हैं–

(क) वशीकरणी–१. **कामाकर्षिणी**, २. **बुद्ध्याकर्षिणी**, ३. **अहङ्काराकर्षिणी**, ४. **शब्दाकर्षिणी**।

(ख) स्तम्भिनी–१. **स्पर्शाकर्षिणी**, २. **रूपाकर्षिणी**, ३. **रसाकर्षिणी**, ४. **गन्धाकर्षिणी**।

(ग) उच्चाटिनी–१. **चित्ताकर्षिणी**, २. **धैर्याकर्षिणी**, ३. **नामाकर्षिणी**, ४. **बीजाकर्षिणी**।

(घ) विक्षेपिणी–१. **शरीराकर्षिणी**, २. **अमृताकर्षिणी**, ३. **स्मृत्याकर्षिणी**, ४. **अमृताकर्षिणी**।

इस चक्र-जाल का नाम है– '**सर्वाशापूरक-चक्र**' और इसकी शक्तियाँ '**गुप्त-योगिनी**' कही जाती हैं।

नवमावरण–यह **भूपुर-त्रय** है। इसमें बाहर के भू-पुर में भू-तत्त्व-जनित **अणिमादि अष्ट-सिद्धियाँ**, बीच के भू-पुर में बाहर की रेखा की **अणिमादि अष्ट-सिद्धियों में लुभानेवाली शक्तियाँ** अथवा **अणिमादि सिद्धियों की प्रेरक अष्ट-शक्तियाँ** हैं, जो **ब्राह्मी-माहेश्वरी** आदि **अष्ट** **माताओं** के नाम से प्रख्यात हैं। उनके अन्दरवाली तृतीय रेखा में **ब्राह्मी** आदि शक्तियों के **क्षोभण**, **द्रावणादि** गुप्त शस्त्र हैं। इस जाल-चक्र का नाम '**त्रैलोक्य-मोहन-चक्र**' है और 'शक्ति' का नाम है– '**प्रगट-योगिनी**'।

इस प्रकार यह सम्पूर्ण यन्त्र **मूला प्रकृति का महा-माया-जाल** है।

❒❒❒

[७]

श्रीबाला-त्रिशति-नामावली-साधना

।। विनियोग ।।

ॐ अस्या : श्रीपरा-बाला-त्रिपुरा त्रिशति-नामावली-मन्त्रस्य श्रीआनन्द-भैरव ऋषिः, श्रीपरा-विद्या-भगवती-अनन्त-नायिका श्रीबाला-त्रिपुरा देवता, गायत्र्यनुष्टुप् छन्दः, 'ऐं'-बीजं, 'सौः'-शक्तिः, 'क्लीं'-उत्कीलनं, मायाऽऽवरणं, चतुर्वर्गाप्तये नाम-जपे विनियोगः ।

(**विशेष :** सहस्र-नामावली के नाम-मन्त्रों के '**जप**' मात्र का अनुष्ठान करते समय उक्त विनियोग करना चाहिए । यदि नाम-मन्त्रों के द्वारा '**पूजन**' करना हो, तो '**नाम-जपे विनियोगः**' के स्थान पर '**नाम-पूजने विनियोगः**' पढ़ें और यदि पूजन के साथ '**तर्पण**' भी करना हो, तो '**नाम-पूजने तर्पणे च विनियोगः**' पढ़ें । नाम-मन्त्रों से होम करना हो, तो '**नाम-होमे विनियोगः**' पढ़ें ।) ।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

श्रीआनन्द-भैरव-ऋषये नमः शिरसि, श्रीपरा-विद्या-भगवती-अनन्त-नायिका श्रीबाला-त्रिपुरा-देवतायै नमः हृदि, गायत्र्यनुष्टुप्-छन्देभ्यो नमः मुखे, 'ऐं'-वीजाय नमः गुह्ये, 'सौः'-शक्तये नमः पादयोः, 'क्लीं'-उत्कीलनाय नमः नाभौ, मायाऽऽवरणं, चतुर्वर्गाप्तये नाम-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

(**विशेष :** ऊपर नाम-मन्त्र द्वारा '**पूजन**' करते समय '**नाम-जपे विनियोगाय नमः**' के स्थान पर '**नाम-पूजने विनियोगाय नमः**' और '**पूजन-तर्पण**' दोनों करते समय '**नाम-पूजने-तर्पणे च विनियोगाय नमः**' पढ़ें तथा '**हवन**' करना हो, तो '**नाम-होमे विनियोगाय नमः**' पढ़ें ।) ।

।। कर-न्यास ।।

ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ सौः मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ ऐं अनामिकाभ्यां हुम् । ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ॐ सौः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट् ।

।। षडङ्ग-न्यास ।।

ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा । ॐ सौः शिखायै वषट् । ॐ ऐं कवचाय हुम् । ॐ क्लीं नेत्र-त्रयाय वौषट् । ॐ सौः अस्त्राय फट् ।

।। ध्यान ।।

समुद्यदादित्य-पराङ्क-संख्यकामाभान्वितां रक्त-प्रभां च दिव्याम् ।
विद्याक्ष-माले त्वभयं वरं च, विश्वेषु दात्रीं परमाम्बुजां भजे ।।

।। मानस-पूजन ।।

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीबाला-त्रिपुरा-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि-अधो-मुख अंगुष्ठ-कनिष्ठा से ।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीबाला-त्रिपुरा-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि-अधो-मुख अंगुष्ठ-तर्जनी से ।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीबाला-त्रिपुरा-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि-ऊर्ध्व-मुख अंगुष्ठ-तर्जनी से ।
रं वन्ह्यात्मकं दीपं श्रीबाला-त्रिपुरा-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि-ऊर्ध्व-मुख अंगुष्ठ-मध्यमा से।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीबाला-त्रिपुरा-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि-ऊर्ध्व-मुख अंगुष्ठ-अनामा से ।
शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीबाला-त्रिपुरा-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि-ऊर्ध्व-मुख सभी अँगुलियों से

नामावली-जप

ॐ श्री बालायै नमः
ॐ श्री बलाऽबला-मालायै नमः
ॐ श्री श्रीबाला बाल-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री बालिकायै नमः
ॐ श्री शालिन्यै नमः
ॐ श्री शालायै नमः
ॐ श्री तारिण्यै नमः
ॐ श्री तरणेश्वर्यै नमः
ॐ श्री श्रीश्यामायै नमः
ॐ श्री गौर्यै नमः ।।१०
ॐ श्री सुप्रीतायै नमः
ॐ श्री प्रीतायै नमः
ॐ श्री पीतायै नमः
ॐ श्री परात्परायै नमः
ॐ श्री शैलिन्यै नमः
ॐ श्री शैलजा-मात्रे नमः
ॐ श्री सुकेतायै नमः
ॐ श्री सोम-धारिण्यै नमः
ॐ श्री सोमदायै नमः
ॐ श्री पुष्पिण्यै नमः ।।२०
ॐ श्री पुष्पायै नमः
ॐ श्री मकरन्दायै नमः
ॐ श्री परागयायै नमः
ॐ श्री पोषिण्यै नमः
ॐ श्री विधिदायै नमः
ॐ श्री विद्यायै नमः
ॐ श्री महा-विद्यायै नमः
ॐ श्री पराङ्कजायै नमः
ॐ श्री पूर्णायै नमः
ॐ श्री दश-मयी मायायै नमः ।।३०
ॐ श्री दशा विद्यायै नमः
ॐ श्री महोक्षजायै नमः
ॐ श्री दशायै नमः
ॐ श्री दश-मयी प्रज्ञायै नमः
ॐ श्री अमोघायै नमः
ॐ श्री अमोघ-शासनायै नमः
ॐ श्री पुष्पिणी प्रथमायै नमः
ॐ श्री भद्रायै नमः
ॐ श्री विद्याक्षायै नमः
ॐ श्री अक्ष-धारिण्यै नमः ।।४०
ॐ श्री त्र्यक्षाक्षायै नमः
ॐ श्री पुष्प-पक्षायै नमः
ॐ श्री पुष्प-अक्षायै नमः
ॐ श्री मीनाक्षायै नमः
ॐ श्री काम-सुन्दर्यै नमः
ॐ श्री कामाक्षायै नमः
ॐ श्री मदनाक्षायै नमः
ॐ श्री श्रियै नमः
ॐ श्री श्रीविद्यायै नमः
ॐ श्री षोडश्यै नमः ।।५०
ॐ श्री सत्यै नमः
ॐ श्री विद्या पञ्च-दश्यै नमः
ॐ श्री पञ्चायै नमः
ॐ श्री पञ्चानन-प्रियायै नमः
ॐ श्री प्रभायै नमः
ॐ श्री रक्त-वस्त्र-धरायै नमः
ॐ श्री रक्तायै नमः
ॐ श्री रक्ताभायै नमः
ॐ श्री रक्त-मालिन्यै नमः
ॐ श्री रक्तासन-समासीनायै नमः ।।६०

ॐ श्री रजायै नमः
ॐ श्री सत्त्वायै नमः
ॐ श्री तमाश्रयायै नमः
ॐ श्री गुण-त्रयासनायै नमः
ॐ श्री दिव्यायै नमः
ॐ श्री सर्वाभरण-भूषितायै नमः
ॐ श्री सर्वायै नमः
ॐ श्री सर्व-प्रगायै नमः
ॐ श्री खर्वाऽर्वायै नमः
ॐ श्री सर्व-प्रदायिन्यै नमः ।।७०
ॐ श्री बलि-प्रीतायै नमः
ॐ श्री बलि-स्फीतायै नमः
ॐ श्री बल्यर्चन-विधौ स्मितायै नमः
ॐ श्री सर्व-काम-प्रदायै नमः
ॐ श्री मुक्तायै नमः
ॐ श्री मुक्तेश्यै नमः
ॐ श्री मोक्ष-दायिन्यै नमः
ॐ श्री पर्ण-गेहायै नमः
ॐ श्री प्रिय-प्रीतायै नमः
ॐ श्री पर्ण-गेह-निवासिन्यै नमः ।।८०
ॐ श्री मणि-गेह-प्रदायै नमः
ॐ श्री मण्यायै नमः
ॐ श्री कौस्तुभायै नमः
ॐ श्री दिव्य-कारिकायै नमः
ॐ श्री चिन्ता-मण्यै नमः
ॐ श्री चिन्तनीयायै नमः
ॐ श्री चिन्तायै नमः
ॐ श्री अचिन्तायै नमः
ॐ श्री परायै नमः
ॐ श्री अपरायै नमः ।।९०
ॐ श्री मृत्युञ्जय-सख्यै नमः

ॐ श्री रामायै नमः
ॐ श्री रमा-रज्जवे नमः
ॐ श्री र-बीजषायै नमः
ॐ श्री राजेश्वर्यै नमः
ॐ श्री महा-मायायै नमः
ॐ श्री महा-कर्त्र्यै नमः
ॐ श्री कृतार्थदायै नमः
ॐ श्री कृतार्थायै नमः
ॐ श्री कण्ठजा-विद्यायै नमः ।।१००
ॐ श्री कमठायै नमः
ॐ श्री केल्यै नमः
ॐ श्री कालिकायै नमः
ॐ श्री केलिकोंलि-मय्यै नमः
ॐ श्री कुल्लायै नमः
ॐ श्री कुरु-कुल्लायै नमः
ॐ श्री कला-मय्यै नमः
ॐ श्री कलान्तायै नमः
ॐ श्री अन्तर्कला-प्रीतायै नमः
ॐ श्री पूर्णेश्यै नमः ।।११०
ॐ श्री पारद-प्रभायै नमः
ॐ श्री पालिन्यै नमः
ॐ श्री पोषिणी-पूर्वायै नमः
ॐ श्री पूर्वजायै नमः
ॐ श्री पूर्व-पूर्वजायै नमः
ॐ श्री पङ्क्तेश्यै नमः
ॐ श्री पञ्चमाशायै नमः
ॐ श्री साऽऽनन्दैक-प्रदा परायै नमः
ॐ श्री हंसायै नमः
ॐ श्री हंसेश्वर्यै नमः ।।१२०
ॐ श्री मुग्धायै नमः
ॐ श्री मोहदायै नमः

ॐ श्री मोह-लक्षणायै नमः
ॐ श्री मोहेश्वरी महा-मायायै नमः
ॐ श्री मल्लिकेश-प्रपूजितायै नमः
ॐ श्री मल्लिकार्जुन-मोहेश्यै नमः
ॐ श्री मल्लिकार्जुन-सेवितायै नमः
ॐ श्री मल्लिकार्जुन-सम्प्रीतायै नमः
ॐ श्री सर्वान्तायै नमः
ॐ श्री श्रीश्रिय-प्रदायै नमः ।।१३०
ॐ श्री देव-राज-समाराध्यायै नमः
ॐ श्री सर्व-देव-प्रियङ्कर्यै नमः
ॐ श्री स्पन्दजाद्यायै नमः
ॐ श्री महाऽऽद्याऽऽद्यायै नमः
ॐ श्री पूर्ण-ब्रह्मेश्वर्यै नमः
ॐ श्री ईश्वर्यै नमः
ॐ श्री शिवाराध्यायै नमः
ॐ श्री ईश्वरेश्यै नमः
ॐ श्री सर्वाङ्गायै नमः
ॐ श्री सङ्गमेश्वर्यै नमः ।।१४०
ॐ श्री सङ्गमायै नमः
ॐ श्री सङ्गजायै नमः
ॐ श्री सारायै नमः
ॐ श्री सङ्गमेश्वर-सेवितायै नमः
ॐ श्री सागरायै नमः
ॐ श्री सार-सोमेशायै नमः
ॐ श्री अमृतायै नमः
ॐ श्री पीयूष-पानपायै नमः
ॐ श्री शान्तायै नमः
ॐ श्री घूर्णितायै नमः ।।१५०
ॐ श्री अघोरायै नमः
ॐ श्री विह्वलायै नमः
ॐ श्री मदया मदायै नमः
ॐ श्री महाऽऽनन्दायै नमः
ॐ श्री विशालाक्ष्यै नमः
ॐ श्री पूर्णानन्द-प्रदायिन्यै नमः
ॐ श्री श्रीकृष्णायै नमः
ॐ श्री कृष्णावेश्यै नमः
ॐ श्री कृष्ण-मुक्त-करायै नमः
ॐ श्री अमलायै नमः ।।१६०
ॐ श्री पक्षानन्द-प्रदायै नमः
ॐ श्री पक्षायै नमः
ॐ श्री श्वेत-कृष्णाऽक्षरायै नमः
ॐ श्री अक्षरायै नमः
ॐ श्री वर्ण-बीजाक्षरी-मालायै नमः
ॐ श्री विश्व-वीजा महेश्वर्यै नमः
ॐ श्री ऋद्धि-मय्यै नमः
ॐ श्री सिद्धि-मय्यै नमः
ॐ श्री श्रद्धायै नमः
ॐ श्री ऋद्धि-सिद्धि-सनातन्यै नमः ।।१७०
ॐ श्री पूर्णा परेश्वर्यै नमः
ॐ श्री सिद्धायै नमः
ॐ श्री सिद्धि-मात्रे नमः
ॐ श्री स्वरेश्वर्यै नमः
ॐ श्री सनकानन्द-सन्देशायै नमः
ॐ श्री सनन्दात्म-काशदायै नमः
ॐ श्री सनातनायै नमः
ॐ श्री खण्डदा-सिद्ध्यै नमः
ॐ श्री सनत्-साधन-साधनायै नमः
ॐ श्री श्रीशिवायै नमः ।।१८०
ॐ श्री शङ्कराऽशेषायै नमः
ॐ श्री वृद्धाऽशेषायै नमः
ॐ श्री कन्यकायै नमः
ॐ श्री शून्यायै नमः

ॐ श्री शून्याति-रोमाभायै नमः
ॐ श्री अशून्यायै नमः
ॐ श्री शून्य-सुन्दर्यै नमः
ॐ श्री शून्याऽपि पराभासायै नमः
ॐ श्री भावनायै नमः
ॐ श्री भास-भासिन्यै नमः ।।१९०
ॐ श्री अरूपायै नमः
ॐ श्री रूपयाऽनन्ताऽपारायै नमः
ॐ श्री रूप-सुन्दर्यै नमः
ॐ श्री पूर्णाभायै नमः
ॐ श्री अपरा विद्यायै नमः
ॐ श्री परा पूर्णा परेश्वर्यै नमः
ॐ श्री कालायै नमः
ॐ श्री काल-मयी सिद्धायै नमः
ॐ श्री काल्यै नमः
ॐ श्री कर्ण-वर-प्रदायै नमः ।।२००
ॐ श्री आशा संक्षोभिणी मायायै नमः
ॐ श्री षोडशी मोहिन्यै नमः
ॐ श्री महायै नमः
ॐ श्री श्रीनाथोपासिता-प्रज्ञायै नमः
ॐ श्री श्रीशिवोपासिता क्रियायै नमः
ॐ श्री त्रि-मय्यै नमः
ॐ श्री पौरुषी मायायै नमः
ॐ श्री श्रीदुर्गायै नमः
ॐ श्री धारिणी-कलायै नमः
ॐ श्री माता मायिता भावाऽलङ्कारायै नमः ।।२१०
ॐ श्री भोगदा प्रियायै नमः
ॐ श्री पाणेशी जीवनायै नमः
ॐ श्री मृत्युर्यमेश्यै नमः
ॐ श्री मोक्षदा शिवायै नमः
ॐ श्री कुमार्यै नमः
ॐ श्री कुलजायै नमः

ॐ श्री कल्यायै नमः
ॐ श्री कृष्ण-कल्याण-कारिण्यै नमः
ॐ श्री अञ्जनायै नमः
ॐ श्री अञ्जनेश्यै नमः ।।२२०
ॐ श्री अञ्जनेश-प्रियङ्कर्यै नमः
ॐ श्री मयूरायै नमः
ॐ श्री मुरली-पूरायै नमः
ॐ श्री पक्ष-प्रीतायै नमः
ॐ श्री स-पक्षिण्यै नमः
ॐ श्री उन्मन्यै नमः
ॐ श्री उन्मनी-प्रीतायै नमः
ॐ श्री सोन्मनी परदा परायै नमः
ॐ श्री सौम्येश्यै नमः
ॐ श्री सदा शान्तायै नमः ।।२३०
ॐ श्री शान्त्यनन्तायै नमः
ॐ श्री करालिन्यै नमः
ॐ श्री विश्वाम्बायै नमः
ॐ श्री विश्वजायै नमः
ॐ श्री पुण्यायै नमः
ॐ श्री पुण्य-क्षेत्रायै नमः
ॐ श्री महा-यशायै नमः
ॐ श्री महा-पुण्य-करी कृत्यायै नमः
ॐ श्री कर्महा कर्मदा मुदायै नमः
ॐ श्री अनिलाऽनल-रूपायै नमः ।।२४०
ॐ श्री जला जालाऽधरा धरायै नमः
ॐ श्री शर्मदायै नमः
ॐ श्री नर्मदायै नमः
ॐ श्री नित्यायै नमः
ॐ श्री नित्य-रूपायै नमः
ॐ श्री महा-प्रभायै नमः
ॐ श्री अर्बुदायै नमः
ॐ श्री अर्चन-परायै नमः

ॐ श्री अर्चनानन्द-वर्द्धिन्यै नमः
ॐ श्री विश्वार्चन-पराऽलिङ्गायै नमः ।।२५०
ॐ श्री लिङ्ग-ज्ञानाङ्ग-चार्चिकायै नमः
ॐ श्री वेदिनी वेददा विद्यायै नमः
ॐ श्री सर्व-ज्ञान-प्रकल्पिन्यै नमः
ॐ श्री जालाकर्षिण्यै नमः
ॐ श्री विश्वेश्यै नमः
ॐ श्री विश्व-कर्षिणी तोषिण्यै नमः
ॐ श्री तोषिण्यै नमः
ॐ श्री पोषिणी कोषायै नमः
ॐ श्री कोषदायै नमः
ॐ श्री कोष-रक्षिण्यै नमः ।।२६०
ॐ श्री विद्या कोष-मयी कोषायै नमः
ॐ श्री कर्षिणी कोष-वर्द्धिन्यै नमः
ॐ श्री सम्वेदायै नमः
ॐ श्री विश्व-विज्ञानायै नमः
ॐ श्री सम्वित्-पर-प्रदाऽनघायै नमः
ॐ श्री कलि-कल्मषहा ज्ञानायै नमः
ॐ श्री सुन्दर्यै नमः
ॐ श्री सुन्दरेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बलि-बुद्धि-करा प्रज्ञायै नमः
ॐ श्री बलि-बुद्धि-विवर्द्धिन्यै नमः ।।२७०
ॐ श्री बल्याश्रय-प्रदाऽमोघायै नमः
ॐ श्री बलि-प्रज्ञा-प्रचोदिन्यै नमः
ॐ श्री ऐं-क्लीं-सौः मन्त्र-वर्णायै नमः
ॐ श्री मन्त्र-माताऽमृता सत्यै नमः
ॐ श्री यन्त्रा यन्त्री महा-तन्त्रा तन्त्र्यै नमः
ॐ श्री मन्त्र-फल-प्रदायै नमः
ॐ श्री सर्व-मन्त्र-स्वरूपायै नमः
ॐ श्री यन्त्रेषी यन्त्र-नायिकायै नमः
ॐ श्री सोऽहं हंसः-स्वरूपायै नमः
ॐ श्री अन्तर्विज्ञानदा प्रभायै नमः ।।२८०
ॐ श्री श्रीं ह्रीं क्रीं भासनायै नमः
ॐ श्री शक्तिरलङ्कारात्मगा प्रगायै नमः
ॐ श्री महा-विद्या परा पूर्णायै नमः
ॐ श्री दशा-रूपा दशेश्वर्यै नमः
ॐ श्री क-ए-इ-ल महा-मायायै नमः
ॐ श्री ह-स-क-ह-लात्म-नालिकायै नमः
ॐ श्री सकला परा मायायै नमः
ॐ श्री एक-तन्त्रात्म-नायिकायै नमः
ॐ श्री रसा रस-मयी बालायै नमः
ॐ श्री रस-पूर्णा रसेश्वरायै नमः ।।२९०
ॐ श्री रसेश्वर-परा पूर्णायै नमः
ॐ श्री रहस्यात्मा महेश्वर्यै नमः
ॐ श्री अलक्ष्यायै नमः
ॐ श्री लक्ष्यदा लक्ष्यायै नमः
ॐ श्री अलक्ष्याऽऽनन्ददा शुभायै नमः
ॐ श्री निरञ्जनायै नमः
ॐ श्री निरासीनायै नमः
ॐ श्री नक्षत्रा मण्डलाधिकायै नमः
ॐ श्री विश्व-मण्डल-सङ्काशायै नमः
ॐ श्री काशदा काश-नायिकायै नमः ।।३००
ॐ श्री सर्व-विश्वेश्वर्यै नमः
ॐ श्री मुक्तायै नमः
ॐ श्री मुक्ता-हार-प्रिया स्वधायै नमः ।।३०३

भगवती बाला-त्रिपुर-सुन्दरी के उक्त तीन सौ नाम-मन्त्र 'भुक्ति-मुक्ति' देनेवाले हैं। जो इन 'नाम'-मन्त्रों से 'पूजा-काल' में एकाग्र-चित्त होकर नित्य जप, पूजन-तर्पण, होम करता है उसे परम सिद्धि प्राप्त होती है, इसमें संशय नहीं।

❐❐❐

श्री बकारादि बाला-सहस्त्र-नाम-महा-मन्त्र-साधना

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-सहस्त्र-नाम-महा-मन्त्रस्य श्रीपर-ब्रह्म ऋषिः, आदि-माया छन्दः, श्रीबाला-त्रिपुरेश्वरी देवता, 'ऐं-ह्रीं-श्रीं-ऐं'-वीजं, 'ऐं-ह्रीं-श्रीं-ईं'-शक्तिः, 'ऐं-ह्रीं-श्रीं-लां'-कीलकं, श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे श्रीबकारादि बाला-सहस्त्र-नाम-जपे विनियोगः ।

(विशेष : सहस्त्र-नामावली के 'नाम'-मन्त्रों के 'जप' मात्र का अनुष्ठान करते समय उक्त विनियोग करना चाहिए । यदि 'नाम'-मन्त्रों के द्वारा 'पूजन' करना हो, तो 'जपे विनियोगः' के स्थान पर 'नाम-पूजने विनियोगः' पढ़ें और यदि पूजन के साथ 'तर्पण' भी करना हो, तो 'नाम-पूजने-तर्पणे च विनियोगः' पढ़ें । 'नाम'-मन्त्रों से होम करना हो, तो 'नाम-होमे विनियोगः' पढ़ें ।) ।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

श्रीपर-ब्रह्म-ऋषये नमः शिरसि, आदि-माया-छन्दसे नमः मुखे, श्रीबाला-त्रिपुरेश्वरी-देवतायै नमः हृदि, 'ऐं-ह्रीं-श्रीं-ऐं'-वीजाय नमः दक्ष-स्तने, 'ऐं-ह्रीं-श्रीं-ईं'-शक्तये नमः वाम-स्तने, 'ऐं-ह्रीं-श्रीं-लां'-कीलकाय नमः नाभौ, श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे श्रीबकारादि बाला-सहस्त्र-नाम-जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

(विशेष : ऊपर 'नाम'-मन्त्र द्वारा 'पूजन' करते समय 'नाम-जपे विनियोगाय नमः' के स्थान पर 'नाम-पूजने विनियोगाय नमः' और ' पूजन -तर्पण' दोनों करते समय 'नाम-पूजने-तर्पणे च विनियोगाय नमः' पढ़ें तथा 'हवन' करना हो, तो 'नाम-होमे विनियोगाय नमः' पढ़ें ।) ।

।। कर-न्यास ।।

'ॐ-ऐं-ह्रीं-श्रीं-ऐं' विराट्-पुरुषात्मिकायै 'श्रीं-ह्रीं-ऐं-ऐं' अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
'ॐ-ऐं-ह्रीं-श्रीं-ईं' श्रीपर-ब्रह्मेश्वर्यै 'श्रीं-ह्रीं-इं-ऐं-ईं' तर्जनीभ्यां स्वाहा ।
'ॐ-ऐं-ह्रीं-श्रीं-लां-श्रीं' श्रीअंगुष्ठ-मात्र-पुरुषात्मिकायै 'श्रीं-ह्रीं-ऐं-लां' मध्यमाभ्यां वषट् ।
'ॐ-ऐं-ह्रीं-श्रीं-लां-श्रीं' श्रीपञ्चदशी-त्रिकूट-मायायै 'श्रीं-ह्रीं-ऐं-लां' अनामिकाभ्यां हुम् ।
'ॐ-ऐं-ह्रीं-श्रीं-इं' प्रासाद-वीजायै 'श्रीं-ह्रीं-ऐं-ईं' कनिष्ठाभ्यां वौषट् ।
'ॐ-ऐं-ह्रीं-श्रीं-ऐं-श्रीं' महा-शक्ति-ज्ञानात्मिकायै 'श्रीं-ह्रीं-ऐं-ऐं' करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट् ।

।। अङ्ग-न्यास ।।

'ॐ-ऐं-ह्रीं-श्रीं-ऐं' विराट्-पुरुषात्मिकायै 'श्रीं-ह्रीं-ऐं-ऐं' हृदयाय नमः ।
'ॐ-ऐं-ह्रीं-श्रीं-ईं' पर-ब्रह्मेश्वर्यै 'श्रीं-ह्रीं-इं-ऐं-ईं' शिरसे स्वाहा ।
'ॐ-ऐं-ह्रीं-श्रीं-लां-श्रीं' अंगुष्ठ-मात्र-पुरुषात्मिकायै 'श्रीं-ह्रीं-ऐं-लां' शिखायै वषट् ।
'ॐ-ऐं-ह्रीं-श्रीं-लां-श्रीं' पञ्च-दशी-त्रिकूट-मायायै 'श्रीं-ह्रीं-ऐं-लां' कवचाय हुम् ।
'ॐ-ऐं-ह्रीं-श्रीं-इं' प्रासाद-वीजायै 'श्रीं-ह्रीं-ऐं-ईं' नेत्र-त्रयाय वौषट् ।
'ॐ-ऐं-ह्रीं-श्रीं-ऐं-श्रीं' महा-शक्ति-ज्ञानात्मिकायै 'श्रीं-ह्रीं-ऐं-ऐं' अस्त्राय फट् ।

॥ ध्यान ॥

'ऐं'-कार-सुपद्मक-मध्य-गता, 'क्लीं'-कार-विभूषित-नेत्र-पद्मा।
'सौ'-काराब्ज-विशालिनी च कूट-त्रया तु मनु-वर्ण-विराजिता ॥

॥ मानस-पूजन ॥

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीतये दर्शयामि नमः।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीतये निवेदयामि नमः।
ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

मन्त्र-ॐ नमो भगवति! 'ऐं-क्लीं-सौः' श्री महा-मूल-बीजे! मम भोग-मोक्षतां देहि ह्रीं नमस्ते ह्रीं स्वाहा ॥

नामावली-जप

ॐ श्री श्रीबालायै नमः
ॐ श्री बालिन्यै नमः
ॐ श्री बाल्यै नमः
ॐ श्री बाल-चन्द्र-सुफालिकायै नमः
ॐ श्री बालक्यै नमः
ॐ श्री बाल-वृन्दायै नमः
ॐ श्री बाल-सूर्य-सम-प्रभायै नमः
ॐ श्री बालिकायै नमः
ॐ श्री बक-हार्यै नमः
ॐ श्री बलाकाक्ष्यै नमः ॥१०
ॐ श्री बलायुधायै नमः
ॐ श्री बालेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बलासक्तायै नमः
ॐ श्री बल-धारायै नमः
ॐ श्री बल-प्रभायै नमः
ॐ श्री बल-वाहायै नमः
ॐ श्री बल-कार्यै नमः
ॐ श्री बकारार्थ-समन्वितायै नमः
ॐ श्री बन्धुक्यै नमः
ॐ श्री बन्धु-वर्गायै नमः ॥२०
ॐ श्री बन्धूक-कुसुमाननायै नमः
ॐ श्री बान्धव्यै नमः
ॐ श्री बन्धर्यै नमः
ॐ श्री बन्ध्यै नमः
ॐ श्री बम्भराक्ष्यै नमः
ॐ श्री बलाकिन्यै नमः
ॐ श्री बन्धु-पालायै नमः
ॐ श्री बन्धु-वृद्ध्यै नमः
ॐ श्री बम्भरालि-सुमालिकायै नमः
ॐ श्री बन्धुकाङ्ग्यै नमः ॥३०
ॐ श्री बाल-बीजायै नमः
ॐ श्री बीजाबीज-समन्वितायै नमः
ॐ श्री बीजेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बीज-रूपायै नमः
ॐ श्री बीज-मध्य-प्रवर्तिकायै नमः
ॐ श्री बीजाङ्गायै नमः
ॐ श्री बीज-मूलायै नमः
ॐ श्री बीज-तत्त्व-समायुतायै नमः
ॐ श्री बीज-योगायै नमः
ॐ श्री बीज-कवचायै नमः ॥४०

ॐ श्री बीज-नेत्रायै नमः
ॐ श्री बीज-भृते नमः
ॐ श्री बीजाक्षर-समायुक्त-मुख-चन्द्र-विराजितायै नमः
ॐ श्री बीज-नाभ्यै नमः
ॐ श्री बीज-जालायै नमः
ॐ श्री बीज-कण्ठ-विमण्डितायै नमः
ॐ श्री बीज-कन्दायै नमः
ॐ श्री बीज-मन्त्रायै नमः
ॐ श्री बीजेश्यै नमः
ॐ श्री बीज-नायिकायै नमः ।।५०
ॐ श्री बीजात्मिकायै नमः
ॐ श्री बीज-मूलायै नमः
ॐ श्री बीज-मूलेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बर्यै नमः
ॐ श्री बहिरन्तः-कलायै नमः
ॐ श्री बाह्यै नमः
ॐ श्री बहिरन्तर्निवासिन्यै नमः
ॐ श्री बहिः-कालायै नमः
ॐ श्री बहिर्भावायै नमः
ॐ श्री बहिरन्तः-पदावल्यै नमः ।।६०
ॐ श्री बहिरन्तर्याग-युक्तायै नमः
ॐ श्री बहिर्भूतायै नमः
ॐ श्री बहिः-स्वरायै नमः
ॐ श्री बहिर्वासायै नमः
ॐ श्री बहिर्मोहायै नमः
ॐ श्री बहिर्बीजायै नमः
ॐ श्री बडेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बन्धिन्यै नमः
ॐ श्री बाल-पंक्त्यै नमः
ॐ श्री बन्धाबन्ध-विवर्जितायै नमः ।।७०
ॐ श्री ब्रह्म्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्मायै नमः
ॐ श्री बलायै नमः
ॐ श्री बह्यायै नमः
ॐ श्री बद्धपास्य-प्रभञ्जन्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्मेश्वर्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-देव्यै नमः
ॐ श्री बकारान्तः-प्रवेशिकायै नमः
ॐ श्री बल-हस्तायै नमः
ॐ श्री बलोत्कर्षायै नमः ।।८०
ॐ श्री बर्बर्यै नमः
ॐ श्री बर्बरासनायै नमः
ॐ श्री बर्बराक्ष्यै नमः
ॐ श्री बर्बरेश्यै नमः
ॐ श्री बर्बासुर-विखण्डिन्यै नमः
ॐ श्री बुद्-बुद्यै नमः
ॐ श्री बुद्-बुदाभायै नमः
ॐ श्री बुद्-बुदाक्षर-संयुतायै नमः
ॐ श्री बृहन्नाम्न्यै नमः
ॐ श्री बृहद्-रोम-राजितायै नमः ।।९०
ॐ श्री बृहदीश्वर्यै नमः
ॐ श्री बालानल-समायुक्तायै नमः
ॐ श्री बाल-भूत-हरायै नमः
ॐ श्री बृह्यै नमः
ॐ श्री बृहन्निष्ठायै नमः
ॐ श्री वृहत्-कर्षायै नमः
ॐ श्री बृहन्मार्गायै नमः
ॐ श्री बुधेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बुध-वन्द्यायै नमः
ॐ श्री बुधासक्तायै नमः ।।१००
ॐ श्री बुध-शक्रादि-वन्दितायै नमः
ॐ श्री बुद्धिदायै नमः
ॐ श्री बुद्धिन्यै नमः
ॐ श्री बुद्ध्यै नमः
ॐ श्री बुद्धि-रूपा बृहन्निध्यै नमः
ॐ श्री बुद्ध्यात्मिकायै नमः

ॐ श्री बुद्धि-वासायै नमः
ॐ श्री बुद्धि-चार-समन्वितायै नमः
ॐ श्री बुद्धि-बीजायै नमः
ॐ श्री बृहन्निद्रायै नमः ।।११०
ॐ श्री बुद्धि-कृते नमः
ॐ श्री बुद्धि-वासिन्यै नमः
ॐ श्री बुद्धि-निष्ठायै नमः
ॐ श्री बुद्धि-सेव्यायै नमः
ॐ श्री बुद्धि-मात्रे नमः
ॐ श्री बुद्धक्यै नमः
ॐ श्री बुद्धि-मध्य-भवासक्तायै नमः
ॐ श्री बुद्धि-रूपा बोधिन्यै नमः
ॐ श्री बुद्ध-पुष्प-समायुक्त-वीर-मालायै नमः
ॐ श्री बुद्ध-विभूषितायै नमः ।।१२०
ॐ श्री बुद्धीश्वर्यै नमः
ॐ श्री बुद्धि-सिद्ध्यै नमः
ॐ श्री बल-दन्तायै नमः
ॐ श्री बहिर्निशायै नमः
ॐ श्री बलाक-दृष्टि-संराजायै नमः
ॐ श्री बल-पक्षि-महाऽऽसनायै नमः
ॐ श्री बलेश्वर-महा-साल्वायै नमः
ॐ श्री बलभी-नारसिंहिकायै नमः
ॐ श्री बल-शरभायै नमः
ॐ श्री बला-मालायै नमः ।।१३०
ॐ श्री बल-कारायै नमः
ॐ श्री बलोदर्यै नमः
ॐ श्री बाहु-विंशत् -समायुक्तायै नमः
ॐ श्री बाहु-सर्प-समन्वितायै नमः
ॐ श्री बाहु-भूषायै नमः
ॐ श्री बाहु-कीलायै नमः
ॐ श्री बहिरन्तर्यशः-प्रदायै नमः
ॐ श्री बहिः-पद्मायै नमः
ॐ श्री बहिः-सूर्यायै नमः
ॐ श्री बहिरन्तः-क्रिया-युतायै नमः ।।१४०
ॐ श्री बकाराक्षर-संयुक्तायै नमः
ॐ श्री बाल-विष्णु-शिवेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बगलास्यायै नमः
ॐ श्री बलाकारायै नमः
ॐ श्री बगला-शक्ति-सेवितायै नमः
ॐ श्री बङ्गायै नमः
ॐ श्री बङ्गालिक्यै नमः
ॐ श्री बङ्ग्यै नमः
ॐ श्री बङ्गाल्यै नमः
ॐ श्री बङ्ग-रूपिण्यै नमः ।।१५०
ॐ श्री बङ्ग-बीजायै नमः
ॐ श्री बङ्ग-जिह्वायै नमः
ॐ श्री बङ्ग-कीलक-संयुतायै नमः
ॐ श्री बङ्ग-मन्त्रायै नमः
ॐ श्री बङ्ग-यन्त्रायै नमः
ॐ श्री बङ्ग-तन्त्रायै नमः
ॐ श्री बङ्गिन्यै नमः
ॐ श्री बङ्ग-भङ्ग-समाहार्यै नमः
ॐ श्री बिन्दु-रूपायै नमः
ॐ श्री बिलेशिकायै नमः ।।१६०
ॐ श्री बिल्ब-प्रभायै नमः
ॐ श्री बिल्ब-पत्रायै नमः
ॐ श्री बिन्दु-मध्य-सुचारिण्यै नमः
ॐ श्री बिल्ब-मुक्ताम्बिकेशायै नमः
ॐ श्री बिल्ब-पर्ण-सुमालिकायै नमः
ॐ श्री बाल-हन्त्र्यै नमः
ॐ श्री बला-नार्यै नमः
ॐ श्री बाल-वृद्ध-प्रपालिन्यै नमः
ॐ श्री बिम्ब-दन्तायै नमः
ॐ श्री बिम्ब-रूपायै नमः ।।१७०
ॐ श्री बिम्ब-मध्य-विहारिण्यै नमः
ॐ श्री बिम्बोष्ठ्यै नमः

ॐ श्री बिम्ब-हर्त्र्यै नमः
ॐ श्री बिम्ब-नेत्रायै नमः
ॐ श्री बिम्ब-भृते नमः
ॐ श्री बिम्बाबिम्ब-विसर्जायै नमः
ॐ श्री बिम्बेश्वर-विमोहिन्यै नमः
ॐ श्री बिम्बासुर-हरायै नमः
ॐ श्री बिभ्रयै नमः
ॐ श्री बिभ्राण्यै नमः ।।१८०
ॐ श्री बिभ्र-मालिकायै नमः
ॐ श्री बिभ्राणि-तनगायै नमः
ॐ श्री बिस्यै नमः
ॐ श्री बिभ्रच्चक्रायै नमः
ॐ श्री बिलायुधायै नमः
ॐ श्री बिलेश्वर-समावन्द्यायै नमः
ॐ श्री बिल्व-मूल-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री बिल्व-मध्यायै नमः
ॐ श्री बिल्वकाग्रायै नमः
ॐ श्री बृन्दावन-विहारिण्यै नमः ।।१९०
ॐ श्री बृन्देश्यै नमः
ॐ श्री बृन्द-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री बृन्दाबृन्द-समन्वितायै नमः
ॐ श्री बृन्द-बीजायै नमः
ॐ श्री बृन्द-मूलायै नमः
ॐ श्री बृन्दी-कृत-सुकायै नमः
ॐ श्री बण्यै नमः
ॐ श्री बृन्देश्वर्यै नमः
ॐ श्री बृन्द-मालायै नमः
ॐ श्री बृन्दावन-वनेश्वर्यै नमः ।।२००
ॐ श्री बृन्दावनस्था-देवेश्यै नमः
ॐ श्री बृन्दाबृन्द-करेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बृन्दावन्यै नमः
ॐ श्री बृन्द-केश्यै नमः
ॐ श्री बृन्दि-तालक-संयुतायै नमः
ॐ श्री बृन्दासुर-वधोत्कर्षायै नमः
ॐ श्री बृन्दावन-शिरवान्तरायै नमः
ॐ श्री बृन्द-वृक्ष-समायुक्त-हस्त-पद्म-विराजितायै नमः
ॐ श्री बिसासक्तायै नमः
ॐ श्री बिसाचारायै नमः ।।२१०
ॐ श्री बिस-मन्त्रायै नमः
ॐ श्री बिसेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बिस-हस्तायै नमः
ॐ श्री बिसाकारायै नमः
ॐ श्री बिस-सद्भाव-कारिण्यै नमः
ॐ श्री बिस-मूलायै नमः
ॐ श्री बिसोत्कर्षायै नमः
ॐ श्री बिसाबिस-गणेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बिस-तन्तु-तनीयाभायै नमः
ॐ श्री बिस-पल्लव-पादुकायै नमः ।।२२०
ॐ श्री बृहत्-कुम्भ-स्तन-द्वन्द्वायै नमः
ॐ श्री बृहत्यै नमः
ॐ श्री बृहि-धारिण्यै नमः
ॐ श्री बृहत्कार्यै नमः
ॐ श्री बृहच्छत्रायै नमः
ॐ श्री बृहद्वीरायै नमः
ॐ श्री बृहीश्वर्यै नमः
ॐ श्री बुध-राजेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बृङ्क्षायै नमः
ॐ श्री बृङ्क्षाबृङ्क्ष-गणेश्वर्यै नमः ।।२३०
ॐ श्री बुधावतारिण्यै नमः
ॐ श्री बृञ्ज्यै नमः
ॐ श्री बृङ्क्ष-सर्प-विमालिन्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-निष्ठायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-तत्त्वायै नमः
ॐ श्री ब्रह्माब्रह्म-विचारिण्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-शब्दायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-कीर्त्यै नमः

ॐ श्री ब्रह्माण्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-शक्तिन्यै नमः ।।२४०
ॐ श्री ब्रह्मेश्वर्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-मात्रे नमः
ॐ श्री ब्रह्म-बीजायै नमः
ॐ श्री बहू-दयायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-पादायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-वन्द्यायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-तत्त्वार्थ-वादिन्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्मेश्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्मर्यै नमः
ॐ श्री ब्राह्म्यै नमः ।।२५०
ॐ श्री ब्रह्माण्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-जीविकायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-प्राण-महा-शक्त्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्मण्येश्वर-वन्दितायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-पुत्र्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-भार्यायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-मायायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-भृते नमः
ॐ श्री ब्रह्म-वक्त्र-निवासायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-शब्द-मयात्मिकायै नमः ।।२६०
ॐ श्री ब्रह्म-लोक-समावासायै नमः
ॐ श्री ब्रह्मादि-शिव-सेवितायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-कमण्डलु-भूतायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-विद्या-समायुतायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-विद्यात्मिकायै नमः
ॐ श्री ब्राङ्ग्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-बोध-प्रबोधिन्यै नमः
ॐ श्री बोध्यै नमः
ॐ श्री बोधेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बोधायै नमः ।।२७०
ॐ श्री बोधिन्यै नमः
ॐ श्री बोध-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री बोधान्तस्थायै नमः
ॐ श्री बोध-नित्यायै नमः
ॐ श्री बोध-शृक्तायै नमः
ॐ श्री बोध-भृते नमः
ॐ श्री बोध-नेत्र-सहस्त्रायै नमः
ॐ श्री बोधेश्यै नमः
ॐ श्री बोध-हेलिकायै नमः
ॐ श्री बोध-बीजायै नमः ।।२८०
ॐ श्री बोध-कालायै नमः
ॐ श्री बोधाबोध-विवर्जितायै नमः
ॐ श्री बोध-मुक्तेश्वरासक्तायै नमः
ॐ श्री बोधघ्नायै नमः
ॐ श्री बोध-दायिन्यै नमः
ॐ श्री बोध-मात्रे नमः
ॐ श्री बोध-पूर्णायै नमः
ॐ श्री बोध-शक्ति-समन्वितायै नमः
ॐ श्री बोधवत्यै नमः
ॐ श्री बोध-वचायै नमः ।।२९०
ॐ श्री बोधी-कृत-सुशब्दिन्यै नमः
ॐ श्री बोधितेन्द्र-समावेशायै नमः
ॐ श्री बोधाबोध-परायिण्यै नमः
ॐ श्री बोध-राक्षस-संहर्त्र्यै नमः
ॐ श्री बोध-बीज-निपातिन्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-रक्षः-समाकर्षायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-राक्षस-मोहिन्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-रक्षः-समावेशायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-राक्षस किङ्करायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-रक्षो-महोच्चाटायै नमः ।।३००
ॐ श्री ब्रह्म-राक्षस-मारिण्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-रक्षो-महा-स्तम्भ्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-राक्षस-रक्तपायै नमः
ॐ श्री ब्रह्मेश्यै नमः

ॐ श्री ब्राह्मणासक्तायै नमः
ॐ श्री ब्राह्मणस्थायै नमः
ॐ श्री बाण-भृते नमः
ॐ श्री ब्रह्मेश्वर-समासेव्यायै नमः
ॐ श्री ब्राह्मण-प्रिय-मानस्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-गन्धायै ।।३१०
ॐ श्री ब्रह्म-धूपायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-पूजायै नमः
ॐ श्री बलङ्कर्यै नमः
ॐ श्रीब्रह्म-विष्णु-महादेव-परब्रह्म-मयात्मिकायैनमः
ॐ श्री ब्रह्म-किन्नर-गन्धर्व-यक्ष-भूत-ग्रहेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बाणाधारायै नमः
ॐ श्री बाण-मध्यायै नमः
ॐ श्री बाण-पृष्ठ-विराजितायै नमः
ॐ श्री बाणेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बाण-वासायै नमः ।।३२०
ॐ श्री बाण-लिङ्ग-धराऽम्बिकायै नमः
ॐ श्री बाण-लिङ्गेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बाण्यै नमः
ॐ श्री बाणिन्यै नमः
ॐ श्री बाण-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री बाण-हस्तायै नमः
ॐ श्री बाण-चक्रायै नमः
ॐ श्री बाणीरासन-मण्डितायै नमः
ॐ श्री बाणिर्यै नमः
ॐ श्री बाण-बीजायै नमः ।।३३०
ॐ श्री बाण-सिंह-हरार्पितायै नमः
ॐ श्री बाणीरेश्यै नमः
ॐ श्री बाण-तन्त्रायै नमः
ॐ श्री बाण-मन्त्र-विमोहिन्यै नमः
ॐ श्री बाण-मन्त्र-सुनाम्न्यै नमः
ॐ श्री बाणासुर-विमर्द्दिन्यै नमः
ॐ श्री बाणासुर-हरेशान्यै नमः
ॐ श्री बाणा-बाण-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री बाणाकारायै नमः
ॐ श्री बाण-वदन्यै नमः ।।३४०
ॐ श्री बाणानन्द-प्रदायिन्यै नमः
ॐ श्री बाण-मूर्ति-समुत्कर्षायै नमः
ॐ श्री बाण-शम्भु-सुपृष्ठकायै नमः
ॐ श्री बदर्यै नमः
ॐ श्री बद-रूपायै नमः
ॐ श्री बदर्यर्थ-समायुतायै नमः
ॐ श्री बधिर्यै नमः
ॐ श्री बद-वासायै नमः
ॐ श्री बादरायण-पूजितायै नमः
ॐ श्री बाद-नारायण्यै नमः ।।३५०
ॐ श्री बन्द्यै नमः
ॐ श्री बण्डावलि-विराजितायै नमः
ॐ श्री बण्डेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बण्ड-बीजायै नमः
ॐ श्री बद्रि-नारायणार्चितायै नमः
ॐ श्री बदरेश्वर-सम्वन्द्यायै नमः
ॐ श्री बदरी-वन-वासिन्यै नमः
ॐ श्री बदरी-फल-कुञ्चाङ्गायै नमः
ॐ श्री बदरी-फल-सम्प्रियायै नमः
ॐ श्री बृन्दावन-समारूढायै नमः ।।३६०
ॐ श्री बड-काष्ठ-मयायै नमः
ॐ श्री बण्डासुर-वधोद्युक्तायै नमः
ॐ श्री बण्ड-हाल-हलायुधायै नमः
ॐ श्री बिम्बाक्ष्यै नमः
ॐ श्री बिन्दिन्यै नमः
ॐ श्री बिन्द्यै नमः
ॐ श्री बिन्द्व्यै नमः
ॐ श्री बिन्दु-कलात्मिकायै नमः
ॐ श्री बहु-रूपायै नमः
ॐ श्री बहूत्साहायै नमः ।।३७०

ॐ श्री बहु-मन्त्रायै नमः
ॐ श्री बहु-प्रियायै नमः
ॐ श्री बहु-वादायै नमः
ॐ श्री बहुच्छायायै नमः
ॐ श्री बहु-वार्तायै नमः
ॐ श्री बह्वै नमः
ॐ श्री बहु-बीजायै नमः
ॐ श्री बलेशान्यै नमः
ॐ श्री बहु-कीर्त्यै नमः
ॐ श्री बहु-धरायै नमः ।।३८०
ॐ श्री बहु-योगायै नमः
ॐ श्री बिन्दु-वर्गायै नमः
ॐ श्री बिन्दायै नमः
ॐ श्री बिन्दु-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री बिन्दु-शत्रु-ललापानायै नमः
ॐ श्री बैन्दवासन-रञ्जितायै नमः
ॐ श्री बिन्दु-मण्डल-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री बिन्दुस्यै नमः
ॐ श्री बिन्दु-मालिन्यै नमः
ॐ श्री बिन्दु-युक्त-समावर्णायै नमः ।।३९०
ॐ श्री बिन्दु-सर्ग-विमातृकायै नमः
ॐ श्री बीज-कूट-त्रयायै नमः
ॐ श्री बीज्यै नमः
ॐ श्री बीजेश्वर-सुवाहिन्यै नमः
ॐ श्री बीजासुर-मांस-खण्डायै नमः
ॐ श्री बीजानन्द-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ श्री बीज-नाथायै नमः
ॐ श्री बीज-क्रूरायै नमः
ॐ श्री बीजङ्कर-विवन्दितायै नमः
ॐ श्री बीज-पूरायै नमः ।।४००
ॐ श्री बीज-पूर्णायै नमः
ॐ श्री बुण्ड-दण्ड-विधारिण्यै नमः
ॐ श्री बूर्णायै नमः
ॐ श्री बूर्ण-स्वरूपायै नमः
ॐ श्री बूर्ण-ब्रह्म-महा-ध्वजायै नमः
ॐ श्री बृहन्नाथायै नमः
ॐ श्री बृहद्-विश्वायै नमः
ॐ श्री बृहदग्नि-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री बृहद्-भूमि-धरायै नमः
ॐ श्री बूर्ण्यै नमः ।।४१०
ॐ श्री बूर्णीताक्षर-मालिकायै नमः
ॐ श्री बूर्णिकायै नमः
ॐ श्री बूसणारायै नमः
ॐ श्री ब्रष-हस्ता-कुलेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बाणालङ्कार-देहायै नमः
ॐ श्री बाणानन्दन-वाहिन्यै नमः
ॐ श्री बलि-प्रियायै नमः
ॐ श्री बलादेशायै नमः
ॐ श्री बलि-हस्त-द्वयान्वितायै नमः
ॐ श्री बलि-कालायै नमः ।।४२०
ॐ श्री बल्हि-रात्र्यै नमः
ॐ श्री बलि-भक्षण-मण्डितायै नमः
ॐ श्री बलि-धर्मायै नमः
ॐ श्री बहिः-सोमायै नमः
ॐ श्री बलि-मित्रायै नमः
ॐ श्री बलाननायै नमः
ॐ श्री बलि-विश्व-मनोराजायै नमः
ॐ श्री बल्यन्तर-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री बलि-नियमायै नमः
ॐ श्री बहिर्मुण्डायै नमः ।।४३०
ॐ श्री बहु-सर्प-विष-प्रियायै नमः
ॐ श्री बहिर्मुण्डाबर्हिः-क्षुरायै नमः
ॐ श्री बाला-मणि-विपूजितायै नमः
ॐ श्री बद्ध-मुक्ता-फलाङ्गायै नमः
ॐ श्री बिम्ब-विद्रुम-मण्डितायै नमः
ॐ श्री बलाक-गुरु-सन्मार्गायै नमः

ॐ श्री बल-वद्-गुरु-वन्दितायै नमः
ॐ श्री बलावत्यै नमः
ॐ श्री बला-शक्त्यै नमः
ॐ श्री बक-जृम्भ-विमर्दिन्यै नमः ।।४४०
ॐ श्री बन्ध-चक्रेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बाण्यै नमः
ॐ श्री बाणाबाण-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री बाण-मध्योदकायै नमः
ॐ श्री बाहायै नमः
ॐ श्री बल-वद्-गरुडासनायै नमः
ॐ श्री बल-वद्-वृषभारूढायै नमः
ॐ श्री बल-वद्-राज-हंसिकायै नमः
ॐ श्री बकिन्यै नमः
ॐ श्री बाकिन्यै नमः ।।४५०
ॐ श्री ब्रान्दायै नमः
ॐ श्री बाकिनी-गण-सेवितायै नमः
ॐ श्री बिकिन्यै नमः
ॐ श्री ब्रङ्किन्यै नमः
ॐ श्री ब्रन्ध्यै नमः
ॐ श्री बङ्गालाङ्ग-समन्वितायै नमः
ॐ श्री ब्लुकिनी ब्लुङ्किन्यै नमः
ॐ श्री ब्लुङ्क्यै नमः
ॐ श्री बुकिनी बृन्दह-वन्दितायै नमः
ॐ श्री ब्लुङ्किन्यै नमः ।।४६०
ॐ श्री बैकिन्यै नमः
ॐ श्री बङ्गी बङ्गालाक्षर-युक्तिन्यै नमः
ॐ श्री ब्लोङ्किन्यै नमः
ॐ श्री ब्लौङ्किन्यै नमः
ॐ श्री ब्लुञ्च्यै नमः
ॐ श्री बौकिनी-जाल-सन्नुता बङ्किन्यै नमः
ॐ श्री बबुन्यै नमः
ॐ श्री बाक्ष्यै नमः
ॐ श्री बक्षासुर-विभेदिन्यै नमः

ॐ श्री ब्लुङ्कार-मूर्ति-संराजायै नमः ।।४७०
ॐ श्री ब्लुं-ब्लुन्धार-सुमण्डितायै नमः
ॐ श्री बक-योग-समाख्यातायै नमः
ॐ श्री बादि-लान्त-समन्वितायै नमः
ॐ श्री बेत्यै नमः
ॐ श्री बेतालिकायै नमः
ॐ श्री बेन्यै नमः
ॐ श्री बेताल्यै नमः
ॐ श्री बेन-रूपिकायै नमः
ॐ श्री बेतालिन्यै नमः
ॐ श्री बेत-वासायै नमः ।।४८०
ॐ श्री बेताबेत-समायुतायै नमः
ॐ श्री बेतालाक्षायै नमः
ॐ श्री बेत-नासायै नमः
ॐ श्री बेताल-प्रमुखेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बेताल-वीजायै नमः
ॐ श्री बेतालायै नमः
ॐ श्री बेधाबेध-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री बुद्धि-तारायै नमः
ॐ श्री ब्लुङ्कारायै नमः
ॐ श्री ब्लुङ्काब्लुङ्क-विचारिण्यै नमः ।।४९०
ॐ श्री ब्लुङ्क-केश्यै नमः
ॐ श्री ब्लेङ्क-वासायै नमः
ॐ श्री ब्लंहिङ्कार-समन्वितायै नमः
ॐ श्री बं-हुङ्कार-मुख्यै नमः
ॐ श्री बाच्यै नमः
ॐ श्री ब्लोङ्कारासक्त-मानसायै नमः
ॐ श्री बड-वीजेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बायायै नमः
ॐ श्री बडवानल-लोचन्यै नमः
ॐ श्री बिन्दु-बाल्यै नमः ।।५००
ॐ श्री बंग्य-कूर्मायै नमः
ॐ श्री बंग्याबंग्य-सुमच्छिकायै नमः

ॐ श्री बंग्य-पीठ-समावासायै नमः
ॐ श्री बंग्य-वर्णोऽनुकूलिन्यै नमः
ॐ श्री बङ्गेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बङ्ग-नित्यायै नमः
ॐ श्री बंग्य-सिंह-सुवाहनायै नमः
ॐ श्रीबींग्य-कीलक-संयुक्त-ऋषिछन्दोऽनुकूलिकायैनमः
ॐ श्री बेलक्यै नमः
ॐ श्री बेल-नेत्रायै नमः ।।५१०
ॐ श्री बिड-लक्षण-संयुतायै नमः
ॐ श्री बिंढ्य-बीजायै नमः
ॐ श्री बिंढ्य-नाड्यै नमः
ॐ श्री विंढ्याविंढ्य-प्रवर्तिकायै नमः
ॐ श्री बडाभय-धरायै नमः
ॐ श्री बिल्यै नमः
ॐ श्री बिल्व-केशानु-वन्दितायै नमः
ॐ श्री बिभ्रणीत-सम्पवर्गायै नमः
ॐ श्री विभ्राभ्राकाश-वाहिन्यै नमः
ॐ श्री बिभ्रश्र-बकुपालाख्यायै नमः ।।५२०
ॐ श्री बन्द्यै नमः
ॐ श्री बादि-सुवर्णिन्यै नमः
ॐ श्री बीज-लक्ष-समाख्यातायै नमः
ॐ श्री बीज-युक्त-शिरो-युतायै नमः
ॐ श्री बीज-मन्त्र-समालाख्यायै नमः
ॐ श्री बीजाबीजात्मिकायै नमः
ॐ श्री बज्यै नमः
ॐ श्री बर्हिर्बर्हिण्यै नमः
ॐ श्री बर्हायै नमः
ॐ श्री बर्हाक्ष्यै नमः ।।५३०
ॐ श्री बर्हि-मण्डलायै नमः
ॐ श्री बर्हि-धारायै नमः
ॐ श्री बर्हि-वज्रायै नमः
ॐ श्री बर्हि-भूत-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री बाला-बाल-प्रबोधायै नमः
ॐ श्री बर्हि-चूडामणि-स्तुतायै नमः
ॐ श्री बाजक्यै नमः
ॐ श्री बञ्ज-रूपायै नमः
ॐ श्री बञ्ज-दम्भ-प्रहारिण्यै नमः
ॐ श्री बिन्तकास्यै नमः ।।५४०
ॐ श्री बीज-कीलायै नमः
ॐ श्री बीलाबील-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री बिंधदायै नमः
ॐ श्री ब्राङ्क्ण्यै नमः
ॐ श्री ब्रङ्ग्यै नमः
ॐ श्री ब्रङ्गाङ्गासक्त-मङ्गलायै नमः
ॐ श्री बिव्युकण्टायै नमः
ॐ श्री बिसु-हारायै नमः
ॐ श्री बिण्डीरादि-समन्वितायै नमः
ॐ श्री बलि-भिघ्नायै नमः ।।५५०
ॐ श्री बिडी-क्रूरायै नमः
ॐ श्री बैड-तन्त्र-समन्वितायै नमः
ॐ श्री बन्धुर्यै नमः
ॐ श्री बन्ध-बान्धाल्यै नमः
ॐ श्री बन्ध-राज-बलेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बलभद्र्यै नमः
ॐ श्री बलेच्छायै नमः
ॐ श्री बलभद्र-प्रयोगिन्यै नमः
ॐ श्री बलभद्र-सुमात्रायै नमः
ॐ श्री बलभद्र-सहोदर्यै नमः ।।५६०
ॐ श्री बलभद्र-प्रियायै नमः
ॐ श्री बाड्धिर्बाध्याबाध्य-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री बलभद्रेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बल्यै नमः
ॐ श्री बलराकार-मण्डितायै नमः
ॐ श्री बलोत्कृष्टायै नमः
ॐ श्री बलोद्भोजायै नमः
ॐ श्री बल-शत्रु-निकृन्तिन्यै नमः

ॐ श्री बलरामेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बाल्यायै नमः ।।५७०
ॐ श्री बाल्याबाल्य-विनोदिन्यै नमः
ॐ श्री बलराम-प्रियायै नमः
ॐ श्री ब्रङ्क्यै नमः
ॐ श्री ब्रङ्किणी-गण-मध्यगायै नमः
ॐ श्री बल-राज-बहिष्कार्यै नमः
ॐ श्री बहिष्कारेश्वरार्चितायै नमः
ॐ श्री बहिष्कारी-कृता-देवायै नमः
ॐ श्री बहिष्कारासनेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बहिष्कृत-महा-भूतायै नमः
ॐ श्री बहिरन्तः-प्रदीपिकायै नमः ।।५८०
ॐ श्री बहु-सम्वित्-समायुक्त-पाणये नमः
ॐ श्री बहु-चक्र-विराजितायै नमः
ॐ श्री ब्लाङ्कार्यै नमः
ॐ श्री ब्ल्याङ्कार्यै नमः
ॐ श्री बांबींब्ल्यंब्ल्य-बीज-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री ब्राह-कार्यै नमः
ॐ श्री ब्रुन्धराकार्यै नमः
ॐ श्री बखगाक-सुवर्णिकायै नमः
ॐ श्री ब्लङ्क्निन्यै नमः
ॐ श्री ब्लाङ्क्निन्यै नमः ।।५९०
ॐ श्री ब्लुङ्क्यै नमः
ॐ श्री ब्लुङ्क-श्रीगण-सेवितायै नमः
ॐ श्री ब्लीकिन्यै नमः
ॐ श्री ब्लीङ्क्निन्यै नमः
ॐ श्री ब्लींग्र्यै नमः
ॐ श्री ब्लुङ्कही-गण-वन्दितायै नमः
ॐ श्री ब्रङ्क्टियै नमः
ॐ श्री ब्राङ्क्टियै नमः
ॐ श्री ब्रण्ट्यै नमः
ॐ श्री ब्रङ्किणी-नुत-पादिन्यै नमः ।।६००
ॐ श्री ब्रिङ्क्टियै नमः
ॐ श्री ब्रीङ्क्टियै नमः
ॐ श्री ब्रुण्ड्यै नमः
ॐ श्री ब्रुंकुट्यै नमः
ॐ श्राी ब्रुकुट्यै नमः
ॐ श्री ब्रेङ्क्टियै नमः
ॐ श्री ब्रैकिन्यै नमः
ॐ श्री बंक्लीं-धारिण्यै नमः
ॐ श्री ब्रुग-मालिन्यै नमः
ॐ श्री ब्रौङ्क्टियै नमः ।।६१०
ॐ श्री ब्रौङ्क्निन्यै नमः
ॐ श्री ब्रमै-धारिण्यै नमः
ॐ श्री बिल्व-लोचन्यै नमः
ॐ श्री ब्रङ्क्निन्यै नमः
ॐ श्री ब्राहिकासक्तायै नमः
ॐ श्री ब्रःकीट्यै नमः
ॐ श्री बुकु-कुण्डल्यै नमः
ॐ श्रीबुत्-कुण्डल-करासक्त-मनोबुद्धि-विराजितायैनमः
ॐ श्री बीङ्कल-ह्रीं-धारिण्यै नमः
ॐ श्री बीन्यै नमः ।।६२०
ॐ श्री बङ्कल ह्रीं-विधारिण्यै नमः
ॐ श्री बाक-पंक्ति-समावाहायै नमः
ॐ श्री बाक-पंक्ति-श्रीं ह्रीं ऐं कं-विधारिण्यै नमः
ॐ श्री बहु-सम्पत्-समाध्यातायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-कल्पामृतेश्वर्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-शास्त्र-समामोहायै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-कर्मानुमण्डितायै नमः
ॐ श्री बार्वासन-समाख्यातायै नमः
ॐ श्री बुल-जाल-प्रमोहिकायै नमः
ॐ श्री बहु-मासायै नमः ।।६३०
ॐ श्री बाह्व्यै नमः
ॐ श्री बान्ध्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-पुत्रादि-पूजितायै नमः
ॐ श्री बालाकिन्यै नमः

ॐ श्री बाक-सह-मूल-बीजाक्षर्यै नमः
ॐ श्री वेदी-कृत-महा-द्वीपायै नमः
ॐ श्री बें-बैं-बों-भूः-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ श्री बाङ्कर्यै नमः
ॐ श्री बङ्क-अंकुरायै नमः
ॐ श्री ब्लों-ब्लौं-ब्लं-ब्लः-स्वरूपिण्यै नमः ।।६४०
ॐ श्री बिल-ताल-प्रभावा-मायै नमः
ॐ श्री ब्लांद्री-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ श्री बुभू-रक्षा-करायै नमः
ॐ श्री बुर्बिर्बुक्र-कङ्ख-हनु-क्रियायै नमः
ॐ श्री बुररेश्यै नमः
ॐ श्री बुरकाक्ष्यै नमः
ॐ श्री बुभुसा-बुल्क-धारिण्यै नमः
ॐ श्री बलमानु-प्रवर्णायै नमः
ॐ श्री बादि-डान्त-सुबीजकायै नमः
ॐ श्री ब्लुहु-हाहा-हुहु-धारायै नमः ।।६५०
ॐ श्री ब्ली-हीहा-हेह-बीजकायै नमः
ॐ श्री ब्लें-हेहो-हहकी-बीजायै नमः
ॐ श्री ब्लें-ल्हां-माकाग-धारिण्यै नमः
ॐ श्री बद्रकी-गण-संराज्यै नमः
ॐ श्री बद्र-रूपायै नमः
ॐ श्री बकायन्यै नमः
ॐ श्री बीजाघोरायै नमः
ॐ श्री बीज-कासायै नमः
ॐ श्री बीज-गौण-गणेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बाहु-वली-चतुर्युक्तायै नमः ।।६६०
ॐ श्री बुम्बुर्यै नमः
ॐ श्री बुम्बुरेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बुम्बराख्या-महा-नाम्न्यै नमः
ॐ श्री बुरीकानु-कूलिकायै नमः
ॐ श्री बृहस्पति-समा-वन्द्यायै नमः
ॐ श्री बुध्य-गन्धानु-कीलक्यै नमः
ॐ श्री बुध्यक्यै नमः

ॐ श्री बुध्यकेशायै नमः
ॐ श्री बुद्धी-कृत-सुवेणिकायै नमः
ॐ श्री बलायमान-कोपायै नमः ।।६७०
ॐ श्री बलि-कन्या-सुतेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बलिकारायै नमः
ॐ श्री ब्रध्वावाहायै नमः
ॐ श्री व्यंग्मंहंहुं-विधारिण्यै नमः
ॐ श्री बकलद्री-महा-रूपायै नमः
ॐ श्री बींकलद्रीङ्क-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री बोकलद्रौं-निराभासायै नमः
ॐ श्री बङ्कलद्रीं-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ श्री ब्लुङ्कलद्री-कृताकारायै नमः
ॐ श्री बुंसौः-ॐकार-रूपिण्यै नमः ।।६८०
ॐ श्री बिकलद्रां-कृताकारायै नमः
ॐ श्री बिन्द्रायै नमः
ॐ श्री बीं-बीज-वेक्षिकायै नमः
ॐ श्री ऐं-क्लीं-सौः-महा-बीजायै नमः
ॐ श्री सौः-क्लीं-ऐं-वेश्म-धारिण्यै नमः
ॐ श्री बीण्डवाल्यै नमः
ॐ श्री विण्डोत्कृष्टा-सुर्बीड-द्रव-संयुतायै नमः
ॐ श्री बीढ्य-तालु-सुमूलायै नमः
ॐ श्री बिम्बीढ्यै नमः
ॐ श्री बार्यै नमः ।।६९०
ॐ श्री बिकालिकायै नमः
ॐ श्री बिम्भक्ष-कीटि-चन्द्रार्कायै नमः
ॐ श्री बिम्भाबिम्भ-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री बिलह-कलायै नमः
ॐ श्री बिभ्रि-कालायै नमः
ॐ श्री बिम्भ-शेखर-सन्नुतायै नमः
ॐ श्री ब्रत्किसोर्ड-बिल-कोट्यै नमः
ॐ श्री बद्रि-पद्मासन-स्थितायै नमः
ॐ श्री ब्रल-धुरायै नमः
ॐ श्री ब्रल-छुध्नायै नमः ।।७००

ॐ श्री बृण-कृते नमः
ॐ श्री बाकषी-वष्यै नमः
ॐ श्री ब्रणीक्षर-समायुक्तायै नमः
ॐ श्री ब्रणीक्षर-माला-मन्त्र-विराजितायै नमः
ॐ श्री ब्रणत्-पूर्णायै नमः
ॐ श्री ब्रण-ग्राह्यायै नमः
ॐ श्री ब्रण्याब्रण्य-विवर्जितायै नमः
ॐ श्री ब्रणद्-बुर्ण्य-ब्रणित्-सर्पायै नमः
ॐ श्री ब्रण्याण्यै नमः
ॐ श्री ब्रण्य-वासिन्यै नमः ।।७१०
ॐ श्री बुर्कघ्नायै नमः
ॐ श्री बुकिलासक्तायै नमः
ॐ श्री बुक-किङ्कर-वन्दितायै नमः
ॐ श्री बुगम्मुगित-मीनाक्ष्यै नमः
ॐ श्री बुटाका-नट-वस्त्रिण्यै नमः
ॐ श्री ब्रणि-श्रोत्र-महा-शब्दायै नमः
ॐ श्री ब्रणत्-कीलक-भुम्भुजायै नमः
ॐ श्री बुकि-भुकत-मानेश्यै नमः
ॐ श्री बुर्भ-मण्डल-बिण्डरायै नमः
ॐ श्री बिकटायै नमः ।।७२०
ॐ श्री बिकटाघोरायै नमः
ॐ श्री बीडकोत्कर्ष-दर्विकायै नमः
ॐ श्री बिडारक्त-प्रभावायै नमः
ॐ श्री बीडम-द्रुम-मण्डलायै नमः
ॐ श्री बिध्याकारायै नमः
ॐ श्री बध्यै नमः
ॐ श्री बाध्न्यै नमः
ॐ श्री बन्धगाद्य-सु-बीजक्यै नमः
ॐ श्री ब्निक-बाङ्क-स्वरूपायै नमः
ॐ श्री बिड-गिज्यायै नमः ।।७३०
ॐ श्री बिडायन्यै नमः
ॐ श्री बिम्भूताभ-समायुक्त-मन्त्र-प्रेत-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री बिङ्गी-गण्डा-रवायै नमः
ॐ श्री बीं-ब्रीं-बिङ्गेद्यायै नमः
ॐ श्री बिङ्ग-हेलिकायै नमः
ॐ श्री बिंग्य-देव-वरायै नमः
ॐ श्री ब्रीहि-धारिण्यै नमः
ॐ श्री बिंस-रूढ़िकायै नमः
ॐ श्री बिल्क-तत्त्वार्थ-संयुक्तायै नमः
ॐ श्री बिल्केश्यै नमः ।।७४०
ॐ श्री बिल्क-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री बिल्क-वीज-समावृत्यायै नमः
ॐ श्री बिल्काबिल्क-विहारिण्यै नमः
ॐ श्री बिल्क-गुह्या-याचमानायै नमः
ॐ श्री बिहण्यै नमः
ॐ श्री बाणह्यै नमः
ॐ श्री बिह्यै नमः
ॐ श्री बिहणार्थ-प्रपाद्यै नमः
ॐ श्री बिरणी-गण-वन्दितायै नमः
ॐ श्री बिहणासक्त-जीवायै नमः ।।७५०
ॐ श्री बिन्द-पञ्चेश्वरीङ्गण्यै नमः
ॐ श्री बिन्दाबिन्द-सुमालास्यायै नमः
ॐ श्री बिन्द-राक्षस-भञ्जन्यै नमः
ॐ श्री बिट-पुत्रादि-निर्ध्वंसायै नमः
ॐ श्री बिट्टिणी-वृन्द-वन्दितायै नमः
ॐ श्री बिट्-क्रसद्वापमानाख्यायै नमः
ॐ श्री बिट्-क्रुधारायै नमः
ॐ श्री बैतक्यै नमः
ॐ श्री बिट्-पटर्यै नमः
ॐ श्री बिट-क्रूर्यै नमः ।।७६०
ॐ श्री बिद्राबिद्र-विनोदिन्यै नमः
ॐ श्री बिद्य-कान्त-सुवर्णाख्यायै नमः
ॐ श्री बिद्रोस्यै नमः
ॐ श्री बिद्र-कङ्काल्यै नमः
ॐ श्री बिद्रासुर-प्रमोहायै नमः
ॐ श्री बिद्वोत्कर्षायै नमः

ॐ श्री बिद्र-भृते नमः
ॐ श्री बिललितायै नमः
ॐ श्री बिलोत्पाटायै नमः
ॐ श्री बिल्व-लिटेश-वन्दितायै नमः ।।७७०
ॐ श्री बिभ्रि-कम्भोल-विश्वाख्यायै नमः
ॐ श्री बिभ्रत्-कुण्डल-मण्डितायै नमः
ॐ श्री बिछुहारायै नमः
ॐ श्री बिलुल्हायै नमः
ॐ श्री बिभ्रत्-किन्न-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ श्री बिछु-कछुप-हारायै नमः
ॐ श्री बिक-कख्यानुकूलिन्यै नमः
ॐ श्री बिचम्भर्यै नमः
ॐ श्री बिचोत्कृष्टायै नमः
ॐ श्री बिच्याबिच्य-बिलासिन्यै नमः ।।७८०
ॐ श्री बिच्य-कालक-कङ्काल्यै नमः
ॐ श्री बिच-कङ्काल-मालिकायै नमः
ॐ श्री बिन्क-विनृ-विला-मालायै नमः
ॐ श्री बिन्क-साक्षाच-कारिण्यै नमः
ॐ श्री बलम्बली-विश्रुहाण्यै नमः
ॐ श्री बिस्राबिस्र-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री बिद्व-कद्व-कथायै नमः
ॐ श्री बिड्व्यै नमः
ॐ श्री बिड्वाबिड्व-तसान्तरायै नमः
ॐ श्री बिडवाहायै नमः ।।७९०
ॐ श्री बिड्-विरक्तायै नमः
ॐ श्री बिड्क-दूषक-धारिण्यै नमः
ॐ श्री बुदक्षर-समायुक्तायै नमः
ॐ श्री बिड्-वारियानुवर्तिन्यै नमः
ॐ श्री बिकटाक्ष-लसोद्यानायै नमः
ॐ श्री बिकटाङ्ग-स्वरार्चितायै नमः
ॐ श्री बिसत्-बृस्नायै नमः
ॐ श्री बिषद्रामायै नमः
ॐ श्री विष-देवायै नमः
ॐ श्री विषत्-प्रभायै नमः ।।८००
ॐ श्री बिष्ट-भालायै नमः
ॐ श्री बिल-लोलायै नमः
ॐ श्री बलम्भोक-गुणात्मिकायै नमः
ॐ श्री विष-हादायै नमः
ॐ श्री बिषत्-सूर्यायै नमः
ॐ श्री बिकध्यै नमः
ॐ श्री बिधराधरायै नमः
ॐ श्री बिकव्यम्भायै नमः
ॐ श्री विषड्-धीरायै नमः
ॐ श्री बिण-णंण्यै नमः ।।८१०
ॐ श्री बिणायुधायै नमः
ॐ श्री बिण-मात्रे नमः
ॐ श्री बिणच्पायायै नमः
ॐ श्री ब्रिनु-चर्चायै नमः
ॐ श्री ब्रिनुत्-प्रभायै नमः
ॐ श्री ब्रिस्य-हालहला-युक्तायै नमः
ॐ श्री बिष्क्रण्यै नमः
ॐ श्री बिष्क्र-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री बिष्क्रान्तस्थायै नमः
ॐ श्री बुनत्-स्वर्णायै नमः ।।८२०
ॐ श्री बुनक्यै नमः
ॐ श्री बुष्कि-धासिन्यै नमः
ॐ श्री बृष्यासुर-विभेदायै नमः
ॐ श्री ब्रष्पाब्रष्प-करीरिण्यै नमः
ॐ श्री बृषम्भुलायै नमः
ॐ श्री बृषोम्भालायै नमः
ॐ श्री बभ्रुदभ्रु-भयंकर्यै नमः
ॐ श्री बङण्यै नमः
ॐ श्री बङणायै नमः
ॐ श्री बंग्णायै नमः ।।८३०
ॐ श्री बंग्ण-गोण-सुशास्त्रिण्यै नमः
ॐ श्री बिणिणी-गण-मोहायै नमः

ॐ श्री बिगिडी-द्रध-पद्मकायै नमः
ॐ श्री बिल्कु-काक्यै नमः
ॐ श्री बिल-कृतायै नमः
ॐ श्री बलु-केशानुमण्डितायै नमः
ॐ श्री बिल्यु-लुहायै नमः
ॐ श्री बिलु-वासायै नमः
ॐ श्री बिल्क-मित्रादि-कृन्तन्यै नमः
ॐ श्री बिस्क-लोलायै नमः ।।८४०
ॐ श्री बिंहि-धरायै नमः
ॐ श्री बिङ्ग्यै नमः
ॐ श्री बिम्बि-सरूषिकायै नमः
ॐ श्री बिङ्गिड्यै नमः
ॐ श्री बगलायै नमः
ॐ श्री बिम्बायै नमः
ॐ श्री ब्रीणुण्यै नमः
ॐ श्री ब्रुहु-हूं-हक्यै नमः
ॐ श्री बिब्रु-काक-हकासालायै नमः
ॐ श्री बिजदज्ब-सुदब्रिकायै नमः ।।८५०
ॐ श्री बिलद्-द्वेषायै नमः
ॐ श्री बिल्कु-लंक्यायै नमः
ॐ श्री बिम्भु-लाहु-हकाधरायै नमः
ॐ श्री बिल्मि-मस्मि-मलन्मालायै नमः
ॐ श्री बिल्मि-भूषायै नमः
ॐ श्री ब्रिजिङ्करायै नमः
ॐ श्री बिल्मेश्यै नमः
ॐ श्री बिल्म-देवेश्यै नमः
ॐ श्री बिल्माबिल्म-विवादिन्यै नमः
ॐ श्री बिल्मांकुश-रुजायै नमः ।।८६०
ॐ श्री बिल्म्यै नमः
ॐ श्री बिल्म-मध्यानुवर्तिकायै नमः
ॐ श्री बिल्म-खण्डायै नमः
ॐ श्री बिल्म-भीमायै नमः
ॐ श्री बिल्माबिल्म-विनायक्यै नमः
ॐ श्री बिल्म-छत्र-कराम्भोजायै नमः
ॐ श्री बल्मिण्यै नमः
ॐ श्री बल्म-ग्रन्थिकायै नमः
ॐ श्री बल्मि-धूतायै नमः
ॐ श्री बल्मि-वीजायै नमः ।।८७०
ॐ श्री बल्मि-गन्ध-विलेपन्यै नमः
ॐ श्री बल-हाल्य-हलाकारायै नमः
ॐ श्री बम्ण-बम्ण-सुबम्णिकायै नमः
ॐ श्री बण-वस्त्रायै नमः
ॐ श्री बणी-भूत्यै नमः
ॐ श्री बणि-चण्ड-विभञ्जन्यै नमः
ॐ श्री बृहद्-गणायै नमः
ॐ श्री बृहन्माणायै नमः
ॐ श्री बणि-कीण्यै नमः
ॐ श्री बणी-घन्यै नमः ।।८८०
ॐ श्री बणन्मातायै नमः
ॐ श्री बणन्मान्यायै नमः
ॐ श्री बण-वीणायै नमः
ॐ श्री बणङ्क्यैं नमः
ॐ श्री बणत् -कोशायै नमः
ॐ श्री बिह्रौ नमः
ॐ श्री बोरवभ्यै नमः
ॐ श्री बोष-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री बोख-वीजायै नमः
ॐ श्री बरवो-क्रूरायै नमः ।।८९०
ॐ श्री बिखाबिख्य-विवादिन्यै नमः
ॐ श्री बीखर्यै नमः
ॐ श्री बीखदायै नमः
ॐ श्री बाख्यै नमः
ॐ श्री बख्रा-बख्र-निवारिण्यै नमः
ॐ श्री बिखन्मूलायै नमः
ॐ श्री बिलापट्टायै नमः
ॐ श्री बिट्ट-पदेश्वरार्चितायै नमः

ॐ श्री बिलुलन्ध्यै नमः
ॐ श्री बल-ब्रम्ध्यै नमः ।।९००
ॐ श्री बिम्भाबिम्भ-विधारिण्यै नमः
ॐ श्री बिकलण्ट्यै नमः
ॐ श्री बिल-हन्ध्यै नमः
ॐ श्री बिलद्-गन्ध-शिवात्मिकायै नमः
ॐ श्री बल्वु-किटिर्बल्मु-लुट्यै नमः
ॐ श्री बल्कलल्पायै नमः
ॐ श्री बिलाभ्रिक्यै नमः
ॐ श्री बिल्क-षष्टायै नमः
ॐ श्री बिल्क-भ्रष्टायै नमः
ॐ श्री बिल्काबिल्क-निवासिन्यै नमः ।।९१०
ॐ श्री बिष-निष्टायै नमः
ॐ श्री बिलु-लुहायै नमः
ॐ श्री बिलिर्बल्यायै नमः
ॐ श्री बिलीषिकायै नमः
ॐ श्री बृह-गुहायै नमः
ॐ श्री बृहेशान्यै नमः
ॐ श्री बृह-माल्यायै नमः
ॐ श्री बृहङ्कर्यै नमः
ॐ श्री बृह-पुत्रायै नमः
ॐ श्री बृषीदंघ्र्यै नमः ।।९२०
ॐ श्री बहु-बम्भल-धारिण्यै नमः
ॐ श्री बिकु-लल्कायै नमः
ॐ श्री बिलुम्रीरायै नमः
ॐ श्री बिभचष्कायै नमः
ॐ श्री बीजरायै नमः
ॐ श्री बिल्मु-लुत्यायै नमः
ॐ श्री बिकुम्भ्ररायै नमः
ॐ श्री बिगुद्यायै नमः
ॐ श्री बिल्क-वालिरायै नमः
ॐ श्री बमि-कुष्टापहारायै नमः ।।९३०
ॐ श्री बभृ-भम्भण्ड-धारिण्यै नमः
ॐ श्री बज्ल-कोलायै नमः
ॐ श्री बज्ज-गात्रायै नमः
ॐ श्री बज्ज-गोजायै नमः
ॐ श्री बतन्मय्यै नमः
ॐ श्री बेद-तत्त्व-समुद्भूतायै नमः
ॐ श्री बग-गीलायै नमः
ॐ श्री बलाशिन्यै नमः
ॐ श्री बल-हीङ्कारिण्यै नमः
ॐ श्री बीष्यै नमः ।।९४०
ॐ श्री बीण-कोटि-सुसक्तिकायै नमः
ॐ श्री बक-लक्ष-महा-कोटि-चतुःषष्टि-सुयोगिन्यै नमः
ॐ श्री बीती-लक्ष-महाऽनन्त-भैरवायै नमः
ॐ श्री बुबुगालिकायै नमः
ॐ श्री बुध-लक्ष-महा-कोटि-विष्णु-रुद्र-गणेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बिभ्रद-दर्पण-हस्तायै नमः
ॐ श्री बिभ्रत् -कोकिल-मण्डितायै नमः
ॐ श्री बिभ्रद्-पद्म-समाख्यातायै नमः
ॐ श्री बिबुभू-भू-भयङ्कर्यै नमः
ॐ श्री बिभ्रच्छक्ति-गदा-हस्तायै नमः ।।९५०
ॐ श्री बीज-पंक्ति-समन्वितायै नमः
ॐ श्री बीज-जङ्घायै नमः
ॐ श्री बल्यै नमः
ॐ श्री बील्यै नमः
ॐ श्री बीजराम-सुरेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बडवानल-महा-ज्वालायै नमः
ॐ श्री बाणल्यै नमः
ॐ श्री बाण-मध्यगायै नमः
ॐ श्री बुञ्च-वन्द-वड्यै नमः
ॐ श्री बाम्ह्यै नमः ।।९६०
ॐ श्री बाह्लीकासुर-त्रोटिन्यै नमः
ॐ श्री बह्लायै नमः
ॐ श्री बह्लेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बहल्यै नमः

ॐ श्री बह्लीकायै नमः
ॐ श्री बह्लि-काननायै नमः
ॐ श्री बह्ली-रूपायै नमः
ॐ श्री बढ़ी-जाढ्यै नमः
ॐ श्री बह्लाबह्ल-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ श्री बल-विन्दु-प्रभायै नमः ।।९७०
ॐ श्री बल-योगिनिकायै नमः
ॐ श्री बल-सक्त-महा-योगायै नमः
ॐ श्री बिन्दु-रुद्रायै नमः
ॐ श्री बिढत्-करायै नमः
ॐ श्री बिनुनुर्णायै नमः
ॐ श्री बिहत्-पूजायै नमः
ॐ श्री बिरुद्ध-कटलायुतायै नमः
ॐ श्री बिल्कु-कूट-त्रयायै नमः
ॐ श्री ब्रह्मयै नमः
ॐ श्री बीरु-कालायै नमः ।।९८०
ॐ श्री बिदुर्द्धिन्यै नमः
ॐ श्रीबमलाम-महानत-विरावलि-विसंयुतायैनमः
ॐ श्री बकारोत्तम-वीजायै नमः
ॐ श्री बध्वी-लत-महा-देव्यै नमः
ॐ श्री बाल-लावण्य-लालितायै नमः
ॐ श्री बहु-वर्षायै नमः
ॐ श्री बहु-जन्मायै नमः
ॐ श्री बहु-पादायै नमः
ॐ श्री बल-ब्रतायै नमः
ॐ श्री बहु-हस्तायै नमः ।।९९०
ॐ श्री बहु-श्रोतायै नमः
ॐ श्री बहिर्भूमि-वरेश्वर्यै नमः
ॐ श्री बहिर्लिङ्गायै नमः
ॐ श्री बृहन्मात्रे नमः
ॐ श्री बाहिर्यै नमः
ॐ श्री बलि-चक्रिण्यै नमः
ॐ श्री बल-कृद्धटक्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्मयै नमः
ॐ श्री ब्रह्मिकायै नमः
ॐ श्री बद्रि-खड्गिन्यै नमः ।।१०००

श्री बाला-त्रिपुर-सुन्दरी के उक्त बकारादि नाम- 'श्री ललिता'-नाम-मन्त्रों के समान मूल-मन्त्र-स्वरूपी हैं। इन 'नाम'-मन्त्रों का जप करने से भूत-प्रेत एवं सभी प्रकार का ज्वर नष्ट होता है। भगवती बाला को प्रिय उक्त 'नाम'-मन्त्र भोग और मोक्ष देनेवाले हैं।

❐❐❐

श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रार्थना-विधि

प्रार्थना का समय : प्रातः-काल, मध्याह्न-काल, सायं-काल और निशा-काल। (समय सुविधानुसार-किन्तु जो समय निश्चित करे, उसी समय करे।)।

१. ध्यान : सर्व-प्रथम शुद्ध होकर आसन पर बैठकर अपने सामने एक दीपक जलाकर रखे। दीपक की ज्योति में भगवती बाला का ध्यान करे। भगवती बाला के विविध ध्यान प्रस्तुत संग्रह में प्रकाशित हैं। ध्यान कर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य-इन पञ्चोपचारों अथवा मानस उपचारों से पूजन करे।

२.जप : इसके बाद अपने मन्त्र का 'जप' करे। जप कर चुकने पर भगवती बाला को अपने जप का फल अर्पित करे। यथा-

ॐ सर्वान्तरात्म-निलये! स्वान्तर्ज्योति-स्वरूपिणि!
गृहाणान्तर्जपं मातः! बाले! देवि! नमोऽस्तु ते ।।

३. प्रार्थना : इसके बाद 'प्रार्थना' करे। यथा-

(१) हे माँ बाला! मुझको एक-निष्ठ प्रेम, भक्ति और अचल श्रद्धा दो।

(२) हे माँ! मुझ में शक्ति नहीं, भक्ति नहीं। तेरी कृपा से मुझसे प्रशंसनीय कार्य हो सकते हैं। अतः आशीर्वाद दो माँ, मेरा मन सदैव तुम्हारे चरणों में लगा रहे।

(३) हे परमेश्वरि! आप तेज-स्वरूपा हैं। कृपा करके मुझे तेजस्वी बनाइए।

(४) हे माँ! आप ओज-स्वरूपा हैं। कृपा करके मुझे भी ओजस्वी बनाइए।

(५) हे माँ! मैं तेरा ही अंश हूँ। मेरा मार्ग प्रदर्शित कीजिए।

४. पुनः ध्यान : इसके बाद पुनः भगवती बाला का ध्यान करे और भावना करे-'मैं ही देवी हूँ, अन्य नहीं। मैं ही अविनाशी, सर्व-व्यापक आनन्द-स्वरूप हूँ।'

५. आनन्द-गान : इसके बाद उच्च स्वर से 'आनन्द-गान' करे। यथा-

प्रबद्धोऽयं वत्सो जननि! तव नागेन्द्र-चरणे ।
स एवाऽयं नागो व्रजति, तरसा कण्टक-वने ।।
व्रणास्तैः सम्भूता रुधिर-वमना दंश-वशगा ।
इमां सूनोर्दृष्ट्वा किमु हरसि न ग्रन्थिमभितः ।।१

हे माता! तुम्हारा पुत्र हाथी के पैर पर बँधा हुआ है और वह हाथी वेग के साथ काँटों के वन में घुस गया है। अतएव काँटों से विध जाने के कारण बालक के शरीर से खून बह रहा है और उस रक्त को देखकर घावों के ऊपर वन-मक्षिकाएँ रक्त-पान के लिए आ बैठी हैं और उसे काट रही हैं। तुम अपने पुत्र की इस दुःखितावस्था को देखकर उसे हाथी के पैर से क्यों नहीं मुक्त कर देतीं? ।।१

(यहाँ हाथी 'महा-मोह' का द्योतक है और उसमें फँसा हुआ अज्ञानी बालक 'जीव' है। काँटे, घाव,

खून और वन-मक्षिकाएँ 'सांसारिक यातनाओं' की सूचक हैं। इन दुःखों से मुक्ति दिलानेवाली केवल **जगदम्बा बाला** हैं, जिसकी माया ने जीव को मोह-पाश में फँसा रखा है।)

ज्वलन्तं सम्पश्यन् जनक-जननी-दृष्टि-विषये ।
हुताशं क्रीडायै व्यवहरति बालो यदि भवे ।।
दया-भावाऽशोधी हुत-भुगशित स प्रलपति ।
तदा शक्तेर्दोषं जननि! मनुजः कस्य कथयेत् ।।२

हे जननि! इस संसार में माता-पिता के सामने जलती हुई आग को देखकर यदि बालक अपने खेल के लिए उसे पकड़ लेता है और जलने लगता है तथा जलने पर दया-भाव के ज्ञान से विहीन वह दुःखितावस्था में चिल्लाता रहता है, तो बतलाओ, दर्शक मनुष्य इसमें किसकी शक्ति का दोष मानेगा ? माता-पिता की शक्ति का अथवा बालक की शक्ति का ? ।।२

ततः क्रीडाऽऽसक्तः प्रथम-वयसि ज्ञान-विरतो ।
युवत्वे सम्प्राप्ते युवति-विषयाऽऽसक्त-हृदयः ।।
सुतानामुत्पत्तिं भजति, मनसा वृत्ति-बलतः ।
प्रपञ्चोऽयं नित्यस्तव, जननि! दुर्वार उदितः ।।३

हे माता! यह जीव बाल्यावस्था में ज्ञान-रहित होकर अपने खेल में निमग्न रहता है। युवावस्था में स्त्री के साथ विषय-भोग में आसक्त होकर पुत्रों के पैदा करने में निर्जीव बन जाता है। अतएव तुम्हारा यह सांसारिक प्रपञ्च इस संसार में नित्य और दुर्वार कहा गया है। अर्थात् इस प्रपञ्च से संसार में कोई भी नहीं बच सकता ।।३

क्व कर्मत्व-ज्ञानं स्पृशति, जननि! प्रागवसरे ।
समास्नाते मूत्रैरधिगत - पुरीषोत्सव - गृहे ।।
महत्त्वे तेनाऽऽसे कथमिह सुकर्माचरण-वान् ।
विकाराप्ते त्वस्मिन् हरति, नहि स प्राप्त-विभवम् ।।४

हे माता! बाल्यावस्था में मल-मूत्र से सने हुए इस जीव को कर्म करने का ज्ञान छू तक नहीं सकता और बड़े होने पर सत्कर्मों के आचरण से यदि उसको ऐश्वर्य-प्राप्ति हो भी जाती है, तो विकार-पूर्ण शरीर से ऐश्वर्य को त्याग नहीं सकता और उसी में लिप्त रहता है। अतः तुम्हारी माया बड़ी विलक्षण है। इससे कोई छूट नहीं सकता ।।४

प्रसूतीनामेको यदपि, सुधियां नीच-पथगः ।
भवेत् सूनुस्तस्य त्यजति, जनकः स्नेहमतुलम् ।।
प्रसू - प्रीतेस्तेषु कुमति - सुमतिष्वेव समता ।
यतस्तेषां साम्यं जनन-समयस्यापि सदृशम् ।।५

हे माता! यदि अनेक बुद्धिमान् पुत्रों में से एक भी पुत्र कु-मार्ग पर चलनेवाला हो जाता है, तो पिता उसको बिलकुल प्यार नहीं करता, किन्तु माता 'सु-पुत्र' और 'कु-पुत्र' दोनों पर समान स्नेह करती है और किसी

पर कम तथा किसी पर अधिक स्नेह नहीं दर्शाती क्योंकि 'सपूत' हो या 'कपूत' दोनों को उसने समानता से ही जन्म दिया है ।।५

जरायौ मे जाता नग-पति-सुतेऽनेक-विधिना ।
निवासास्त्वत्-पादाभ्यसन-विधि-शून्येन फलिताः ।।
तदुत्पीडा-ग्रस्तः प्रलपित-मनाः पङ्कज-पदम् ।
त्वदीयं ध्यायामि क्षिति-निरत-चित्तस्य विरतेः ।।६

हे गिरि-राज-पुत्रि! इस संसार में तुम्हारे चरणों की भक्ति से रहित मेरे अनेक जन्म हो चुके हैं। अब जन्म-मरण-पीड़ा से ग्रस्त होकर, मैं इस संसार के आवागमन से ऊब गया हूँ। अतएव इस समय तुम्हारे चरण-कमलों का ध्यान करता हूँ अर्थात् अब तुम्हारी शरण में आया हूँ ।।६

महत्त्वं तेऽपर्णे! चरण-नलिनोर्देव-गुरुभि-
रसाध्यं सर्वज्ञैरपि निगदितं मातरविदः ।
मनीषा चैतस्य कथमनुचरेन्मोक्ष - पदवीम् ।
त्वदङ्घ्रि-द्वन्द्वस्य स्तुतिममर-वाक्याश्रित-वतीम् ।।७

हे अपर्णे (पर्वत-राज-पुत्रि)! तुम्हारे चरणों के महत्त्व को बड़े-बड़े सर्वज्ञ देवताओं ने भी असाध्य बताया है। अतएव उन बड़े-बड़े देवताओं द्वारा की गई, तुम्हारे पद-पङ्कजों की स्तुति को न जाननेवाला यह चरण-सेवक मोक्ष-पदवी को किस प्रकार प्राप्त कर सकता है? ।।७

निषिध्यादौ रूपं तव, जननि! वेदान्त-निरताः ।
परे प्राहुर्मातर्भव - विधि - निदानं तव वपुः ।।
विधाता भूतेशः खग-पति-पतिश्चापि विमले !
भवत्याः सञ्जाता नग-पति-सुते! गायन्ति परः ।।८

हे भगवति! वेदान्ती लोग कहते हैं कि तुम्हारा रूप नहीं है, दूसरे लोग मानते हैं कि इस संसार का कारण एक-मात्र तुम्हारा शरीर है। हे गिरि-राज-पुत्रि! कोई कहते हैं कि सृष्टि, स्थिति और प्रलय के करनेवाले ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर तुमसे ही पैदा हुए हैं। अतः तुम्हीं इस संसार की पैदा करनेवाली हो ।।८

इदानीं त्वां स्तोतुं कथमनुभवेयं त्रिनयने!
विभीतात्मा-वृत्तौ बहु-विध-रुचि-ग्रस्त-हृदये ।।
स्थिता बुद्ध्याकारा त्वमसि मनुजानां मनसि वै ।
अतो निन्द्य-स्तोत्रे तव जननि! यत्नोऽयमपि मे ।।९

हे त्रि-नयने! आत्म-वृत्ति से भयभीत और अनेक प्रकार की वासनाओं से परिपूर्ण इस हृदय से मैं तुम्हारी स्तुति करने का अनुभव किस प्रकार करूँ? अतः तुम तो मनुष्य-मात्र के हृदय में बुद्धि-रूपेण विराजमान हो ही हो। अतः तुम मेरे हृदय को जानती हो। अतएव तुम्हारी स्तुति करने में मैं भी प्रयत्न करता हूँ, चाहे मेरी की हुई स्तुति को लोग निन्दनीय ही क्यों न मानें ।।९

यदीयैक्यस्यैवाऽप्यनुसरणमिच्छन्ति बहवो ।
विनिन्द्यानुग्राह्यं नग-पति-सुते! तस्य सहसा ।।
कथं ते तद्-रूपा इति मम मनोऽनिश्चित-परम् ।
यतोऽद्वैतं प्राहुः श्रुति-विहित-मार्गं श्रुति-विदः ।।१०

हे गिरि-राज-किशोरी! जिस पर- ब्रह्म को बहुत से लोग 'अहं ब्रह्मास्मि' कहकर उसका अनुसरण करना चाहते हैं, यह बिलकुल ही अनुचित है । अतएव मेरा मन इस बात का निश्चय करने को दृढ़ नहीं है कि वे लोग ब्रह्म-स्वरूप बन जाते हैं क्योंकि वेदों के विद्वान् लोग वेद-विहित मार्ग को अद्वैत बतलाते हैं ।।१०

विधाता तार्क्ष्येशो विष-धर-पतिः काल-कलनः।
त्रिकाल-ज्ञातारः कमल-जनि-पुत्राश्च मधवा ।।
स्थिताश्चान्ये देवाः सदसि खलु दक्षस्य बहवो ।
विधातुः सत्रस्य क्षिति-धर-सुते! तस्य सहसा ।।११
शिरश्छेदो जातस्तदपि शिव - शूलेन महता ।
तिरस्कारस्यापि प्रति - हत - गिरा किन्तु लभते ।।
प्रलम्बित्वात् सत्यामृतमिति पद-प्राप्ति-विषयाम् ।
किमन्यूनां मत्वा सकल - भुवनोदार - रचनाम् ।।१२

हे गिरि-नन्दिनि! दक्ष प्रजापति के यज्ञ में ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर और भूत, भविष्य, वर्तमान की बातों को जाननेवाले, ब्रह्मा जी के मानस पुत्र सप्त-ऋषि तथा अन्य सब देवताओं के साथ इन्द्र-देव विराजमान थे। इन सबकी सभा के बीच में दक्ष प्रजापति सुशोभित हो रहे थे । सब देवताओं के सम्मुख भगवान् सदा-शिव ने रुद्र-रूप धारण कर अपने निन्दक दक्ष प्रजापति का शिर अपने त्रिशूल से काट गिराया । यह ठीक ही है कि दक्ष प्रजापति ने शिव जी के तिरस्कार करने का बुरा फल प्राप्त कर लिया ।।११-१२

त्वदीयं पादाब्जं हृदय-कमले यस्य रमते ।
स एवं ते रूपं मुनि-वर-चय-ध्यान-विषयम् ।।
निदानं दीक्षाया विधि-हरि-शिवानां च गिरिजे ।
उपेतं तल्लिङ्गैरनुवदति ते भक्ति - निरतः ।।१३

हे भगवति गिरिजे! तुम्हारे जिस भक्त का मन तुम्हारे चरण-कमलों के ध्यान में दिन-रात लगा रहता है, वही भक्त बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के ध्यान का विषय और ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर-तीनों देवों को अपने-अपने कार्य में लगानेवाले तेरे स्वरूप का कुछ वर्णन करने में समर्थ हो सकता है । मैं तो तेरा एक सामान्य सेवक हूँ, अतः तेरी वर्णना में अपने को सुतरां असमर्थ समझता हूँ ।।१३

सदा सेव्यं मातश्चरण - युगलं ब्रह्म - पथगै-
स्त्वदीयं सेवेऽहं रचित-मणि-पीठेऽर्पित-तलम् ।।
नख-ज्योत्स्नाऽऽक्रान्ते सुर-पति-किरीटानुकरणे ।
भवाऽऽवृत्ति-ध्वंसं प्रणमित-तरं देव-गुरुभिः ।।१४

हे माता! मुक्ति-मार्ग में विचरण करनेवाले (मुमुक्षु) लोग सदा तुम्हारे जिस चरण-युगल की सेवा करते हैं और जो मणि-मय सिंहासन में विराजमान अपने नखों की कान्ति से देव-राज इन्द्र के मुकुट को लज्जित करता है और जो संसार के आवागमन से छुड़ानेवाले हैं तथा जिसको ब्रह्मा, विष्णु आदि बड़े-बड़े देवता प्रणाम करते हैं, मैं तुम्हारे उस चरण-युगल की सेवा करता हूँ।।१४

चिदानन्दाकारे! तव चरण - सेवाऽमृत - रसम् ।
पुरश्चारी धर्मः पिवति खलु लोकेऽपि निरतः ।।
समर्थो देवेन्द्राऽऽस्पद - गमन - दाने दुरितहा ।
भवत्या निर्दिष्टो भ्रमर-समया भ्रू-लतिकया ।।१५

हे चिदानन्द-स्वरूपिणि (ज्ञान-स्वरूपिणी और आनन्द-स्वरूपिणी), माता! इस संसार में सर्वदा निरत (लीन) यह धर्म (संसार को धारण करनेवाला) जो कि देवेन्द्र की प्रतिष्ठा (इन्द्रासन) देने में समर्थ है तथा संसार के पापों का नाशक है, वह भ्रमरों के समान (कृष्ण-वर्ण) तुम्हारी भ्रू-लतिका के इशारे से (भौंहों के इशारे से) तुम्हारे चरण-सेवाऽमृत-रस का पान करता है।।१५

विभूतिं त्वद्-भक्तस्तव चरण-पङ्केरुह-भवाम् ।
दुरापा मन्यैश्च स्वपन-वसु-गर्भा त्रि-नयने! ।।
सु-रक्ष्यां विश्वेशैः सुर-हृदय-तात्-पाप-नुदयाम् ।
विभुञ्जानः कामं भवति मनुजैर्वन्द्य-चरणः ।।१६

हे माता! तुम्हारा सेवक तुम्हारे चरणों की सेवा से ऐसे ऐश्वर्य का भोग करता है, जो किसी को प्राप्त न हुआ हो और जिसको देखकर देवता भी प्रसन्न हो जाते हैं और जिस ऐश्वर्य की रक्षा में बड़े-बड़े देवता सतत लगे रहते हैं, अतएव उसके अद्भुत ऐश्वर्य-भोग को देखकर मनुष्य उसके (तुम्हारे सेवक की) चरणों की वन्दना करते रहते हैं।।१६

भ्रमन्तालि-द्वन्द्वाऽमृत-जनि-मुखीनां तव जनः ।
सुधा-वीची-वाचां मृग-पति-कटीनां प्रति-दिनम् ।।
घन-प्रायाकारस्तन-युग-धराणमविकलम् ।
विलासी नारीणां करि-वर-गतीनां भवति सः ।।१७

हे माता! तुम्हारे चरण-कमलों का सेवक इस संसार में सुन्दर सरोज-मुखी अर्थात् चन्द्र-मुखी, अमृत-रस-मधुर-भाषिणी, सिंह-कटी और घन-स्तन-युगल-धारिणी विलासिनियों (नारियों) के साथ सदैव विलास करता रहता है।।१७

भवानि! त्वत्-तूर्यास्पदमखिल-वेदैर्विरचितम् ।
तदुद्भूतैरुद्धं ध्वनिभिरति-सूक्ष्मैश्च नितराम् ।।
अनेकत्वैकत्वानवगम-तिरस्कार-विषयम् ।
विशुद्धाऽऽनन्दार्णे अभि-निवेशति ध्यान-निरतः ।।१८

हे भवानि! समस्त वेदों द्वारा निरूपित तुम्हारा जो तुरीय धाम है, वह उससे समुद्भूत सूक्ष्माति-सूक्ष्म ध्वनियों से अवरुद्ध है तथा वहाँ एकत्व और अनेकत्व का भी पता नहीं लग सकता। अतएव मेरा मन तुम्हारे ध्यान में तत्पर होकर विशुद्धानन्द-सागर में निमग्न रहता है ।।१८

मुकुन्द-ब्रह्मेन्द्र-त्रिनयन - सुराणां फल - वताम्।
भवत्-पूजा मातस्त्रिगुण-विहिता स्वात्म-सदृशी ।।
त्वदुद्देश्ये यश्चेद् भवति ननु सत्त्व-प्रसविका-
मतस्त्वां कल्याणीं प्रणिगदति कश्चित् तव जनः ।।१९

हे माता! त्रिगुणात्मक ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर और इन्द्र आदि देवताओं ने अपने-अपने अनुरूप तुम्हारी पूजा की है और उसी से सिद्धि को प्राप्त हुए हैं। यह सुनिश्चित है कि जो तुझे अपना लक्ष्य (उद्देश्य) बनाकर तेरी सेवा करता है, उसको तू उसी भाव से सिद्धि प्रदान करती है। अतएव कोई-कोई तेरा सेवक तुझे सत्त्वोत्पादिनी सर्व-जन-कल्याण-कारिणी (कल्याणी) कहता है अर्थात् मानता है ।।१९

विहार - प्रासादस्तव जननि! पङ्केरुह - पदोः ।
परिच्छेत्तुं शक्यो विधि-मुर-रिपुभ्यां नहि यतः ।।
अतस्त्वां सु-स्नातां त्रिगुण-मलतोऽदृष्ट-वपुषी ।
शिवेति त्वत्-सेवी भव-जलधि-तीर्णः शिव-वपुः ।।२०

हे जननि! तेरे चरण-कमल जिस प्रासाद (महल या मन्दिर-'प्रासादो देव-भूभुजाम्') में निवास करते हैं, उसकी विशालता और तुङ्गता का परिमाण करने में ब्रह्मा और विष्णु भी सुतरां असमर्थ हैं। अतः त्रिगुणात्मक मल से रहित शुद्ध शिव-स्वरूपा तेरी सेवा करनेवाला सेवक (भक्त) इस संसार-सागर से पार होकर शिव-स्वरूप हो जाता है ।।२०

त्रयो ब्रह्माद्यास्ते कथमपि गता ध्वस्त-पशवः।
स्मरन्तस्ते वाणीं सुर-पद-सु-गुप्तां तव पदम् ।।
ततो द्वार-स्थायी नव-शिशु-तरस्त्वद्-बल-जयी।
अभूत् प्राहुर्दुर्गे! स्व-जन-सुलभां त्वां मुनि-वराः ।।२१

हे दुर्गे! ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर तेरी वाणी के अनुसार पशु-पाश का समुच्छेदन कर तेरे पद को प्राप्त हुए हैं, किन्तु तेरा यह नव-जात शिशु तेरे शक्ति-वीज का जप करनेवाला अथवा तेरे सामर्थ्य पर निर्भर रहनेवाला तेरे द्वार पर स्थिर हो गया है। अतएव हे माता! बड़े-बड़े ऋषि-मुनि तुझे स्व-जन-सुलभा कहते हैं अर्थात् तेरे सेवक तुझे बड़ी सरलता से पा जाते हैं ।।२१

समुद्राशी दृक् ते हुत-भुगभिधोऽनन्त-महिमा ।
चतुर्लक्षं क्रोशे तमुपरि विभाति ग्रह-पतिः ।।
ततोऽश्चोर्ध्वे चन्द्रोऽमित-गमन-शीलो द्वि-गुणिते।
तृतीयांशस्येयं तव जननि! मौलेश्च गुरुता ।।२२

हे माता ! अनन्त महिमावाला अग्नि बड़वा-रूप से समुद्र को भीतर-ही-भीतर क्षीण करता रहता है अर्थात् उसके जल को बढ़ने नहीं देता । अतएव उसे मर्यादा पर स्थिर रखता है । अतः समुद्र की सतह से चार लाख कोश दूरी पर (ऊँचाई पर) भगवान् सूर्य-देव विराजमान हैं और उसके ऊपर आठ लाख कोश की दूरी पर अपरिमित गतिवाला चन्द्रमा स्थित है । हे जगज्जननि ! यह केवल आपका ही मुकुट है, जिसने चन्द्रमा को इतने ऊँचे पद पर आरूढ़ किया है । उसकी कला तुम्हारे मुकुट पर विराजमान है, अतः उसका ही माहात्म्य है ।।२२

अहो! ब्रह्मादीनां वयस उदयास्तौ तव दृशौ ।
कटाक्ष-प्रक्षेपाद्गमन - पवनोद्भूत - रथिनौ ।।
विरुद्धांशु-कामं सकल-भुवनाधार-वपुषी ।
समुन्नेया दिव्या स्थित-महिम-देहा तव जनैः ।।२३

हे भगवति, हे माता ! तुम्हारे जो सूर्य-चन्द्रात्मक दो नेत्र हैं, ये ब्रह्मा आदि देवताओं की आयु के उदय और अस्त करनेवाले हैं । जिस प्रकार सांसारिक मनुष्यों की आयु की गणना मास, वर्ष आदि सौर-मान अथवा चान्द्र-मान से होती है, उसी प्रकार देवताओं की आयु-गणना भी सूर्य और चन्द्रमा से होती है, अतएव तुम्हारे नेत्र रवि-शशि हैं और तुम्हारे कटाक्ष-निक्षेप की वायु से उनके रथ चलाए जाते हैं और इनकी शीतोष्ण-किरणें सम्पूर्ण भुवनों की आधार हैं । अतः तुम्हारे सेवक तुम्हारी दिव्य महिमा का ध्यान करते रहते हैं ।।२३

विवेकस्ते कोऽयं गिरि-पति-सुते! पाप-मनसाम् ।
यम-त्रास-त्राणा भवसि बलतस्तेभ्य इति च ।।
अनिच्छद् भूयः श्रेयः सपदि ददसि प्रार्थित इव ।
किमन्यत् ते शीलं लघु-जपन-मात्र-प्रमुदितम् ।।२४

हे गिरि-पति-सुते (हे गिरिजे) ! तुम्हारा विवेक अनिवर्चनीय है तथा तुम्हारा स्वभाव बहुत हलका (जरा-सी बात में प्रसन्न होनेवाला) है क्योंकि जिसने जरा-सा भी तुम्हारे मन्त्र का जप कर लिया है, उसे तुम यम-राज के भय से मुक्त कर देती हो तथा इच्छा न करने पर भी उसका मनोऽभिलाष इस प्रकार पूर्ण कर देती हो, जिस प्रकार कोई अति दीन प्रार्थी की अभिलाषा को पूर्ण कर देता है ।।२४

भवत्याङ्घ्रि-द्वन्द्वोद्वहन-गुरु-भारादवनतः ।
मुकुन्दोऽपि श्रान्तो भजति भुजगाधीश-शयनम् ।।
यदुद्देश-क्लिष्टो भवति खलु यस्तस्य चरणम् ।
किमाश्चर्यं ह्येतत् भजति गुरुतेयं समुचिता ।।२५

हे त्रिपुर-सुन्दरि ! भगवान् मुकुन्द (विष्णु) तुम्हारे सिंहासन को उठाने के भार से अत्यन्त थक कर कुछ काल के लिए शेष-शय्या में लेट कर विश्राम करते हैं । संसार में यह देखा जाता है कि जो व्यक्ति जिस कार्य के करने में क्लेश मानता है, वह पुनः उस काम के करने से मुँह मोड़ता है, किन्तु हे माता ! यह तुम्हारी महिमा का प्रभाव है कि श्री भगवान् विष्णु अपनी थकावट दूर कर पुनः तुम्हारी चरण-शरण में आकर स्व-कार्य में तत्पर हो जाते हैं ।।२५

लये ब्रह्मादीनां त्वयि जल-तरीं केशव-मयीम् ।
गृहीत्वा पाणिभ्यां विचरसि महा-सिन्धु-विवरे ।।
जगद्-वीजोत्पत्ति-प्रभव-विवरां त्वां सुर-गणाः ।
अतः प्रेतारूढा हरि-हृदय-वासेत्यपि जगुः ।।२६

हे भगवति, त्रिपुरे! प्रलय-काल के अवसर पर ब्रह्मादि देवता सब जब तुम्हारे शरीर में लय हो जाते हैं, उस समय तुम केशव (विष्णु)-मयी नाव में बैठकर प्रलय-कालीन महा-सागर में विचरण करती हो। अतएव सब देवता तुम्हें 'प्रेतारूढ़ा' (विष्णु-रूपी प्रेत पर बैठी हुई) और 'हरि-हृदय-वासी' (हरि के हृदय में निवास करनेवाली) कहते हैं ।।२६

त्वया पूर्वं रम्भासुर-सुत-शिवाऽधोक्षज-गतिः ।
कृतो विष्णुर्बध्वा हत इति विचित्रा तव गतिः ।।
यम-त्रासो धाता निगम-वदनः काम-वशगः ।
अहं वश्या कस्येत्यपि तव मतं ज्ञातमधुना ।।२७

हे माता! तुमने पूर्व समय में ब्रह्मा-विष्णु-शिव को परास्त करनेवाले 'रम्भ' नामक असुर के पुत्र महिषासुर को मारकर शिव-(मङ्गल)-स्वरूप वैकुण्ठ-पद प्रदान किया है। तुम्हारी गति बड़ी विचित्र है अर्थात् तुम्हारी गति को कोई समझ नहीं पाता। तुमने भगवान् विष्णु को भी मोह-पाश में बाँध डाला और यम-राज को भी भयभीत करनेवाले वेद-मुख ब्रह्मा को भी काम-देव के वशीभूत कर दिया! इन सब बातों से तुम्हारे मत का पता चल गया कि तुम किसी के वश में नहीं हो, बल्कि ब्रह्मा-विष्णु आदि देव सब तुम्हारे ही आधीन हैं ।।२७

विधेयाधीनैव त्वमसि जनक-प्राङ्गण-मही ।
प्रलये प्रवृत्ता स्मर-हर-धनुः स्वेन भुजतः ।।
समुत्थायोत्कृष्टं भजन-फल-संशिन्युप-रता ।
गृहे यस्य त्वं वै अवतरसि किं दुर्लभ-तरम् ।।२८

हे जगज्जननि! तुम सर्वदैव अपने भक्तों के आधीन रहती हो। अतएव तुमने महा-राजा जनक को अपना जनक बना कर सीताजी के रूप में उनके प्राङ्गण को लीपने के समय भगवान् त्रिपुरारि (शिव) के धनुष को उठाकर चढ़ाया करती थीं। तुम्हारे इस चरित को देखकर ही तुम जैसे शक्ति-शाली भगवान् रामचन्द्र को तुम्हें प्रदान कर अपना जामाता बनाया। महा-राज जनक के लिए श्री भगवान् रामचन्द्र को जामाता बनाना कोई बड़ी बात नहीं थी क्योंकि जिसके घर में तुम अवतरित होती हो, उसे संसार की कौन सी वस्तु दुर्लभ हो सकती है? ।।२८

स्वकीयौदार्यत्वादभिलषित-मोक्षादि-फलदा ।
त्वदङ्गस्यैवांशु रविरपि तमिस्त्रां प्रलयते ।।
विभर्ता लोकानां हरिरपि ययाचे हि जनकम् ।
अतस्त्वान्ते भक्तिर्बहु-फल-वती किन्न भवति ।।२९

हे जगदम्बिके! तुम वरदान देने में इतनी उदार हो कि भक्त की छोटी-सी अभिलाषा से लेकर मोक्ष-पर्यन्त सब अभिलाषाओं को पूर्ण कर देती हो। तुम्हारे उपासक सूर्य-देव की एक किरण सारे अन्धकार को दूर

कर देती है। लोकों के पालन करनेवाले भगवान् विष्णु को रामावतार में महा-राज जनक के पास तुम्हारे लिए याचना करनी पड़ी। अतः हे माता! तुम्हारी भक्ति सदैव अनन्त फलों की देनेवाली है ।।२९

अधो नागेशस्त्वं क्षिति-पतिरपि त्वं सुर-पतिः ।
यमस्त्वं पाशी त्वं विधिरसि हरिस्त्वं शिव इति ।।
विभिन्नां त्वय्येवं विदधतु विधेयो गिरि-सुते! ।
प्रमाकारां वाणीं सकल-भुवन-त्राण-फलिताम् ।।३०

हे गिरि-राज-पुत्रि! तुम्हारा भक्त सम्पूर्ण भुवनों की रक्षा करने में समर्थ तुम्हें अपनी यथार्थ-वाणी द्वारा कहता है कि पाताल में तुम शेष-नाग बनकर पृथ्वी को धारण करती हो, राजा के रूप में इस भूमि की पालन-कारिणी हो, स्वर्ग में तुम इन्द्र बनकर देवताओं की रक्षा करनेवाली हो, बहुत क्या कहूँ–ब्रह्मा, विष्णु, शिव, यम-राज और वरुण–सब तुम्हारे रूप हैं अर्थात् तुम्हारे ही ये भिन्न रूप हैं, जो कार्य-वश बन गए हैं ।।३०

भवानी सर्वेशा निगम-जननी सिन्धु-तनया ।
शची दुर्गा वाणी सकल-भुवनोत्कृष्ट वपुषी ।।
भवोत्पत्तौ वीजा सकल-सुर-रूपा च विशदा ।
तनीयांसी माता इति पद-विधां नौमि भवतीम् ।।३१

प्रथम पद्य में बताया कि सब देवता भगवती के ही रूप हैं। अब बताते हैं कि सब देवताओं की शक्तियाँ भी भगवती जगदम्बिका के ही रूप हैं–

सबके स्वामी (श्रेष्ठ) शिव जी की भवानी तुम्हीं हो, वेद-माता ब्रह्माणी (ब्रह्मा की पत्नी), सिन्धु-तनया लक्ष्मी (विष्णु-पत्नी), इन्द्राणी (इन्द्र-पत्नी), सरस्वती, सम्पूर्ण भुवनों में उत्कृष्ट रूप धारण करनेवाली, सृष्टि-निर्माण की बीज-रूपा, सर्व-देव-मयी बड़ी-से-बड़ी मूर्तिवाली, छोटी-से-छोटी शरीरवाली तुझे मैं नमस्कार करता हूँ ।।३१

त्वन्मौलि-वास-रवि-चन्द्र-कला-प्रफुल्लम् ।
पुष्पं सरोवर - समे च मुखे मदीये ।।
भक्तिस्तवैव वरदे! तव पाद - पद्मे ।
आधादिदं भवतु भक्त-जनाश्रया सा ।।३२

हे वरदे बाला-त्रिपुर-सुन्दरि! तुम्हारे मुकुट में स्थित सूर्य और चन्द्रमा की किरणों से मेरे मुख-रूपी सरोवर में तुम्हारा स्तवन-रूपी कमल पुष्प सदैव खिला रहे अर्थात् दिन में सूर्य द्वारा कमल और रात में चन्द्रमा द्वारा कुमुद जैसे खिलता है, उसी प्रकार मेरे आनन में दिन-रात तुम्हारी स्तुति का कमल पुष्प खिलता रहे। भक्त-जनों को आश्रय देनेवाली तुम्हारे चरण-कमलों की भक्ति मेरे हृदय में सदा बनी रहे, जिसने कि इस स्तुति की रचना की है अर्थात् तुम्हारी भक्ति ने ही मुझे तुम्हारे स्तुति के लिए प्रेरित किया है ।।३२

।। श्रीकालिदास-सुत-दशमी-गर्भज-योगानन्द-कृतं बाला-त्रिपुर-सुन्दरी-महिम्न-स्तोत्रं ।।

❐❐❐

[१०]

श्रीबाला-सहस्त्र-नाम-साधना

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्रीबाला-त्रिपुरा-सहस्त्र-नाम-माला-मन्त्रस्य भगवान् श्रीदक्षिणामूर्ति-वामदेवौ ऋषी, गायत्री छन्दः, प्रकट-गुप्त-गुप्त-तर-सम्प्रदाय-कुल-कौलोत्तीर्णा निगर्भ-रहस्याति-रहस्य-परापर-रहस्याचिन्त्य-वर्तिनी देवता, 'आकाश'-वीजं, 'माया'-शक्तिः, 'काम-राज'-कीलकं, समस्त-धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीत्यर्थं श्रीबाला-सहस्त्र-नाम-जपे विनियोगः ।

(विशेष : सहस्त्र-नामावली के 'नाम'-मन्त्रों के द्वारा 'जप' करते समय उक्त विनियोग करना चाहिए। यदि 'नाम'-मन्त्रों के द्वारा 'पूजन' करना हो, तो 'नाम-जपे विनियोगः' के स्थान पर 'नाम-पूजने विनियोगः' पढ़ना चाहिए और यदि पूजन के साथ 'तर्पण' भी करना हो, तो 'नाम-पूजने-तर्पणे च विनियोगः' पढ़ना चाहिए। 'नाम'-मन्त्रों से होम करना हो, तो 'नाम-होमे विनियोगः' पढ़ना चाहिए।)।

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

भगवान् श्रीदक्षिणामूर्ति-वामदेवौ-ऋषिभ्यां नमः शिरसि, गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, प्रकट-गुप्त-गुप्त-तर-सम्प्रदाय-कुल-कौलोत्तीर्णा निगर्भ-रहस्याति-रहस्य-परापर-रहस्याचिन्त्य-वर्तिनी -देवतायै नमः हृदये, 'आकाश'-वीजाय नमः गुह्ये, 'माया'-शक्तये नमः पादयोः, 'काम-राज'-कीलकाय नमः नाभौ, समस्त-धर्मार्थ-काम-मोक्षार्थे श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीत्यर्थं श्रीबाला-सहस्त्र-नाम-जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

(विशेष : ऊपर 'नाम'-मन्त्र द्वारा 'पूजन' करते समय 'नाम-जपे विनियोगाय नमः' के स्थान पर 'नाम-पूजने विनियोगाय नमः' और ' पूजन -तर्पण' दोनों करते समय 'नाम-पूजने-तर्पणे च विनियोगाय नमः' पढ़ें तथा 'हवन' करना हो, तो 'नाम-होमे विनियोगाय नमः' पढ़ें ।) ।

॥ ध्यान ॥

आधारे तरुणार्क - बिम्ब - सदृशं हेम - प्रभं वाग्भवम् ,
वीजं मन्मथमिन्द्र-गोप-सदृशं हृत् - पङ्कजे संस्थितम् ।
चक्रं भाल - मयं शशाङ्क - रुचिरं बीजं तु तार्तीयकम् ,
ये ध्यायन्ति पद-त्रयं तव शिवे! ते यान्ति सूक्ष्मां गतिम् ॥

॥ मानस-पूजन ॥

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः ।
ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मक पुष्पं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः ।
ॐ यं वायु तत्त्वात्मकं धूपं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये घ्रापयामि नमः ।
ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये दर्शयामि नमः ।
ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये निवेदयामि नमः ।
ॐ शं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबाला-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः ।

श्रीबाला-सहस्त्र-नामावली

ॐ श्री कल्याण्यै नमः
ॐ श्री कमलायै नमः
ॐ श्री काल्यै नमः
ॐ श्री कराल्यै नमः
ॐ श्री काक-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री कामाक्षायै नमः
ॐ श्री कामदायै नमः
ॐ श्री काम्यायै नमः
ॐ श्री कामनायै नमः
ॐ श्री काम-चारिण्यै नमः ।।१०
ॐ श्री कौमार्यै नमः
ॐ श्री करुणा-मूर्तये नमः
ॐ श्री कलि-कल्मष-नाशिन्यै नमः
ॐ श्री कात्यायन्यै नमः
ॐ श्री कलाधारायै नमः
ॐ श्री कौमुद्यै नमः
ॐ श्री कमल-प्रियायै नमः
ॐ श्री कीर्तिदायै नमः
ॐ श्री बुद्धिदायै नमः
ॐ श्री मेधायै नमः ।।२०
ॐ श्री नीतिज्ञायै नमः
ॐ श्री नीति-वत्सलायै नमः
ॐ श्री माहेश्वर्यै नमः
ॐ श्री महा-मायायै नमः
ॐ श्री महा-तेजायै नमः
ॐ श्री महेश्वर्यै नमः
ॐ श्री काल-रात्र्यै नमः
ॐ श्री महा-रात्र्यै नमः
ॐ श्री कालिन्द्यै नमः
ॐ श्री कल्प-रूपिण्यै नमः ।।३०
ॐ श्री महा-जिह्वायै नमः
ॐ श्री महा-लोलायै नमः
ॐ श्री महा-दंष्ट्रायै नमः
ॐ श्री महा-भुजायै नमः
ॐ श्री महा-मोहान्धकारघ्न्यै नमः
ॐ श्री महा-मोक्ष-प्रदायिन्यै नमः
ॐ श्री महा-दारिद्र्य-राशिघ्न्यै नमः
ॐ श्री महा-शत्रु-विमर्दिन्यै नमः
ॐ श्री महा-शक्त्यै नमः
ॐ श्री महा-ज्योत्यै नमः ।।४०
ॐ श्री महाऽसुर-विमर्दिन्यै नमः
ॐ श्री महा-कायायै नमः
ॐ श्री महा-वीजायै नमः
ॐ श्री महा-पातक-नाशिन्यै नमः
ॐ श्री महा-मखायै नमः
ॐ श्री मन्त्र-मय्यै नमः
ॐ श्री मणिपूर-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री मानस्यै नमः
ॐ श्री मानदायै नमः
ॐ श्री मान्यायै नमः ।।५०
ॐ श्री मनश्चक्षुरगोचरायै नमः
ॐ श्री गण-मात्रे नमः
ॐ श्री गायत्र्यै नमः
ॐ श्री गण-गन्धर्व-सेवितायै नमः
ॐ श्री गिरिजायै नमः
ॐ श्री गिरिशायै नमः
ॐ श्री साध्व्यै नमः
ॐ श्री गिरिसायै नमः
ॐ श्री गिरि-सम्भवायै नमः
ॐ श्री चण्डेश्वर्यै नमः ।।६०
ॐ श्री चन्द्र-रूपायै नमः
ॐ श्री प्रचण्डायै नमः

ॐ श्री चण्ड-मालिन्यै नमः
ॐ श्री चर्चिकायै नमः
ॐ श्री चर्चिताकारायै नमः
ॐ श्री चण्डिकायै नमः
ॐ श्री चारु-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री यज्ञेश्वर्यै नमः
ॐ श्री यज्ञ-रूपायै नमः
ॐ श्री जप-परायणायै नमः ।।७०
ॐ श्री यज्ञ-परायणायै नमः
ॐ श्री यज्ञ-मात्रे नमः
ॐ श्री यज्ञ-गोप्त्र्यै नमः
ॐ श्री यज्ञेश्यै नमः
ॐ श्री यज्ञ-सम्भवायै नमः
ॐ श्री यज्ञ-सिद्ध्यै नमः
ॐ श्री यज्ञ-क्रिया-सिद्ध्यै नमः
ॐ श्री यज्ञाङ्ग्यै नमः
ॐ श्री यज्ञ-रक्षगायै नमः
ॐ श्री यज्ञ-प्रियायै नमः ।।८०
ॐ श्री यज्ञ-रूपायै नमः
ॐ श्री याज्यै नमः
ॐ श्री यज्ञ-कृपाऽऽलयायै नमः
ॐ श्री जालन्धर्यै नमः
ॐ श्री जगन्मात्रे नमः
ॐ श्री जात-वेदायै नमः
ॐ श्री जगत् -प्रियायै नमः
ॐ श्री जितेन्द्रियायै नमः
ॐ श्री जित-क्रोधायै नमः
ॐ श्री जनन्यै नमः ।।९०
ॐ श्री जन्म-दायिन्यै नमः
ॐ श्री गङ्गायै नमः
ॐ श्री गोदावर्यै नमः
ॐ श्री गौर्यै नमः
ॐ श्री गौतम्यै नमः
ॐ श्री शत-ह्रदायै नमः
ॐ श्री घुर्घुरायै नमः
ॐ श्री वेद-गर्भायै नमः
ॐ श्री रेविकायै नमः
ॐ श्री कर-सम्भवायै नमः ।।१००
ॐ श्री सिन्धवे नमः
ॐ श्री मन्दाकिन्यै नमः
ॐ श्री क्षिप्रायै नमः
ॐ श्री यमुनायै नमः
ॐ श्री सरस्वत्यै नमः
ॐ श्री चन्द्र-भागायै नमः
ॐ श्री पिपाशायै नमः
ॐ श्री गण्डक्यै नमः
ॐ श्री विन्ध्य-वासिन्यै नमः
ॐ श्री नर्मदायै नमः ।।११०
ॐ श्री कह्न-कावेर्यै नमः
ॐ श्री वेत्रवत्यायै नमः
ॐ श्री कौशिक्यै नमः
ॐ श्री महोन-तनयायै नमः
ॐ श्री अहल्यायै नमः
ॐ श्री चण्यकावत्यै नमः
ॐ श्री अयोध्यायै नमः
ॐ श्री मथुरायै नमः
ॐ श्री मायायै नमः
ॐ श्री काश्यै नमः ।।१२०
ॐ श्री काञ्च्यै नमः
ॐ श्री अवन्तिकायै नमः
ॐ श्री द्वारावत्यै नमः
ॐ श्री तीर्थेश्यै नमः
ॐ श्री महा-किल्विष-नाशिन्यै नमः
ॐ श्री पद्मिन्यै नमः

ॐ श्री पद्म-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री पद्म-किञ्जल्क-वासिन्यै नमः
ॐ श्री पद्म-वक्त्रायै नमः
ॐ श्री पद्माक्ष्यै नमः ।।१३०
ॐ श्री पद्मस्थायै नमः
ॐ श्री पद्म-सम्भवायै नमः
ॐ श्री ह्रींकार्यै नमः
ॐ श्री कुण्डल्यै नमः
ॐ श्री धात्र्यै नमः
ॐ श्री हत्-पद्मस्थायै नमः
ॐ श्री सुलोचनायै नमः
ॐ श्री श्रींकार्यै नमः
ॐ श्री भूषणायै नमः
ॐ श्री लक्ष्म्यै नमः ।।१४०
ॐ श्री क्लीं-कार्यै नमः
ॐ श्री क्लेश-नाशिन्यै नमः
ॐ श्री हरि-प्रियायै नमः
ॐ श्री हरेर्मूर्तये नमः
ॐ श्री हरि-नेत्र-कृतालयायै नमः
ॐ श्री हरि-वक्त्रोद्-भवायै नमः
ॐ श्री शान्तायै नमः
ॐ श्री हरि-वक्षः-स्थितालयायै नमः
ॐ श्री वैष्णव्यै नमः
ॐ श्री विष्णु-रूपायै नमः ।।१५०
ॐ श्री विष्णु-माता-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ श्री विष्णु-मायायै नमः
ॐ श्री विशालाक्ष्यै नमः
ॐ श्री विशाल-नयनोज्ज्वलायै नमः
ॐ श्री विश्वेश्वर्यै नमः
ॐ श्री विश्वात्मायै नमः
ॐ श्री विश्वेश्यै नमः
ॐ श्री विश्व-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री विश्वाधारायै नमः
ॐ श्री शिवाधारायै नमः ।।१६०
ॐ श्री शिव-नाथायै नमः
ॐ श्री शिव-प्रियायै नमः
ॐ श्री शिव-मात्रे नमः
ॐ श्री शिवाक्ष्यै नमः
ॐ श्री शिवदायै नमः
ॐ श्री शिव-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री भवेश्वर्यै नमः
ॐ श्री भवाराध्यायै नमः
ॐ श्री भवेश्यै नमः
ॐ श्री भव-नायिकायै नमः ।।१७०
ॐ श्री भव-मात्रे नमः
ॐ श्री भव-गम्यायै नमः
ॐ श्री भव-कण्टक-नाशिन्यै नमः
ॐ श्री भव-प्रियायै नमः
ॐ श्री भवानन्दायै नमः
ॐ श्री भवान्यै नमः
ॐ श्री भव-मोचिन्यै नमः
ॐ श्री गीत्यै नमः
ॐ श्री वरेण्यायै नमः
ॐ श्री सावित्र्यै नमः ।।१८०
ॐ श्री ब्रह्माण्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्मेश्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्मदायै नमः
ॐ श्री ब्राह्म्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्माण्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-वादिन्यै नमः
ॐ श्री दुर्गस्थायै नमः
ॐ श्री दुर्ग-रूपायै नमः
ॐ श्री दुर्गायै नमः ।।१९०

ॐ श्री दुर्गार्ति-नाशिन्यै नमः
ॐ श्री त्रयोदायै नमः
ॐ श्री ब्रह्मदायै नमः
ॐ श्री ब्राह्मयै नमः
ॐ श्री ब्रह्माण्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्म-वादिन्यै नमः
ॐ श्री त्वगस्थायै नमः
ॐ श्री त्वग-रूपायै नमः
ॐ श्री त्वगायै नमः
ॐ श्री त्वगार्ति-हारिण्यै नमः ।।२००
ॐ श्री स्वर्गमायै नमः
ॐ श्री निर्गमायै नमः
ॐ श्री दातायै नमः
ॐ श्री दायायै नमः
ॐ श्री दोग्ध्र्यै नमः
ॐ श्री दुरापहायै नमः
ॐ श्री दुरघ्न्यै नमः
ॐ श्री दुराराध्यायै नमः
ॐ श्री दूर-दुष्कृत-नाशिन्यै नमः
ॐ श्री पञ्चस्थायै नमः ।।२१०
ॐ श्री पञ्चम्यै नमः
ॐ श्री पूर्णायै नमः
ॐ श्री पूर्ण-पीठ-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री सत्त्वस्थायै नमः
ॐ श्री सत्त्व-रूपायै नमः
ॐ श्री सत्त्वदायै नमः
ॐ श्री सत्त्व-सम्भवायै नमः
ॐ श्री रजस्थायै नमः
ॐ श्री रजो-रूपायै नमः
ॐ श्री रजो-गुण-समुद्भवायै नमः ।।२२०
ॐ श्री तामस्यै नमः
ॐ श्री तमो-रूपायै नमः
ॐ श्री तामसी-प्रियायै नमः
ॐ श्री तमसः-प्रियायै नमः
ॐ श्री तमो-गुण-समुद्भूतायै नमः
ॐ श्री सात्त्विक्यै नमः
ॐ श्री राजस्यै नमः
ॐ श्री तम्यै नमः
ॐ श्री कलायै नमः
ॐ श्री काष्ठायै नमः ।।२३०
ॐ श्री निमेषायै नमः
ॐ श्री स्व-कृतायै नमः
ॐ श्री अर्ध-मासायै नमः
ॐ श्री मासायै नमः
ॐ श्री सम्वत्सर-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ श्री युगस्थायै नमः
ॐ श्री युग-रूपायै नमः
ॐ श्री कल्पस्थायै नमः
ॐ श्री कल्प-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री नाना-रत्न-विचित्राङ्ग्यै नमः ।।२४०
ॐ श्री नानाऽऽभरण-मण्डितायै नमः
ॐ श्री विश्वात्मिकायै नमः
ॐ श्री विश्व-मात्रे नमः
ॐ श्री विश्व-पाशायै नमः
ॐ श्री विधायिन्यै नमः
ॐ श्री विश्वास-कारिण्यै नमः
ॐ श्री विश्वायै नमः
ॐ श्री विश्व-शक्त्यै नमः
ॐ श्री विचक्षणायै नमः
ॐ श्री जपा-कुसुम-सङ्काशायै नमः ।।२५०
ॐ श्री दाडिमी-कुसमोपमायै नमः
ॐ श्री चतुरङ्गायै नमः
ॐ श्री चतुर्बाहुश्चतुरायै नमः
ॐ श्री चारु-हासिन्यै नमः

ॐ श्री सर्वेश्यै नमः
ॐ श्री सर्वदायै नमः
ॐ श्री सर्वायै नमः
ॐ श्री सर्वज्ञायै नमः
ॐ श्री सर्व-दायिन्यै नमः
ॐ श्री सर्वेश्वर्यै नमः ।।२६०
ॐ श्री सर्व-विद्यायै नमः
ॐ श्री शर्वाण्यै नमः
ॐ श्री सर्व-मङ्गलायै नमः
ॐ श्री नलिन्यै नमः
ॐ श्री नन्दिन्यै नमः
ॐ श्री नन्दायै नमः
ॐ श्री आनन्दानन्द-वर्द्धिन्यै नमः
ॐ श्री सर्व-भूतेषु-व्यापिन्यै नमः
ॐ श्री भव-भार-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री कुलीनायै नमः ।।२७०
ॐ श्री कुल-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री कुल-धर्मोपदेशिन्यै नमः
ॐ श्री सर्व-शृङ्गार-वेशाढ्यायै नमः
ॐ श्री पाशांकुश-करोद्यतायै नमः
ॐ श्री सूर्य-कोटि-सहस्राभायै नमः
ॐ श्री चन्द्र-कोटि-निभाननायै नमः
ॐ श्री गणेश-कोटि-लावण्यायै नमः
ॐ श्री विष्णु-कोट्यिरि-मर्दिन्यै नमः
ॐ श्री दावाग्नि-कोटि-ज्वलिन्यै नमः
ॐ श्री रुद्र-कोट्युग्र-रूपिण्यै नमः ।।२८०
ॐ श्री समुद्र-कोटि-गम्भीरायै नमः
ॐ श्री वायु-कोटि-महा-बलायै नमः
ॐ श्री आकाश-कोटि-विस्तारायै नमः
ॐ श्री यम-कोटि-भयङ्करायै नमः
ॐ श्री मेरु-कोटि-समुच्छायायै नमः
ॐ श्री गुण-कोटि-समृद्धिदायै नमः
ॐ श्री निष्कलङ्कायै नमः
ॐ श्री निराधारायै नमः
ॐ श्री निर्गुणायै नमः
ॐ श्री गुण-वर्जितायै नमः ।।२९०
ॐ श्री अशोकायै नमः
ॐ श्री शोक-रहितायै नमः
ॐ श्री ताप-त्रय-विवर्जितायै नमः
ॐ श्री विशिष्टायै नमः
ॐ श्री विश्व-जनन्यै नमः
ॐ श्री विश्व-मोह-विधारिण्यै नमः
ॐ श्री चित्रायै नमः
ॐ श्री विचित्रायै नमः
ॐ श्री चित्राश्यै नमः
ॐ श्री हेतु-गर्भायै नमः ।।३००
ॐ श्री कुशेश्वर्यै नमः
ॐ श्री इच्छा-शक्त्यै नमः
ॐ श्री ज्ञान-शक्त्यै नमः
ॐ श्री क्रिया-शक्त्यै नमः
ॐ श्री शुचि-स्मितायै नमः
ॐ श्री श्रुति-मय्यै नमः
ॐ श्री स्मृति-मय्यै नमः
ॐ श्री सत्यायै नमः
ॐ श्री श्रुति-रूपायै नमः
ॐ श्री श्रुति-प्रियायै नमः ।।३१०
ॐ श्री श्रुति-प्रज्ञायै नमः
ॐ श्री महा-सत्यायै नमः
ॐ श्री पञ्च-तत्त्वोपरि-स्थितायै नमः
ॐ श्री पार्वत्यै नमः
ॐ श्री हिमवन्-पुत्र्यै नमः
ॐ श्री पाशस्थायै नमः
ॐ श्री पाश-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री जयन्त्यै नमः

ॐ श्री भद्र-काल्यै नमः
ॐ श्री अहल्यायै नमः ।।३२०
ॐ श्री कुल-नायिकायै नमः
ॐ श्री भूत-धात्र्यै नमः
ॐ श्री भूतेश्यै नमः
ॐ श्री भूतस्थायै नमः
ॐ श्री भूत-भाविन्यै नमः
ॐ श्री महा-कुण्डलिनी-शक्त्यै नमः
ॐ श्री महा-विभव-वर्द्धिन्यै नमः
ॐ श्री हंसाक्ष्यै नमः
ॐ श्री हंस-रूपायै नमः
ॐ श्री हंसस्थायै नमः ।।३३०
ॐ श्री हंस-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री सोमाग्नि-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री सूर्याग्नि-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री मणिपूरक-वासिन्यै नमः
ॐ श्री षट्-पत्राम्भोज-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री मणिपूर-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री द्वादशार-सरोजस्थायै नमः
ॐ श्री सूर्य-मण्डल-वासिन्यै नमः
ॐ श्री अकलङ्कायै नमः
ॐ श्री शशाङ्काभायै नमः ।।३४०
ॐ श्री षोडशार-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री द्वि-पत्र-दल-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री ललाट-तल-वासिन्यै नमः
ॐ श्री डाकिन्यै नमः
ॐ श्री शाकिन्यै नमः
ॐ श्री लाकिन्यै नमः
ॐ श्री काकिन्यै नमः
ॐ श्री राकिन्यै नमः
ॐ श्री हाकिन्यै नमः
ॐ श्री षट्-चक्र-क्रम-वासिन्यै नमः ।।३५०
ॐ श्री सृष्टि-विनाशायै नमः
ॐ श्री स्थिति-विनाशायै नमः
ॐ श्री सृष्टि-कारिण्यै नमः
ॐ श्री स्थित्यन्त-कारिण्यै नमः
ॐ श्री श्रीकण्ठायै नमः
ॐ श्री श्रीप्रियायै नमः
ॐ श्री कण्ठायै नमः
ॐ श्री नादाख्यायै नमः
ॐ श्री बिन्दु-मालिन्यै नमः
ॐ श्री चतुःषष्टि-कलाधारायै नमः ।।३६०
ॐ श्री मेरु-दण्ड-समाश्रयायै नमः
ॐ श्री महा-काल्यै नमः
ॐ श्री द्युत्यै नमः
ॐ श्री मेधायै नमः
ॐ श्री स्वधायै नमः
ॐ श्री तुष्ट्यै नमः
ॐ श्री महा-द्युत्यै नमः
ॐ श्री हिंगुलायै नमः
ॐ श्री मङ्गल-शिवायै नमः
ॐ श्री सुषुम्णा-मध्य-गामिन्यै नमः ।।३७०
ॐ श्री परायै नमः
ॐ श्री घोरायै नमः
ॐ श्री करालाक्ष्यै नमः
ॐ श्री विजयायै नमः
ॐ श्री जय-शालिन्यै नमः
ॐ श्री हृत्-पद्म-निलया-देव्यै नमः
ॐ श्री भीमायै नमः
ॐ श्री भैरव-नादिन्यै नमः
ॐ श्री आकाश-लिङ्ग-भूतायै नमः
ॐ श्री भुवनोद्यान-वासिन्यै नमः ।।३८०
ॐ श्री महा-सूक्ष्मायै नमः
ॐ श्री अभया-काल्यै नमः

ॐ श्री भीम-रूपायै नमः
ॐ श्री महा-बलायै नमः
ॐ श्री मेनका-गर्भ-सम्भूतायै नमः
ॐ श्री तप्त-काञ्चन-सन्निभायै नमः
ॐ श्री अन्तःस्थायै नमः
ॐ श्री कूट-वीजायै नमः
ॐ श्री त्रिकूटाचल-वासिन्यै नमः
ॐ श्री वर्णाक्षायै नमः ।।३९०
ॐ श्री वर्ण-रहितायै नमः
ॐ श्री पञ्चाशद्-वर्ण-भेदिन्यै नमः
ॐ श्री विद्याधर्यै नमः
ॐ श्री लोक-धात्र्यै नमः
ॐ श्री अप्सरायै नमः
ॐ श्री अप्सरः-प्रियायै नमः
ॐ श्री दक्षायै नमः
ॐ श्री दाक्षायण्यै नमः
ॐ श्री दीक्षायै नमः
ॐ श्री दक्ष-यज्ञ-विनाशिन्यै नमः ।।४००
ॐ श्री यशस्विन्यै नमः
ॐ श्री यशः पूर्णायै नमः
ॐ श्री यशोदा-गर्भ-सम्भवायै नमः
ॐ श्री देवक्यै नमः
ॐ श्री देव-मात्रे नमः
ॐ श्री राधिकायै नमः
ॐ श्री कृष्ण-वल्लभायै नमः
ॐ श्री अरुन्धत्यै नमः
ॐ श्री शच्यै नमः
ॐ श्री इन्द्राण्यै नमः ।।४१०
ॐ श्री गान्धार्यै नमः
ॐ श्री गन्ध-मोदिन्यै नमः
ॐ श्री ध्यानातीतायै नमः
ॐ श्री ध्यान-गम्यायै नमः
ॐ श्री ध्यानायै नमः
ॐ श्री ध्यानावधारिण्यै नमः
ॐ श्री लम्बोदर्यै नमः
ॐ श्री लम्बोष्ठायै नमः
ॐ श्री जाम्बूवत्यै नमः
ॐ श्री जलोदर्यै नमः ।।४२०
ॐ श्री महोदर्यै नमः
ॐ श्री मुक्त-केश्यै नमः
ॐ श्री मुक्ति-सिद्धिदायै नमः
ॐ श्री कामार्थ-सिद्धिदायै नमः
ॐ श्री तपस्विन्यै नमः
ॐ श्री तपो-निष्ठायै नमः
ॐ श्री अपर्णायै नमः
ॐ श्री पर्ण-पक्षिण्यै नमः
ॐ श्री बाण-धरायै नमः
ॐ श्री चाप-धरायै नमः ।।४३०
ॐ श्री वीरायै नमः
ॐ श्री पाञ्चाल्यै नमः
ॐ श्री पञ्चम-प्रियायै नमः
ॐ श्री गुह्यायै नमः
ॐ श्री गम्भीरायै नमः
ॐ श्री गहनायै नमः
ॐ श्री गुह्य-तत्त्व-निरञ्जनायै नमः
ॐ श्री अशरीरायै नमः
ॐ श्री शरीरस्थायै नमः
ॐ श्री संसारार्णव-तारिण्यै नमः ।।४४०
ॐ श्री अमृतायै नमः
ॐ श्री निष्कलायै नमः
ॐ श्री भद्रायै नमः
ॐ श्री सकलायै नमः
ॐ श्री कृष्ण-पिङ्गलायै नमः
ॐ श्री चक्रेश्वर्यै नमः

ॐ श्री चक्र-हस्तायै नमः
ॐ श्री पाश-चक्र-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री पद्मराग-प्रतीकाशायै नमः
ॐ श्री निर्मलाकाश-सन्निभायै नमः ।।४५०
ॐ श्री ऊर्ध्वस्थायै नमः
ॐ श्री ऊर्ध्व-रूपायै नमः
ॐ श्री ऊर्ध्व-पद्म-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री कार्य-कर्त्र्यै नमः
ॐ श्री कारण-कर्त्र्यै नमः
ॐ श्री पर्वाख्यायै नमः
ॐ श्री पर्व-रूप-संस्थितायै नमः
ॐ श्री रसज्ञायै नमः
ॐ श्री रस-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री गन्धज्ञायै नमः ।।४६०
ॐ श्री गन्ध-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री पर-ब्रह्म-स्वरूपायै नमः
ॐ श्री पर-ब्रह्म-निवासिन्यै नमः
ॐ श्री शब्द-ब्रह्म-स्वरूपायै नमः
ॐ श्री शब्दस्थायै नमः
ॐ श्री शब्द-वर्जितायै नमः
ॐ श्री सिद्धयै नमः
ॐ श्री वृद्धि-परायै नमः
ॐ श्री वृद्धयै नमः
ॐ श्री सकीर्त्यै नमः ।।४७०
ॐ श्री दीप्ति-संस्थितायै नमः
ॐ श्री स्व-गुह्यायै नमः
ॐ श्री शाम्भव्यै नमः
ॐ श्री शक्त्यै नमः
ॐ श्री तत्त्वज्ञायै नमः
ॐ श्री तत्त्व-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री सरस्वत्यै नमः
ॐ श्री भूत-मात्रे नमः
ॐ श्री महा-भूताधिप-प्रियायै नमः
ॐ श्री श्रुति-प्रज्ञाद्यमे सिद्धयै नमः ।।४८०
ॐ श्री दक्ष-कन्यायै नमः
ॐ श्री अपराजितायै नमः
ॐ श्री काम-सन्दीपिन्यै नमः
ॐ श्री कामायै नमः
ॐ श्री सदा-कामायै नमः
ॐ श्री कुतूहलायै नमः
ॐ श्री भोगोपचार-कुशलायै नमः
ॐ श्री अमलायै नमः
ॐ श्री ह्यमलाननायै नमः
ॐ श्री भक्तानुकम्पिन्यै नमः ।।४९०
ॐ श्री मैत्र्यै नमः
ॐ श्री शरणागत-वत्सलायै नमः
ॐ श्री सहस्त्र-भुजायै नमः
ॐ श्री चिच्छक्त्यै नमः
ॐ श्री सहस्त्राक्षायै नमः
ॐ श्री शताननायै नमः
ॐ श्री सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः
ॐ श्री महा-लक्ष्म्यै नमः
ॐ श्री वेद-लक्ष्म्यै नमः
ॐ श्री सुलक्षणायै नमः ।।५००
ॐ श्री यज्ञ-सारायै नमः
ॐ श्री तपस्सारायै नमः
ॐ श्री धर्म-सारायै नमः
ॐ श्री जनेश्वर्यै नमः
ॐ श्री विश्वोदर्यै नमः
ॐ श्री विश्व-सृष्टायै नमः
ॐ श्री विश्वाख्यायै नमः
ॐ श्री विश्वतोमुख्यै नमः
ॐ श्री विश्वास्य-श्रवण-घ्राणायै नमः
ॐ श्री विश्व-मालायै नमः ।।५१०

ॐ श्री परात्मिकायै नमः
ॐ श्री तरुणादित्य-सङ्काशायै नमः
ॐ श्री करणानेक-संकुलायै नमः
ॐ श्री क्षोभिण्यै नमः
ॐ श्री मोहिन्यै नमः
ॐ श्री स्तम्भिन्यै नमः
ॐ श्री जृम्भिण्यै नमः
ॐ श्री रथिनी-सेनायै नमः
ॐ श्री ध्वजिनी-सेनायै नमः
ॐ श्री सर्व-मन्त्र-मय्यै नमः ।।५२०
ॐ श्री त्रय्यै नमः
ॐ श्री ज्ञान-मुद्रायै नमः
ॐ श्री महा-मुद्रायै नमः
ॐ श्री जय-मुद्रायै नमः
ॐ श्री महोत्सवायै नमः
ॐ श्री जटा-जूट-धरायै नमः
ॐ श्री मुक्तायै नमः
ॐ श्री सूक्ष्म-शान्तिर्विभीषणायै नमः
ॐ श्री द्वीपि-चर्म-परीधानायै नमः
ॐ श्री चीर-वल्कल-धारिण्यै नमः ।।५३०
ॐ श्री त्रिशूल-धरायै नमः
ॐ श्री डमरु-धरायै नमः
ॐ श्री नर-माला-विभूषिण्यै नमः
ॐ श्री अत्युग्र-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री उग्रायै नमः
ॐ श्री कल्पान्त-दहनोपमायै नमः
ॐ श्री त्रैलोक्य-साधिन्यै नमः
ॐ श्री साध्यायै नमः
ॐ श्री सिद्ध-साधक-वत्सलायै नमः
ॐ श्री सर्व-विद्या-मय्यै नमः ।।५४०
ॐ श्री सारायै नमः
ॐ श्री असुराम्बुधि-धारिण्यै नमः
ॐ श्री सुभगायै नमः
ॐ श्री सुमुख्यै नमः
ॐ श्री सौम्यायै नमः
ॐ श्री सुशूरायै नमः
ॐ श्री सोम-भूषणायै नमः
ॐ श्री शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशायै नमः
ॐ श्री महा-वृषभ-वाहिन्यै नमः
ॐ श्री महिष्यै नमः ।।५५०
ॐ श्री महिषारूढायै नमः
ॐ श्री महिषासुर-घातिन्यै नमः
ॐ श्री दमिन्यै नमः
ॐ श्री दामिन्यै नमः
ॐ श्री दान्तायै नमः
ॐ श्री दयायै नमः
ॐ श्री दोग्ध्र्यै नमः
ॐ श्री दुरापहायै नमः
ॐ श्री अग्नि-जिह्वायै नमः
ॐ श्री महा-घोरायै नमः ।।५६०
ॐ श्री अघोरायै नमः
ॐ श्री घोर-तराननायै नमः
ॐ श्री नारायण्यै नमः
ॐ श्री नारसिंह्यै नमः
ॐ श्री नृसिंह-हृदय-स्थितायै नमः
ॐ श्री योगेश्वर्यै नमः
ॐ श्री योग-रूपायै नमः
ॐ श्री योग-मालायै नमः
ॐ श्री योगिन्यै नमः
ॐ श्री खेचरी-खेलायै नमः ।।५७०
ॐ श्री भूचरी-खेलायै नमः
ॐ श्री निर्वाण-पद-संश्रयायै नमः
ॐ श्री नागिन्यै नमः
ॐ श्री नाग-कन्यायै नमः

ॐ श्री सुरेशायै नमः
ॐ श्री नाग-नायिकायै नमः
ॐ श्री विष-ज्वालावत्यै नमः
ॐ श्री दीप्तायै नमः
ॐ श्री कला-शत-विभूषणायै नमः
ॐ श्री भीम-वक्त्रायै नमः ।।५८०
ॐ श्री महा-वक्त्रायै नमः
ॐ श्री वक्त्राणां कोटि-धारिण्यै नमः
ॐ श्री महदात्मायै नमः
ॐ श्री धर्मज्ञायै नमः
ॐ श्री धर्माति-सुख-दायिन्यै नमः
ॐ श्री कृष्ण-मूर्त्यै नमः
ॐ श्री महा-मूर्त्यै नमः
ॐ श्री घोर-मूर्तिर्वराननायै नमः
ॐ श्री सर्वेन्द्रिय-मनो-मात्रे नमः
ॐ श्री सर्वेन्द्रिय-मनो-मय्यै नमः ।।५९०
ॐ श्री सर्व-संग्राम-जयदायै नमः
ॐ श्री सर्व-प्रहरणोद्यतायै नमः
ॐ श्री सर्व-पीडोपशमन्यै नमः
ॐ श्री सर्वारिष्ट-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री सर्वैश्वर्य-समुत्पत्त्यै नमः
ॐ श्री सर्व-ग्रह-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री भीतिघ्न्यै नमः
ॐ श्री भक्ति-गम्यायै नमः
ॐ श्री भक्तानामार्ति-नाशिन्यै नमः
ॐ श्री मातङ्ग्यै नमः ।।६००
ॐ श्री मत्त-मातङ्ग्यै नमः
ॐ श्री मातङ्ग-गण-मण्डितायै नमः
ॐ श्री अमृतोदधि-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री कटि-सूत्रैरलंकृतायै नमः
ॐ श्री अमृत-द्वीप-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री प्रबलायै नमः
ॐ श्री वत्सलोज्ज्वलायै नमः
ॐ श्री मणि-मण्डप-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री रत्न-सिंहासन-स्थितायै नमः
ॐ श्री परमानन्द-मुदितायै नमः ।।६१०
ॐ श्री ईषत्-प्रहसिताननायै नमः
ॐ श्री कुमुदायै नमः
ॐ श्री ललितायै नमः
ॐ श्री लोलायै नमः
ॐ श्री लाक्षा-लोहित-लोचनायै नमः
ॐ श्री दिग्-वासायै नमः
ॐ श्री देव-दूत्यै नमः
ॐ श्री देव-देवादि-देवतायै नमः
ॐ श्री सिंहोपरि-समारूढ़ायै नमः
ॐ श्री हिमाचल-निवासिन्यै नमः ।।६२०
ॐ श्री अट्टाट्ट-हासिन्यै नमः
ॐ श्री घोरायै नमः
ॐ श्री घोर-दैत्य-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री अत्युग्रायै नमः
ॐ श्री रक्त-वसनायै नमः
ॐ श्री नाग-केयूर-मण्डितायै नमः
ॐ श्री मुक्ता-हार-स्तनोपेतायै नमः
ॐ श्री तुङ्ग-पीन-पयोधरायै नमः
ॐ श्री रक्तोत्पल-दलाकारायै नमः
ॐ श्री मदाघूर्णित-लोचनायै नमः ।।६३०
ॐ श्री गण्ड-मण्डित-ताटङ्कायै नमः
ॐ श्री गुञ्जा-हार-विभूषणायै नमः
ॐ श्री सङ्गीत-रङ्ग-रसनायै नमः
ॐ श्री वीणा-वाद्य-कुतूहलायै नमः
ॐ श्री समस्त-देव-मूर्त्यै नमः
ॐ श्री ह्यसुर-क्षय-कारिण्यै नमः
ॐ श्री खड्गिन्यै नमः
ॐ श्री शूल-हस्तायै नमः

ॐ श्री चक्रिण्यै नमः
ॐ श्री अक्ष-मालिन्यै नमः ।।६४०
ॐ श्री खड्गिन्यै नमः
ॐ श्री चक्रिण्यै नमः
ॐ श्री दान्तायै नमः
ॐ श्री वज्रिण्यै नमः
ॐ श्री वज्र-दण्डिन्यै नमः
ॐ श्री आनन्दोदधि-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री कटि-सूत्रैरलंकृतायै नमः
ॐ श्री नानाभरण-दीप्ताङ्ग्यै नमः
ॐ श्री नाना-मणि-विभूषणायै नमः
ॐ श्री जगदानन्द-सम्भूत्यै नमः ।।६५०
ॐ श्री चिन्ता-मणि-गुणाकारायै नमः
ॐ श्री त्रैलोक्य-नमिता-पूज्यायै नमः
ॐ श्री चिन्मयानन्द-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री त्रैलोक्य-नन्दिनी-देव्यै नमः
ॐ श्री दुःख-नाशिन्यै नमः
ॐ श्री दुःस्वप्न-नाशिन्यै नमः
ॐ श्री घोराग्नि-दाह-शमन्यै नमः
ॐ श्री राज-दैवादि-शालिन्यै नमः
ॐ श्री महाऽपराध-राशिघ्न्यै नमः
ॐ श्री महा-वैरि-भयापहायै नमः ।।६६०
ॐ श्री रागादि-दोष-रहितायै नमः
ॐ श्री जरा-वर्जितायै नमः
ॐ श्री मरण-वर्जितायै नमः
ॐ श्री चन्द्र-मण्डल-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री पीयूषार्णव-सम्भवायै नमः
ॐ श्री सर्व-देवैः स्तुता देव्यै नमः
ॐ श्री सर्व-सिद्धि-नमस्कृतायै नमः
ॐ श्री अचिन्त्य-शक्ति-रूपायै नमः
ॐ श्री मणि-मन्त्र-महौषध्यै नमः
ॐ श्री स्वस्त्यै नमः ।।६७०
ॐ श्री स्वस्ति-मन्त्यै नमः
ॐ श्री बालायै नमः
ॐ श्री मलयाचल-संस्थितायै नमः
ॐ श्री धात्र्यै नमः
ॐ श्री विधात्र्यै नमः
ॐ श्री संहारायै नमः
ॐ श्री रतिज्ञायै नमः
ॐ श्री रति-दायिन्यै नमः
ॐ श्री रुद्राण्यै नमः
ॐ श्री रुद्र-रूपायै नमः ।।६८०
ॐ श्री रौद्र्यै नमः
ॐ श्री रौद्रार्ति-हारिण्यै नमः
ॐ श्री सर्वज्ञायै नमः
ॐ श्री चौर-धर्मज्ञायै नमः
ॐ श्री रसज्ञायै नमः
ॐ श्री दीन-वत्सलायै नमः
ॐ श्री अनाहतायै नमः
ॐ श्री त्रि-नयनायै नमः
ॐ श्री निर्भरायै नमः
ॐ श्री निर्वृतौ परायै नमः ।।६९०
ॐ श्री परायै नमः
ॐ श्री घोर-करालाक्ष्यै नमः
ॐ श्री स्व-मात्रे नमः
ॐ श्री प्रिय-दायिन्यै नमः
ॐ श्री मन्त्रात्मिकायै नमः
ॐ श्री मन्त्र-गम्यायै नमः
ॐ श्री मन्त्र-मात्रे नमः
ॐ श्री समन्त्रिण्यै नमः
ॐ श्री शुद्धानन्दायै नमः
ॐ श्री महा-भद्रायै नमः ।।७००
ॐ श्री निर्द्वन्द्वायै नमः
ॐ श्री निर्गुणात्मिकायै नमः

ॐ श्री धरण्यै नमः
ॐ श्री धारिण्यै नमः
ॐ श्री पृथ्व्यै नमः
ॐ श्री धरायै नमः
ॐ श्री धात्र्यै नमः
ॐ श्री वसुन्धरायै नमः
ॐ श्री मेरु-मन्दिर-मध्यस्थायै नमः
ॐ श्री शिवायै नमः ।।७१०
ॐ श्री शङ्कर-वल्लभायै नमः
ॐ श्री श्री-गत्यै नमः
ॐ श्री श्री-मय्यै नमः
ॐ श्री श्रेष्ठायै नमः
ॐ श्री श्री-कर्यै नमः
ॐ श्री श्री-विभाविन्यै नमः
ॐ श्री श्री-दायै नमः
ॐ श्री श्रीमायै नमः
ॐ श्री श्री-निवासायै नमः
ॐ श्री श्रीमत्यै नमः ।।७२०
ॐ श्री श्रीमतां गत्यै नमः
ॐ श्री उमायै नमः
ॐ श्री शारङ्गिण्यै नमः
ॐ श्री कृष्णायै नमः
ॐ श्री कुटिलायै नमः
ॐ श्री कुटिलालकायै नमः
ॐ श्री त्रिलोचनायै नमः
ॐ श्री त्रिलोकात्मायै नमः
ॐ श्री पुण्यदायै नमः
ॐ श्री पुण्य-कीर्तिदायै नमः ।।७३०
ॐ श्री अमृतायै नमः
ॐ श्री सत्य-सङ्कल्पायै नमः
ॐ श्री सत्याशा-ग्रन्थि-भेदिन्यै नमः
ॐ श्री परेशायै नमः
ॐ श्री परमा-विद्यायै नमः
ॐ श्री परा-विद्यायै नमः
ॐ श्री परात्परायै नमः
ॐ श्री सुन्दराङ्ग्यै नमः
ॐ श्री सुवर्णाभायै नमः
ॐ श्री सुर-नमस्कृतायै नमः ।।७४०
ॐ श्री असुर-नमस्कृतायै नमः
ॐ श्री प्रजायै नमः
ॐ श्री प्रजावत्यै नमः
ॐ श्री धन्यायै नमः
ॐ श्री धन-समृद्धिदायै नमः
ॐ श्री धान्य-समृद्धिदायै नमः
ॐ श्री ईशान्यै नमः
ॐ श्री भुवनेशान्यै नमः
ॐ श्री भुवनायै नमः
ॐ श्री भुवनेश्वर्यै नमः ।।७५०
ॐ श्री अनन्तानन्त-महिमायै नमः
ॐ श्री जगत् -सारायै नमः
ॐ श्री जगद्-भवायै नमः
ॐ श्री अचिन्त्य-शक्ति-महिमायै नमः
ॐ श्री चिन्त्य-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ श्री अचिन्त्य-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ श्री ज्ञान-गम्यायै नमः
ॐ श्री ज्ञान-मूर्त्यै नमः
ॐ श्री ज्ञानदायै नमः
ॐ श्री ज्ञान-शालिन्यै नमः ।।७६०
ॐ श्री अमितायै नमः
ॐ श्री घोर-रूपायै नमः
ॐ श्री सुधा-धारायै नमः
ॐ श्री सुधावहायै नमः
ॐ श्री भास्कर्यै नमः
ॐ श्री भासुर्यै नमः

ॐ श्री भात्यै नमः
ॐ श्री भास्वदुत्तान-शायिन्यै नमः
ॐ श्री अनुसूयायै नमः
ॐ श्री क्षमायै नमः ।।७७०
ॐ श्री लज्जायै नमः
ॐ श्री दुर्लभायै नमः
ॐ श्री भुवनात्मिकायै नमः
ॐ श्री विश्व-वन्द्यायै नमः
ॐ श्री विश्व-वीजायै नमः
ॐ श्री विश्व-धिये नमः
ॐ श्री विश्व-संस्थितायै नमः
ॐ श्री शीलस्थायै नमः
ॐ श्री शील-रूपायै नमः
ॐ श्री शीलायै नमः ।।७८०
ॐ श्री शील-प्रदायिन्यै नमः
ॐ श्री बोधिन्यै नमः
ॐ श्री बोध-कुशलायै नमः
ॐ श्री रोधिन्यै नमः
ॐ श्री वाधिन्यै नमः
ॐ श्री विद्योतिन्यै नमः
ॐ श्री विचित्रात्मायै नमः
ॐ श्री विद्युत्-पटल-सन्निभायै नमः
ॐ श्री विश्व-योन्यै नमः
ॐ श्री महा-योन्यै नमः ।।७९०
ॐ श्री कर्म-योन्यै नमः
ॐ श्री प्रियम्वदायै नमः
ॐ श्री रोगिण्यै नमः
ॐ श्री रोग-शमन्यै नमः
ॐ श्री महा-रोग-भयावहायै नमः
ॐ श्री वरदायै नमः
ॐ श्री पुष्टिदा-देव्यै नमः
ॐ श्री मानदायै नमः
ॐ श्री मानव-प्रियायै नमः
ॐ श्री कृष्णाङ्ग-वाहिन्यै नमः ।।८००
ॐ श्री कृष्णायै नमः
ॐ श्री कृष्ण-महोदर्यै नमः
ॐ श्री शाम्भव्यै नमः
ॐ श्री शम्भु-रूपायै नमः
ॐ श्री शम्भु-सम्भवायै नमः
ॐ श्री विश्वोदर्यै नमः
ॐ श्री विश्व-मात्रे नमः
ॐ श्री योग-मुद्रायै नमः
ॐ श्री योगिन्यै नमः
ॐ श्री वागीश्वर्यै नमः ।।८१०
ॐ श्री योग-मुद्रायै नमः
ॐ श्री योगिनी-कोटि-सेवितायै नमः
ॐ श्री कौलिकानन्द-कन्यायै नमः
ॐ श्री शृङ्गाट-पीठ-वासिन्यै नमः
ॐ श्री क्षेमङ्कर्यै नमः
ॐ श्री सर्व-रूपायै नमः
ॐ श्री दिव्य-रूपायै नमः
ॐ श्री दिगम्बरायै नमः
ॐ श्री धूम्र-वक्त्रायै नमः
ॐ श्री धूम्र-नेत्रायै नमः ।।८२०
ॐ श्री धूम्र-केश्यै नमः
ॐ श्री धूसरायै नमः
ॐ श्री पिनाकि-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री रुद्र-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री वेताली-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री महा-वेताल-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री तपिन्यै नमः
ॐ श्री तापिन्यै नमः
ॐ श्री दक्षायै नमः
ॐ श्री विष्णु-विद्यायै नमः ।।८३०

ॐ श्री अंकुरायै नमः
ॐ श्री जठरायै नमः
ॐ श्री तीव्रायै नमः
ॐ श्री अग्नि-जिह्वायै नमः
ॐ श्री भयापहायै नमः
ॐ श्री पशुघ्न्यै नमः
ॐ श्री पशु-रूपायै नमः
ॐ श्री पशुदायै नमः
ॐ श्री पशु-वाहिन्यै नमः
ॐ श्री पिता-माता च भ्रातायै नमः ।।८४०
ॐ श्री पशु-पाश-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री चन्द्रमायै नमः
ॐ श्री चन्द्र-रेखायै नमः
ॐ श्री चन्द्र-कान्ति-विभूषणायै नमः
ॐ श्री कुंकुमाङ्कित-सर्वाङ्ग्यै नमः
ॐ श्री सुधीर्बुद्-बुद-लोचनायै नमः
ॐ श्री शुक्लाम्बर-धरा-देव्यै नमः
ॐ श्री वीणा-धारिण्यै नमः
ॐ श्री पुस्तक-धारिण्यै नमः
ॐ श्री श्वेत-वस्त्र-धरा-देव्यै नमः ।।८५०
ॐ श्री श्वेत-पद्मासन-स्थितायै नमः
ॐ श्री रक्ताम्बरायै नमः
ॐ श्री रक्ताङ्ग्यै नमः
ॐ श्री रक्त-पद्म-विलोचनायै नमः
ॐ श्री निष्ठुरायै नमः
ॐ श्री क्रूर-हृदयायै नमः
ॐ श्री अक्रूरायै नमः
ॐ श्री मित-भाषिण्यै नमः
ॐ श्री आकाश-लिङ्ग-सम्भूतायै नमः
ॐ श्री भुवनोद्यान-वासिन्यै नमः ।।८६०
ॐ श्री महा-सूक्ष्मायै नमः
ॐ श्री कङ्काल्यै नमः
ॐ श्री भीम-रूपायै नमः
ॐ श्री महा-बलायै नमः
ॐ श्री अनुपम्य-गुणोपेतायै नमः
ॐ श्री सदा मधुर-भाषिण्यै नमः
ॐ श्री विरूपाक्ष्यै नमः
ॐ श्री सहस्त्राक्ष्यै नमः
ॐ श्री शताक्ष्यै नमः
ॐ श्री बहु-लोचनायै नमः ।।८७०
ॐ श्री दुस्तर्यै नमः
ॐ श्री तारिण्यै नमः
ॐ श्री तारायै नमः
ॐ श्री तरुण्यै नमः
ॐ श्री तार-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री सुधा-धारायै नमः
ॐ श्री धर्मज्ञायै नमः
ॐ श्री धर्म-योगोपदेशन्यै नमः
ॐ श्री भगेश्वर्यै नमः
ॐ श्री भगाराध्यायै नमः ।।८८०
ॐ श्री भगिन्यै नमः
ॐ श्री भगना-प्रियायै नमः
ॐ श्री भग-विश्वायै नमः
ॐ श्री भग-क्लिन्नायै नमः
ॐ श्री भग-योन्यै नमः
ॐ श्री भग-प्रदायै नमः
ॐ श्री भगेश्वरी भग-रूपायै नमः
ॐ श्री भग-गुह्यायै नमः
ॐ श्री भगावहायै नमः
ॐ श्री भगोदर्यै नमः ।।८९०
ॐ श्री भगानन्दायै नमः
ॐ श्री भगाढ्यायै नमः
ॐ श्री भग-मालिन्यै नमः
ॐ श्री सर्व-संक्षोभिणी-शक्त्यै नमः

ॐ श्री सर्व-विद्राविण्यै नमः
ॐ श्री मालिन्यै नमः
ॐ श्री माधव्यै नमः
ॐ श्री माध्व्यै नमः
ॐ श्री मद-रूपायै नमः
ॐ श्री मदोत्कटायै नमः ।।९००
ॐ श्री भेरुण्डायै नमः
ॐ श्री चण्डिकायै नमः
ॐ श्री ज्योत्सनायै नमः
ॐ श्री विश्व-चक्षवे नमः
ॐ श्री तपोवहायै नमः
ॐ श्री सु-प्रसन्नायै नमः
ॐ श्री महा-दूत्यै नमः
ॐ श्री यम-दूत्यै नमः
ॐ श्री भयङ्कर्यै नमः
ॐ श्री उन्मादिन्यै नमः ।।९१०
ॐ श्री महा-रूपायै नमः
ॐ श्री दिव्य-रूपायै नमः
ॐ श्री सुरार्चितायै नमः
ॐ श्री चैतन्य-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री नित्यायै नमः
ॐ श्री नित्य-क्लिन्नायै नमः
ॐ श्री मदोल्लसायै नमः
ॐ श्री मदिरानन्द-कैवल्यायै नमः
ॐ श्री मदिराक्ष्यै नमः
ॐ श्री मदालसायै नमः ।।९२०
ॐ श्री सिद्धेश्वर्यै नमः
ॐ श्री सिद्ध-विद्यायै नमः
ॐ श्री सिद्धाद्यायै नमः
ॐ श्री सिद्ध-वन्दितायै नमः
ॐ श्री सिद्धार्चितायै नमः
ॐ श्री सिद्ध-मात्रे नमः
ॐ श्री सिद्ध-सर्वार्थ-साधिकायै नमः
ॐ श्री मनोन्मय्यै नमः
ॐ श्री गुणातीतायै नमः
ॐ श्री परं-ज्योतिः-स्वरूपिण्यै नमः ।।९३०
ॐ श्री परेश्यै नमः
ॐ श्री पारगायै नमः
ॐ श्री पारायै नमः
ॐ श्री पार-सिद्ध्यै नमः
ॐ श्री परा-गत्यै नमः
ॐ श्री विमलायै नमः
ॐ श्री मोहिनी-रूपायै नमः
ॐ श्री मधु-पान-परायणायै नमः
ॐ श्री वेद-वेदाङ्ग-जनन्यै नमः
ॐ श्री सर्व-शास्त्र-विशारदायै नमः ।।९४०
ॐ श्री सर्व-वेद-मयी विद्यायै नमः
ॐ श्री सर्व-शास्त्र-मयी विद्यायै नमः
ॐ श्री सर्व-ज्ञान-मयी देव्यै नमः
ॐ श्री सर्व-धर्म-मयीश्वर्यै नमः
ॐ श्री सर्व-यज्ञ-मयी-यज्वायै नमः
ॐ श्री सर्व-मन्त्राधिकारिण्यै नमः
ॐ श्री त्रैलोक्याकर्षिणी देव्यै नमः
ॐ श्री सर्वाद्यानन्द-रूपिण्यै नमः
ॐ श्री सर्व-सम्पत्त्यधिष्ठात्र्यै नमः
ॐ श्री सर्व-विद्राविणी परायै नमः ।।९५०
ॐ श्री सर्व-संक्षोभिणी देव्यै नमः
ॐ श्री सर्व-मङ्गल-कारिण्यै नमः
ॐ श्री त्रैलोक्य-रञ्जनी देव्यै नमः
ॐ श्री सर्व-स्तम्भन-कारिण्यै नमः
ॐ श्री त्रैलोक्य-जयिनी देव्यै नमः
ॐ श्री सर्वोन्माद-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ श्री सर्व-सम्मोहिनी देव्यै नमः
ॐ श्री सर्व-वश्यङ्कर्यै नमः

ॐ श्री सर्वार्थ-साधिनी देव्यै नमः
ॐ श्री सर्व-सम्पत्ति-दायिन्यै नमः ।।९६०
ॐ श्री सर्व-काम-प्रदा देव्यै नमः
ॐ श्री सर्व-मङ्गल-कारिण्यै नमः
ॐ श्री सर्व-सिद्धि-प्रदा देव्यै नमः
ॐ श्री सर्व-दुःख-विमोचिन्यै नमः
ॐ श्री सर्व-मृत्यु-प्रशमन्यै नमः
ॐ श्री सर्व-विघ्न-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री सर्वाङ्ग-सुन्दरी मात्रे नमः
ॐ श्री सर्व-सौभाग्य-दायिन्यै नमः
ॐ श्री सर्वदायै नमः
ॐ श्री सर्व-शक्त्यै नमः ।।९७०
ॐ श्री सर्वेश्वर्य-फल-प्रदायै नमः
ॐ श्री सर्व-ज्ञान-मयी-देव्यै नमः
ॐ श्री सर्व-व्याधि-विनाशिन्यै नमः
ॐ श्री सर्वाधारायै नमः
ॐ श्री सर्व-रूपायै नमः
ॐ श्री सर्व-पाप-हरायै नमः
ॐ श्री सर्वानन्द-मयी देव्यै नमः
ॐ श्री सर्व-रक्षा-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ श्री सर्व-लक्ष्मी-मयी विद्यायै नमः
ॐ श्री सर्वेप्सित-फल-प्रदायै नमः ।।९८०
ॐ श्री सर्व-दुःख-प्रशमन्यै नमः
ॐ श्री परमानन्द-दायिन्यै नमः
ॐ श्री त्रिकोण-निलयायै नमः
ॐ श्री त्रिष्टायै नमः
ॐ श्री त्रि-मतायै नमः
ॐ श्री त्रि-तनु-स्थितायै नमः
ॐ श्री त्रै-विद्यायै नमः
ॐ श्री त्रि-स्मारायै नमः
ॐ श्री त्रैलोक्य-त्रिपुरेश्वर्यै नमः
ॐ श्री त्रिकोदरस्थायै नमः ।।९९०
ॐ श्री त्रिविधायै नमः
ॐ श्री त्रिपुरायै नमः
ॐ श्री त्रिपुरात्मिकायै नमः
ॐ श्री त्रि-धात्र्यै नमः
ॐ श्री त्रि-दशायै नमः
ॐ श्री त्र्यक्षायै नमः
ॐ श्री त्रिघ्न्यै नमः
ॐ श्री त्रिपुर-वाहिन्यै नमः
ॐ श्री त्रिपुर-श्रिये नमः
ॐ श्रीस्व-जननीबाला-त्रिपुर-सुन्दर्यैनमः ।।१०००

उक्त १००० 'नाम'-मन्त्रों से 'श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी' का 'जपार्चन' कर ऋष्यादि-कराङ्ग-न्यास, ध्यान, मानस-पूजन पुनः कर भगवती को 'पुष्पाञ्जलि' अर्पित करनी चाहिए।

'हवन' करने के लिए उक्त 'नाम'-मन्त्रों के अन्त में 'नमः' के स्थान पर 'स्वाहा' जोड़कर आहुतियाँ देनी चाहिए। 'पूजन-तर्पण' करने के लिए भगवती बाला-त्रिपुर-सुन्दरी' के 'यन्त्र-राज' में उक्त १००० 'नाम'-मन्त्रों के अन्त में 'पूजयामि नमः, तर्पयामि नमः' जोड़कर कुंकुम, गन्धाक्षत, पुष्प (वीर-साधक 'कारण' एवं 'शुद्धि' से) से 'पूजन-तर्पण' कर सकते हैं। भगवती बाला-त्रिपुर-सुन्दरी का 'यन्त्र-राज' अगले पृष्ठ पर प्रकाशित है।

'वामकेश्वर तन्त्र' के अनुसार जब भगवान् कार्तिकेय, कैलाश-पर्वत पर स्थित श्रीमहा-देव जी से कहते हैं कि-''हे देव-देव महा-देव! कृपया बताइए, कौन सर्व-सिद्धि-दायक है ? किससे पृथ्वी पर ऐश्वर्य और मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है ? बिना तीर्थों में 'तप' किए, बिना 'यज्ञ' किए, बिना 'जप', 'ध्यान' किए-किस उपाय से सिद्धि प्राप्त होती है ?''

तब **श्रीमहा-देव** जी कहते हैं–" परा-शक्ति महा-त्रिपुर-सुन्दरी सभी प्राणियों की आधार हैं। वे ही रोगार्ति-हारिणी हैं। जिनकी आराधना से त्रैलोक्य में उत्तम पद की प्राप्ति होती है, उनके एक हजार नाम को कहता हूँ।"

भगवती श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी का पूजन-यन्त्र
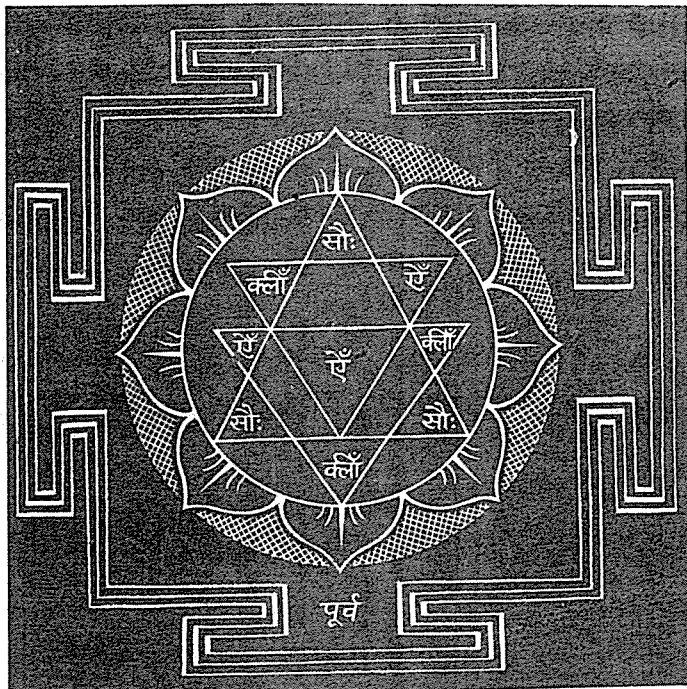
ऊपर **श्रीबाला - त्रिपुर - सुन्दरी** के जो १००० 'नाम'-मन्त्र दिए गए हैं, वे वही हैं जो **श्रीमहा-देव जी–भगवान् कार्तिकेय** को बताते हैं। इन 'नाम'-मन्त्रों की फल-श्रुति में **श्रीमहा-देव जी** कहते हैं–"हे पुत्र! उक्त '**नाम**'-मन्त्र गुह्य से भी गुह्य हैं। परम भक्ति से इन '**नाम**'-मन्त्रों के द्वारा **जप, पूजन, हवन** आदि करने से **मोक्षार्थी** को मोक्ष प्राप्त होता है। सुखार्थी को सुख प्राप्त होता है। **फलार्थी** की कामना पूरी होती है। **धनार्थी** को धन की प्राप्ति होती है। **विद्यार्थी** को विद्या की प्राप्ति होती है। **यशोऽर्थी** को यश की प्राप्ति होती है। **कन्यार्थी** को कन्या की प्राप्ति है। **पुत्रार्थी** को पुत्र की प्राप्ति होती है। **बन्ध्या** पुत्र को प्राप्ति करती है। **कन्या** को सत्-पति की प्राप्ति होती है।"

❒❒❒

'वर्ण-माला' में 'त्रि-वीजा' बाला-विद्या का 'जप'

तीन बीजाक्षरोंवाली बाला-विद्या सम्पूर्ण जगत् को मोहित करनेवाली है। पहले वीज '**ऐं**' को जपता हुआ मनुष्य पृथ्वी पर अमृत रस बहानेवाली वाणी से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करता है। दूसरा बीज '**क्लीं**' को जपने से सारा संसार विचलित हो उठता है। तीसरा वीज 'सौः' जपने से अष्ट-सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। '**वर्ण-माला**' में '**त्रि-बीजा बाला-विद्या**' (ऐं क्लीं सौः) का '**जप-विधान**' इस प्रकार है–

ॐ

१. अं ऐं क्लीं सौः अं
२. आं ऐं क्लीं सौः आं
३. इं ऐं क्लीं सौः इं
४. ईं ऐं क्लीं सौः ईं
५. उं ऐं क्लीं सौः उं
६. ऊं ऐं क्लीं सौः ऊं
७. ऋं ऐं क्लीं सौः ऋं
८. ॠं ऐं क्लीं सौः ॠं
९. ऌं ऐं क्लीं सौः ऌं
१०. ॡं ऐं क्लीं सौः ॡं
११. एं ऐं क्लीं सौः एं
१२. ऐं ऐं क्लीं सौः ऐं
१३. ओं ऐं क्लीं सौः ओं
१४. औं ऐं क्लीं सौः औं
१५. अं ऐं क्लीं सौः अं
१६. अः ऐं क्लीं सौः अः
१७. कं ऐं क्लीं सौः कं
१८. खं ऐं क्लीं सौः खं
१९. गं ऐं क्लीं सौः गं
२०. घं ऐं क्लीं सौः घं
२१. ङं ऐं क्लीं सौः ङं
२२. चं ऐं क्लीं सौः चं
२३. छं ऐं क्लीं सौः छं
२४. जं ऐं क्लीं सौः जं
२५. झं ऐं क्लीं सौः झं
२६. ञं ऐं क्लीं सौः ञं
२७. टं ऐं क्लीं सौः टं
२८. ठं ऐं क्लीं सौः ठं
२९. डं ऐं क्लीं सौः डं
३०. ढं ऐं क्लीं सौः ढं
३१. णं ऐं क्लीं सौः णं
३२. तं ऐं क्लीं सौः तं
३३. थं ऐं क्लीं सौः थं
३४. दं ऐं क्लीं सौः दं
३५. धं ऐं क्लीं सौः धं
३६. नं ऐं क्लीं सौः नं
३७. पं ऐं क्लीं सौः पं
३८. फं ऐं क्लीं सौः फं
३९. बं ऐं क्लीं सौः बं
४०. भं ऐं क्लीं सौः भं
४१. मं ऐं क्लीं सौः मं
४२. यं ऐं क्लीं सौः यं
४३. रं ऐं क्लीं सौः रं
४४. लं ऐं क्लीं सौः लं
४५. वं ऐं क्लीं सौः वं
४६. शं ऐं क्लीं सौः शं
४७. षं ऐं क्लीं सौः षं
४८. सं ऐं क्लीं सौः सं
४९. हं ऐं क्लीं सौः हं
५०. ळं ऐं क्लीं सौः ळं

क्षं

५१. ळं ऐं क्लीं सौः ळं
५२. हं ऐं क्लीं सौः हं
५३. सं ऐं क्लीं सौः सं
५४. षं ऐं क्लीं सौः षं
५५. शं ऐं क्लीं सौः शं
५६. वं ऐं क्लीं सौः वं
५७. लं ऐं क्लीं सौः लं
५८. रं ऐं क्लीं सौः रं
५९. यं ऐं क्लीं सौः यं
६०. मं ऐं क्लीं सौः मं
६१. भं ऐं क्लीं सौः भं
६२. बं ऐं क्लीं सौः बं
६३. फं ऐं क्लीं सौः फं
६४. पं ऐं क्लीं सौः पं
६५. नं ऐं क्लीं सौः नं
६६. धं ऐं क्लीं सौः धं
६७. दं ऐं क्लीं सौः दं
६८. थं ऐं क्लीं सौः थं
६९. तं ऐं क्लीं सौः तं
७०. णं ऐं क्लीं सौः णं

७१. ढं ऐं क्लीं सौः ढं
७२. डं ऐं क्लीं सौः डं
७३. ठं ऐं क्लीं सौः ठं
७४. टं ऐं क्लीं सौः टं
७५. ञं ऐं क्लीं सौः ञं
७६. झं ऐं क्लीं सौः झं
७७. जं ऐं क्लीं सौः जं
७८. छं ऐं क्लीं सौः छं
७९. चं ऐं क्लीं सौः चं
८०. ङं ऐं क्लीं सौः ङं
८१. घं ऐं क्लीं सौः घं
८२. गं ऐं क्लीं सौः गं
८३. खं ऐं क्लीं सौः खं
८४. कं ऐं क्लीं सौः कं
८५. अः ऐं क्लीं सौः अः
८६. अं ऐं क्लीं सौः अं
८७. औं ऐं क्लीं सौः औं
८८. ओं ऐं क्लीं सौः ओं
८९. ऐं ऐं क्लीं सौः ऐं
९०. एं ऐं क्लीं सौः एं
९१. ॡं ऐं क्लीं सौः ॡं
९२. ऌं ऐं क्लीं सौः ऌं
९३. ॠं ऐं क्लीं सौः ॠं
९४. ऋं ऐं क्लीं सौः ऋं
९५. ऊं ऐं क्लीं सौः ऊं
९६. उं ऐं क्लीं सौः उं
९७. ईं ऐं क्लीं सौः ईं
९८. इं ऐं क्लीं सौः इं
९९. आं ऐं क्लीं सौः आं
१००. अं ऐं क्लीं सौः अं
१०१. अं ऐं क्लीं सौः अं
१०२. कं ऐं क्लीं सौः कं
१०३. चं ऐं क्लीं सौः चं
१०४. टं ऐं क्लीं सौः टं
१०५. तं ऐं क्लीं सौः तं
१०६. पं ऐं क्लीं सौः पं
१०७. यं ऐं क्लीं सौः यं
१०८. शं ऐं क्लीं सौः शं

'बाला त्र्यक्षरी विद्या' भगवान् सदाशिव से कीलित की गई है । **'ऐं ऐं सौः क्लीं क्लीं ऐं सौः सौः क्लीं'**–'नवाक्षर मन्त्र' का १०८ बार 'जप' करने से **'शाप' की निवृत्ति** होती है ।

'बाला त्र्यक्षरी विद्या' के तीन बीजों का **दीपन** क्रमशः तीन मन्त्रों से होता है–**१ ॐ वद वद वाग्वादिनि ऐं, २ ॐ क्लिन्ने क्लेदिनि महा-क्षोभं कुरु क्लीं, ३ ॐ सौः मोक्षं कुरु ।** इन **'दीपन मन्त्रों'** का **'जप'** करने से **'बाला त्र्यक्षरी विद्या'** शीघ्र फल-प्रद होती है ।

❑❑❑

[१२]

'वर्ण-माला' में 'पञ्चाक्षर' बाला-विद्या का 'जप'

१. अं ऐं क्लीं सौः हंसः अं
२. आं ऐं क्लीं सौः हंसः आं
३. इं ऐं क्लीं सौः हंसः इं
४. ईं ऐं क्लीं सौः हंसः ईं
५. उं ऐं क्लीं सौः हंसः उं
६. ऊं ऐं क्लीं सौः हंसः ऊं
७. ऋं ऐं क्लीं सौः हंसः ऋं
८. ॠं ऐं क्लीं सौः हंसः ॠं
९. ऌं ऐं क्लीं सौः हंसः ऌं
१०. ॡं ऐं क्लीं सौः हंसः ॡं
११. एं ऐं क्लीं सौः हंसः एं
१२. ऐं ऐं क्लीं सौः हंसः ऐं
१३. ओं ऐं क्लीं सौः हंसः ओं
१४. औं ऐं क्लीं सौः हंसः औं
१५. अं ऐं क्लीं सौः हंसः अं
१६. अः ऐं क्लीं सौः हंसः अः
१७. कं ऐं क्लीं सौः हंसः कं
१८. खं ऐं क्लीं सौः हंसः खं
१९. गं ऐं क्लीं सौः हंसः गं
२०. घं ऐं क्लीं सौः हंसः घं
२१. ङं ऐं क्लीं सौः हंसः ङं
२२. चं ऐं क्लीं सौः हंसः चं
२३. छं ऐं क्लीं सौः हंसः छं
२४. जं ऐं क्लीं सौः हंसः जं
२५. झं ऐं क्लीं सौः हंसः झं
२६. ञं ऐं क्लीं सौः हंसः ञं
२७. टं ऐं क्लीं सौः हंसः टं
२८. ठं ऐं क्लीं सौः हंसः ठं
२९. डं ऐं क्लीं सौः हंसः डं
३०. ढं ऐं क्लीं सौः हंसः ढं
३१. णं ऐं क्लीं सौः हंसः णं
३२. तं ऐं क्लीं सौः हंसः तं
३३. थं ऐं क्लीं सौः हंसः थं
३४. दं ऐं क्लीं सौः हंसः दं
३५. धं ऐं क्लीं सौः हंसः धं
३६. नं ऐं क्लीं सौः हंसः नं
३७. पं ऐं क्लीं सौः हंसः पं
३८. फं ऐं क्लीं सौः हंसः फं
३९. बं ऐं क्लीं सौः हंसः बं
४०. भं ऐं क्लीं सौः हंसः भं
४१. मं ऐं क्लीं सौः हंसः मं
४२. यं ऐं क्लीं सौः हंसः यं
४३. रं ऐं क्लीं सौः हंसः रं
४४. लं ऐं क्लीं सौः हंसः लं
४५. वं ऐं क्लीं सौः हंसः वं
४६. शं ऐं क्लीं सौः हंसः शं
४७. षं ऐं क्लीं सौः हंसः षं
४८. सं ऐं क्लीं सौः हंसः सं
४९. हं ऐं क्लीं सौः हंसः हं
५०. ळं ऐं क्लीं सौः हंसः ळं

क्षं

५१. ळं ऐं क्लीं सौः हंसः ळं
५२. हं ऐं क्लीं सौः हंसः हं
५३. सं ऐं क्लीं सौः हंसः सं
५४. षं ऐं क्लीं सौः हंसः षं

५५. शं ऐं क्लीं सौः हंसः शं
५६. वं ऐं क्लीं सौः हंसः वं
५७. लं ऐं क्लीं सौः हंसः लं
५८. रं ऐं क्लीं सौः हंसः रं
५९. यं ऐं क्लीं सौः हंसः यं
६०. मं ऐं क्लीं सौः हंसः मं
६१. भं ऐं क्लीं सौः हंसः भं
६२. बं ऐं क्लीं सौः हंसः बं
६३. फं ऐं क्लीं सौः हंसः फं
६४. पं ऐं क्लीं सौः हंसः पं
६५. नं ऐं क्लीं सौः हंसः नं
६६. धं ऐं क्लीं सौः हंसः धं
६७. दं ऐं क्लीं सौः हंसः दं
६८. थं ऐं क्लीं सौः हंसः थं
६९. तं ऐं क्लीं सौः हंसः तं
७०. णं ऐं क्लीं सौः हंसः णं
७१. ढं ऐं क्लीं सौः हंसः ढं
७२. डं ऐं क्लीं सौः हंसः डं
७३. ठं ऐं क्लीं सौः हंसः ठं
७४. टं ऐं क्लीं सौः हंसः टं
७५. ञं ऐं क्लीं सौः हंसः ञं
७६. झं ऐं क्लीं सौः हंसः झं
७७. जं ऐं क्लीं सौः हंसः जं
७८. छं ऐं क्लीं सौः हंसः छं
७९. चं ऐं क्लीं सौः हंसः चं
८०. ङं ऐं क्लीं सौः हंसः ङं
८१. घं ऐं क्लीं सौः हंसः घं
८२. गं ऐं क्लीं सौः हंसः गं
८३. खं ऐं क्लीं सौः हंसः खं
८४. कं ऐं क्लीं सौः हंसः कं
८५. अः ऐं क्लीं सौः हंसः अः
८६. अं ऐं क्लीं सौः हंसः अं
८७. औं ऐं क्लीं सौः हंसः औं
८८. ओं ऐं क्लीं सौः हंसः ओं
८९. ऐं ऐं क्लीं सौः हंसः ऐं
९०. एं ऐं क्लीं सौः हंसः एं
९१. ॡं ऐं क्लीं सौः हंसः ॡं
९२. ऌं ऐं क्लीं सौः हंसः ऌं
९३. ॠं ऐं क्लीं सौः हंसः ॠं
९४. ऋं ऐं क्लीं सौः हंसः ऋं
९५. ऊं ऐं क्लीं सौः हंसः ऊं
९६. उं ऐं क्लीं सौः हंसः उं
९७. ईं ऐं क्लीं सौः हंसः ईं
९८. इं ऐं क्लीं सौः हंसः इं
९९. आं ऐं क्लीं सौः हंसः आं
१००.अं ऐं क्लीं सौः हंसः अं
१०१.अं ऐं क्लीं सौः हंसः अं
१०२.कं ऐं क्लीं सौः हंसः कं
१०३.चं ऐं क्लीं सौः हंसः चं
१०४.टं ऐं क्लीं सौः हंसः टं
१०५.तं ऐं क्लीं सौः हंसः तं
१०६.पं ऐं क्लीं सौः हंसः पं
१०७.यं ऐं क्लीं सौः हंसः यं
१०८.शं ऐं क्लीं सौः हंसः शं

❐❐❐

[१३]

'वर्ण-माला' में 'चतुर्दशाक्षर' बाला-विद्या का 'जप'

अं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः अं

आं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः आं

इं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः इं

ईं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ईं

उं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः उं

ऊं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ऊं

ऋं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ऋं

ॠं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ॠं

ऌं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ऌं

ॡं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ॡं

एं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः एं

ऐं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ऐं

ओं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ओं

औं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः औं

अं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः अं

अः ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः अः

कं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः कं

खं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः खं

गं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः गं

घं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः घं

ङं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ङं

चं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः चं

छं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः छं

जं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः जं

झं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः झं

ञं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ञं

टं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः टं

ठं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ठं

डं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः डं

ढं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ढं

णं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः णं

तं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः तं

थं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः थं

दं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः दं

धं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः धं

नं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः नं

पं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः पं

फं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः फं

बं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः बं

भं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः भं

मं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः मं

यं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः यं

रं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः रं

लं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः लं

वं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः वं

शं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः शं

षं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः षं

सं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः सं

हं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः हं

ळं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ळं

क्षं

ळं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ळं
हं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः हं
सं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः सं
षं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः षं
शं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः शं
वं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः वं
लं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः लं
रं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः रं
यं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः यं
मं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः मं
भं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः भं
बं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः बं
फं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः फं
पं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः पं
नं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः नं
धं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः धं
दं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः दं
थं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः थं
तं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः तं
णं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः णं
ढं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ढं
डं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः डं
ठं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ठं
टं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः टं
ञं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ञं
झं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः झं
जं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः जं
छं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः छं
चं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः चं

ङं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ङं
घं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः घं
गं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः गं
खं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः खं
कं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः कं
अः ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः अः
अं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः अं
औं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः औं
ओं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ओं
ऐं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ऐं
एं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः एं
ॡं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ॡं
ऌं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ऌं
ॠं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ॠं
ऋं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ऋं
ऊं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ऊं
उं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः उं
ईं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः ईं
इं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः इं
आं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः आं
अं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः अं
अं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः अं
कं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः कं
चं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः चं
टं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः टं
तं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः तं
पं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः पं
यं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः यं
शं ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः शं

परिशिष्ट

[१]

श्रीबाला चालीसा

श्रीबाला दश-मूर्ति तुम, त्रिपुर-सुन्दरी मात !
भक्तों की रक्षा करे, तव आशीस-प्रताप ।।

जय जय जय त्रिपुरा महरानी ! जय बाला सर्वार्थ-साधिनी ।।
अरुणिम किरण वसन तन-मण्डित । स्वर्णाभा से विग्रह वेष्ठित ।।
एक हाथ में पुस्तक राजे । अक्ष - माल कर एक विराजे ।।
एक हाथ वर - मुद्रा छाजे । अभय दान कर एक विराजे ।।
मस्तक पर शशि-कला सुशोभित । नेत्र-त्रयी अरुणाभा-रञ्जित ।।
मुक्त-माल तव कण्ठ बिराजे । अङ्ग-अङ्ग पर भूषण राजे ।।
आसीना माँ रक्त-कमल पर । निज भक्तों के हृदय धवल पर ।।
सत्त्व-गुणात्मक सत्त्व-भाव की-स्वामिनि! विग्रह चतुर्भाव की ।।
तुम्हीं दश दलों बीच फैलतीं । दश-मयि बाला तुम कहलातीं ।।
तुम्हीं कालिका सङ्कट-नाशिनि ! बगला-मुखी देवि रिपु-नाशिनि ।।
स्वयं षोडशी-रूप भवानी । धूमावति-स्वरूप कल्याणी ।।
तुम भैरवि, मातङ्गी माता । तुम भुवनेश्वरि जन-जन-त्राता ।।
लक्ष्मी-रूप तुम्हीं हो कमला । छिन्न-मस्तिका माता विमला ।।
भगवति! तारा-रूप तुम्हीं हो । माता! ब्रह्म-स्वरूप तुम्हीं हो ।।
माँ भगवति! तुम वाक्-सिद्धिदा । भक्तों की कामना-पूर्णदा ।।
सदा सर्वदा शक्ति-स्वरूपा । अतुल शक्तिदा, बहु बहु-रूपा ।।
मन - कामेश्वरि - रूप भवानी । तीव्रा, वागीश्वरि कल्याणी ।।
बीजेश्वरी, बीज - रूपा तुम । बीजात्मिका, बीज - मूला तुम ।।
बिन्दु-रूप बिम्बाक्षी माता । बीज त्रिकूट भक्त-सुख-दाता ।।
भोग-मोक्ष-प्रद बीज तुम्हारे । कुलेश्वरी, त्रय अक्षर न्यारे ।।
केन्द्र-शक्ति-उत्थान तुम्हीं हो । बुद्धि और मन-ज्ञान तुम्हीं हो ।।
तुमसे यह जग जीवन लेता । और तुम्हीं में है यह जीता ।।
जीकर, लय होता है तुममें । इति प्रवाह की जाना किसने ।।

शब्दाक्षर, चिद्-शक्ति तुम्हीं माँ! सबमें रूप अनेक तुम्हीं माँ ।।
मोक्ष-दायिनी, देव-वन्दिता । ज्ञान, वित्त, यश, बहु-बल-दाता ।।
कुल-कुण्डलिनी-रूप तुम्हीं हो । आद्या, ब्रह्म-स्वरूप तुम्हीं हो ।।
बल प्रदान करतीं माँ बाला । जिनमें बल है, वह हैं बाला ।।
मातु! तुम्हारी त्र्यक्षर-विद्या । नाश करे अज्ञान-कुविद्या ।।
काव्य-वक्तृता-शक्ति-प्रदाता । करतीं पूर्ण कामना माता ।।
अतुल शक्ति भक्तों को देतीं । देवि! वज्र-बाधा हर लेतीं ।।
गुरु-समान नहिं जग में दाता । शङ्कर-सम कोउ नाहिं देवता ।।
कौल - समान न कोऊ योगी । त्रिपुरा - सम उत्कृष्ट न देवी ।।
ब्राह्मी, रौद्री और वैष्णवी – की समष्टि हैं त्रिपुर - सुन्दरी ।।
इच्छा, ज्ञान, क्रिया की स्वामिनि । 'अ-क-थ' पुण्यदा, पाप-नसायिनि ।।
वाक्, काम औ शक्ति-बीज की–अर्थ, धर्म, कामना, मोक्ष की–
स्वामिनि ऋग् , यजु, साम-वेद की । अनहद-नाद, ज्योति तेजस् की ।।
शरण तुम्हारी जो जन आता । भुक्ति, मुक्ति, नव-जीवन पाता ।।
दास तुम्हारा अति मति-हीना । अति कुबुद्धि, अस्थिर मन, दीना ।।
कर अपराध क्षमा कुपुत्र के । कृपा करो माँ त्रिपुर अम्बिके! ।।
जप-पूजन की अमित शक्ति दो । निज चरणों की सतत भक्ति दो ।।

शरणागत निज पुत्र के, क्षमा करहु अपराध ।।
अष्ट-पाश से मुक्त कर, दो निज भक्ति अगाध ।।

'बाला'-मन्त्र-विद्या

'बाला'-मन्त्र-विद्या के अनेक भेद हैं। 'मन्त्र-कोष' में विभिन्न तन्त्र-ग्रन्थों के अनुसार 'बाला'-मन्त्र-विद्या के भेद क्रम से बताए गए हैं। संक्षेप में उनका विवरण इस प्रकार है–

- त्र्यक्षर मन्त्र (तीन अक्षर मन्त्र)–
  (१) विद्या, ऐश्वर्य-प्राप्ति हेतु–**ऐं क्लीं सौः।**
  (२) शत्रु-नाशक हेतु–**ऐं सौः क्लीं।**
  (३) वशीकरण हेतु–**क्लीं ऐं सौः।**
  (४) मुक्ति हेतु–**क्लीं सौः ऐं।**
  (५) लक्ष्मी-प्राप्ति हेतु–**ह्रीं क्लीं ह्सौः।**
- पञ्चाक्षर मन्त्र (पाँच अक्षर के मन्त्र)–
  (६) **ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं।**
  (७) **हंसः ऐं क्लीं सौः।**
  (८) **ऐं क्लीं सौः हंसः।**
- षडक्षर मन्त्र (छः अक्षर के मन्त्र)–
  (९) **ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं।**
  (१०) **ह्रीं क्लीं ह्सौः सौः क्लीं ह्रीं।**
- नवाक्षर मन्त्र (नौ अक्षर के मन्त्र)–
  (११) **श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः ह्रीं क्लीं श्रीं।**
- दशाक्षर मन्त्र (दस अक्षर के मन्त्र)–
  (१२) **ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे स्वाहा।**
- चतुर्दशाक्षर मन्त्र (चौदह अक्षर के मन्त्र)–
  (१३) **ऐं क्लीं ह्सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः।**
  (१४) **ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः।**
  (१५) **क्लीं ह्रीं ऐं बाले त्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः।**
- पञ्च-दशाक्षर मन्त्र (पन्द्रह अक्षर के मन्त्र)–
  (१६) **ॐ ऐं क्लीं सौः परमेश्वर्यै सौः क्लीं ऐं ॐ स्वाहा।**
- षोडशाक्षर मन्त्र (सोलह अक्षर के मन्त्र)–
  (१७) **ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरा-भारती कवित्वं देहि स्वाहा।**
  (१८) **ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरे भारति कवित्त्वं देहि स्वाहा।**

- सप्त-दशाक्षर मन्त्र (सत्रह अक्षर के मन्त्र)–

(१९) **श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिपुरा-मालिनि मह्यं सुखं देहि स्वाहा ।**

(२०) **स्क्लीं क्ष्म्यरौं ऐं त्रिपुरे सर्व-वांछितं देहि नमः स्वाहा ।**

(२१) **स्क्लीं क्ष्म्यौं ऐं त्रिपुरे सर्व-वांछितं देहि नमः स्वाहा ।**

- अष्ट-दशाक्षर मन्त्र (अट्ठारह अक्षर के मन्त्र)–

(२२) **ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रौढा-त्रिपुरे आरोग्यमैश्वर्यं देहि स्वाहा ।**

(२३) **ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रौढ-त्रिपुरे आरोग्यमैश्वर्यं देहि स्वाहा ।**

(२४) **ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरा-मदने सर्व-शुभं साधय स्वाहा ।**

- विंशत्यक्षर मन्त्र (बीस अक्षर के मन्त्र)–

(२५) **ह्रीं श्रीं क्लीं बाला-त्रिपुरे (बाल-त्रिपुरे) मदायत्तां विद्यां कुरु नमः स्वाहा ।**

(२६) **ह्रीं श्रीं क्लीं परापरे (परात्परे) त्रिपुरे सर्वमीप्सितं साधय स्वाहा ।**

- अष्टा-विंशत्यक्षर मन्त्र (अट्ठाइस अक्षर के मन्त्र)–

(२७) **क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुरा (त्रिपुरे) ललिते मदीप्सितां योषितं देहि वांछितं कुरु स्वाहा ।**

- पञ्च-त्रिंशदक्षर मन्त्र (पैंतीस अक्षर के मन्त्र)–

(२८) **क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुर-सुन्दरि सर्व-जगन्मम वशं कुरु कुरु मह्यं बलं देहि स्वाहा।**

'मन्त्र महोदधि' के अनुसार पाँचवें त्र्यक्षर मन्त्र (**ह्रीं क्लीं सौः**), पञ्चाक्षर मन्त्र, षडक्षर मन्त्र, नवाक्षर मन्त्र, दशाक्षर मन्त्र, चतुर्दशाक्षर मन्त्र, षोडशाक्षर मन्त्र, सप्त-दशाक्षर मन्त्र, अष्ट-दशाक्षर मन्त्र, विंशत्यक्षर मन्त्र, अष्टा-विंशत्यक्षर मन्त्र, पञ्च-त्रिंशदक्षर मन्त्र आदि सभी मन्त्रों के ऋषि '**दक्षिणामूर्ति**', छन्द '**गायत्री**', देवता '**त्रिपुरा बाला**', बीज '**ऐं**', शक्ति '**ह्सौः**', कीलक '**क्लीं**' है । '**ध्यान**' है–

पाशांकुशौ पुस्तकमक्ष-सूत्रं, करैर्दधाना सकलाऽमरार्च्या ।
रक्ता त्रि-नेत्रा शशि-शेखरेयं, ध्येयाऽखिलर्द्ध्यै त्रिपुराऽत्र बाला ।।

'**पुरश्चरण**' हेतु १ लाख जप कर कनेर-पुष्पों से दशांश '**होम**' करना चाहिए ।

प्रारम्भ के चारों त्र्यक्षर मन्त्रों के ऋषि आदि एक हैं । इनका विवरण '**त्र्यक्षर मन्त्र की साधना**' के अन्तर्गत दिया गया है । **दशात्मिका पञ्च-दशाक्षर मन्त्र** का विधान भिन्न प्रकार का है । इसका विवरण अलग से प्रस्तुत संग्रह में प्रकाशित है ।

❐❐❐

समर्थ गुरु रामदास एवं छत्रपति शिवा जी की आराध्या अकोला (महा-राष्ट्र) के 'बालापुर' की श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी

भारत के इतिहास में **छत्रपति शिवा जी** का स्थान कितना गौरव-पूर्ण रहा है, यह किसी को बताने की आवश्यकता नहीं। उनके गुरु-देव **समर्थ गुरु श्रीरामदास** के यशस्वी नाम से भी प्राय: सभी लोग परिचित हैं और उनकी उपास्या भगवती '**भवानी**' को कौन नहीं जानता, किन्तु यह बहुत कम लोग जानते होंगे कि **छत्रपति शिवा जी** की उपास्या '**भवानी**' का वास्तविक स्वरूप क्या और कैसा था ?

तन्त्र-शास्त्र के ज्ञाता जो लोग हैं, वे यह भले प्रकार जानते हैं कि **भवानी, भगवती, जगदम्बा** आदि '**शक्ति**' के सामान्य नाम हैं, जैसे **भगवान्, परमेश्वर, जगत्-पिता** आदि सामान्य नाम '**विष्णु**', '**शिव**', '**गणपति**' और '**सूर्य**' के लिए प्रचलित हैं। सनातन धर्म के पञ्च देवताओं में से '**शक्ति**' की उपासना का मुख्य पर्व '**नव-रात्र**' है और '**शक्ति**' के मुख्य स्वरूप हैं—**दश महा-विद्याएँ। काली, तारा, षोडशी** आदि महा-विद्याओं के सम्बन्ध में विज्ञ लोग जानते ही हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि **छत्रपति शिवा जी की** '**भवानी**' का सम्बन्ध किस **महा-विद्या** से है।

इस सम्बन्ध में **महा-राष्ट्र के अकोला** जनपद में **बालापुर** नामक स्थान में स्थित '**श्री बाला देवी मन्दिर संस्थान**' के व्यवस्थापक से प्राप्त सूचनाएँ बड़ी उपयोगी हैं। उनका मत है कि उक्त मन्दिर में **श्रीबाला देवी** का जो विग्रह स्थापित है, उसकी प्राण-प्रतिष्ठा के आयोजन में **छत्रपति शिवा जी** के गुरु-देव **समर्थ गुरु श्रीरामदास ने** सक्रिय भाग लिया था। इस तथ्य के प्रमाण में कहा जाता है कि **समर्थ गुरु श्रीरामदास जी** का एक हस्त-लिखित जीवन-चरित प्राप्त हुआ है, जिसमें यह स्पष्ट शब्दों में लिखा हुआ है कि **समर्थ गुरु श्रीरामदास जी** भ्रमण करते हुए **बालापुर** आ पहुँचे और **श्री भगवती बाला** के सान्निध्य में उन्होंने तीन दिन निवास किया। इसके बाद वे **अडगाँव** नामक स्थान को चल दिए।

उक्त हस्त-लिखित जीवन-चरित के अतिरिक्त **बालापुर** में एक प्राचीन किला भी है, जो सन् १६२० ई० का बना हुआ है। **भगवती श्रीबाला मन्दिर** का अस्तित्व इस किले से पूर्व का है, इसके प्रमाण स्थानीय कचहरी में प्राप्य पत्र-जातों में स्पष्ट मिलते हैं। यही नहीं, ऐतिहासिक '**आइने अकबरी**' से भी इसकी प्राचीनता की पुष्टि होती है।

'**बालापुर**' के **वयोवृद्ध पुजारी** के अनुसार '**बालापुर**' **में** प्रतिष्ठित **भगवती श्रीबाला स्वयम्भू** हैं अर्थात् उनका आविर्भाव स्वत: हुआ है। मन्दिर के वयोवृद्ध पुजारी की चार पीढ़ियाँ **श्रीबाला** की सेवा कर चुकी हैं। इन तथ्यों से प्राय: प्रमाणित है कि **भगवती श्रीबाला** का उक्त विग्रह ३५० वर्षों के पूर्व से **बालापुर** में विराजमान है। इसके पहले का इतिहास अन्वेषणीय है।

प्राचीनता की दृष्टि से ही नहीं, भव्यता की दृष्टि से भी '**बालापुर**' का महत्त्व रहा है। मन्दिर की मनोरम प्राकृतिक पार्श्व-भूमि, उसकी प्राचीनता और निर्जन स्थान में उसकी अवस्थिति तथा **समर्थ गुरु श्री रामदास** जैसे महा-पुरुष की उपस्थिति से यह अनुमान करना अनुचित न होगा कि **छत्रपति शिवा जी महाराज** की उपास्या **भवानी देवी** मूलत: यही '**बाला**' देवी रही हैं, जो तन्त्र-शास्त्र की प्रसिद्ध और सिद्धि-दायिनी **दश महा-विद्याओं** में से **भगवती षोडशी** की मूल विद्या के रूप में प्रख्यात हैं।

□□□

रजि० सं० ३२९८१/५७

'बालापुर' अकोला (महाराष्ट्र) की स्वयम्भू भगवती श्रीबाला

भवानी देवी

समर्थ गुरु श्रीरामदास एवं छत्रपति शिवा जी महाराज की उपास्या

प्रकाशक : श्रीऋतशील शर्मा, श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-६ ☎ ०५३२-२५०२७८३